वरदानों द्वारा अव्यक्त पालना

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय

पाण्डव भवन, माउण्ट आबू (राज.)

प्रकाशक :

साहित्य विभाग,
प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय
१९/१७, शक्ति नगर, दिल्ली – ११०००७

पुस्तक मिलने का पता :

साहित्य विभाग,
पाण्डव भवन
आबू पर्वत - ३०७ ५०१ (राजस्थान)

मुद्रक :

ओम् शान्ति प्रेस, शान्तिवन, तलहटी,
आबू रोड - ३०७ ०२६ (राजस्थान)

दो शब्द

हर पल ब्रह्मा-वत्सों के दिल से, मुख से यही शब्द बार-बार निकलते हैं – ''शुक्रिया बाबा, शुक्रिया ! ..... आप सूक्ष्मवतन वासी होते हुए भी हम बच्चों की अनेकानेक प्यार भरे वरदानों से पालना कर रहे हो। आपकी पालना का स्वरूप भी कितना निराला, कितना मन और तन को शक्तिशाली बनाने वाला है! आप हम बच्चों को नित्य नया और ताज़ा ज्ञान का भोजन खिलाते हुए, बुद्धि रूपी झोली भरपूर कर उड़ती कला के पंखों से उड़ाते रहते हो!''

जब से यह वरदानी-महादानी वर्ष प्रारम्भ हुआ, प्रतिदिन मुरली में आप सब एक वरदान एवं सलोगन सुनते हुए अव्यक्त पालना का अनुभव करते रहते हैं। जिन ब्रह्मा-वत्सों ने उसी महत्व से एक-एक वरदान को स्वयं प्रति समझकर, मनन-चिंतन द्वारा इन्हें अपना बनाया है, वे निरन्तर उमंग-उत्साह में उड़ते हुए यही गीत गुनगुनाते रहते हैं – ''सचमुच, कमाल है बाबा, कमाल है!''

आज उन्हीं वरदानों का संग्रह कर ''वरदानों द्वारा अव्यक्त पालना'' के रूप में यह छोटी-सी पुस्तक आप सबके समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं। इसमें प्रत्येक पेज़ में एक सलोगन भी है।

आशा है कि आप सब राजयोगी, वरदानी, महादानी भाई-बहनों के लिए यह पुस्तक होम-वर्क के रूप में बहुत ही उपयोगी सिद्ध होगी। यदि रोज़ अमृतवेले एक वरदान पढ़ते हुए उस पर गहराई से मनन-चिंतन करेंगे तो अनुभव होगा – अव्यक्त वतन से बापदादा अपना वृहद् वरदानी हस्त हमारे मस्तक पर रख, हमें अपने समान वरदानी-महादानी मूर्त बना रहे हैं।

ओम् शान्ति

१. कर्मबन्धन मुक्त भव

हर कर्म करते हुए सदा यही स्मृति रहे कि मैं जगत् का कल्याण करने के निमित्त यह कार्य कर रही हूँ। मुझे कर्म के बंधन में नहीं आना है, कर्मयोगी बनकर हर कर्म करना है। मालिक होकर कर्मेन्द्रियों से कर्म कराने वाली मैं कर्मबन्धन मुक्त आत्मा हूँ।

२. सर्व शक्तियों से सम्पन्न मास्टर सर्वशक्तिमान् भव

बापदादा सभी बच्चों को आप समान सर्व शक्तियों से सम्पन्न मास्टर सर्वशक्तिमान का वरदान देते हैं। तो सदा सर्व शक्तियों को कार्य में लगाते चलो और उड़ते चलो, एक भी शक्ति कम न हो।

३. सदा डबल लाइट भव

एक बल एक भरोसा -- ऐसा अनुभव करते हुए डबल लाइट बनो। एक बाप दूसरा न कोई -- इस स्मृति से मेरे को तेरे में बदल दो अर्थात् सब बोझ बाप को दे दो।

४. अन्तर्मुखी सदा सुखी भव

अन्तर्मुखता ही सर्व गुणों का फाउन्डेशन है। अन्तर्मुखी के अभ्यासी सर्व गुणों के भण्डार रहते हैं। तो सदा इस अनुभव को आगे बढ़ाते चलो। क्योंकि यही साधन है और गुणों को समीप लाने का।

५. सदा योगयुक्त, युक्तियुक्त श्रेष्ठ जीवनधारी भव

मैं योगयुक्त, युक्तियुक्त और राजयुक्त आत्मा हूँ -- इसी स्मृति से सहज आगे बढ़ते चलो। राज़युक्त और योगयुक्त बनने से युक्ति-युक्त बन सिद्धि को प्राप्त कर ही लेंगे।

६. सदा विजयी भव

मेरे मस्तक पर सदा बापदादा का हाथ है और सदा वह मेरे साथ है।

इस अनुभव को बढ़ाते हुए हर कदम में विजयी बनो। यह बाप का हाथ अर्थात् श्रेष्ठ मत और साथ सदा ही आगे बढ़ने का अनुभव सहज कराता रहेगा।

७. सदा दृढ़ संकल्पधारी भव

कोई भी कार्य करने के पहले अपने दृढ़ता की विशेषता को इमर्ज करो। जहाँ दृढ़ता है वहाँ सफलता अवश्य है। दृढ़ व्रत, वृत्ति को भी बदल देता है। इसलिए रोज़ कोई न कोई दृढ़ संकल्प रूपी व्रत लो।

८. सर्वश्रेष्ठ पूज्य आत्मा भव

सदा इसी वरदान को स्मृति में रखते हुए रूहानी नशे का अनुभव करो तो कभी किसी भी वस्तु वा व्यक्ति के पीछे प्रभावित नहीं होंगे। क्योंकि कोई भी आकर्षण पूज्य आत्मा को अपनी ओर आकर्षित नहीं कर सकती।

९. सदा सम्पन्न व सन्तुष्ट भव

बापदादा ने पसन्द करके मुझे अपना बनाया है, अच्छे हैं और सदा अच्छे रहेंगे। कल विशेष आत्मा थे, आज हैं और कल फिर बनेंगे। आज और कल की स्मृति अर्थात् ड्रामा की स्पष्ट स्मृति से सम्पन्नता वा सन्तुष्टता का अनुभव करो।

१०. बाप समान सम्पन्नता के वरदानी भव

एक-एक बोल ब्रह्मा के बोल समान हो, उठना, बैठना, देखना, चलना सब समान हो। ऐसे फालो फादर करके अपने दर्पण द्वारा ब्रह्मा बाप को दिखाना, यही है सम्पन्नता के वरदानी बनना। तो अपने हर कर्म से ब्रह्मा बाप के कर्म दिखलाने वाली श्रेष्ठ आत्मा बनो।

११. हर कदम में परमात्म-पालना का अनुभव करने वाली भाग्यवान आत्मा भव

अभी यह प्रत्यक्ष अनुभव करो कि हमारा पालनहार स्वयं भगवान है। जन्मते ही बेहद के खजानों से भरपूर अविनाशी वर्से की मैं अधिकारी

आत्मा हूँ। इसी भाग्य की श्रेष्ठ स्मृति से सदा हर्षित रहो।

१२. त्रिकालदर्शी भव

सत शिक्षक द्वारा तीनों कालों की पढ़ाई पढ़ने वाला मैं गॉडली स्टूडेन्ट हूँ। सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त -- तीनों कालों का ज्ञान प्राप्त कर अनेक जन्मों के लिए अपना श्रेष्ठ भाग्य बनाने वाली मैं भाग्यवान आत्मा हूँ, यही भाग्य चेहरे और चलन से दिखाई दे। मन सदा भाग्य का अनुभव करते हुए खुशी में नाचता रहे।

१३. हर कदम में पद्मों की कमाई जमा करने वाली पद्मापद्म भाग्यवान आत्मा भव

सतगुरु द्वारा अखुट वरदानों का श्रेष्ठ भाग्य मुझ आत्मा को प्राप्त है। मैं सतगुरु द्वारा श्रेष्ठ मत प्राप्त कर हर कदम में पद्मों की कमाई जमा करने वाली पद्मापद्म भाग्यवान आत्मा हूँ। सदा इसी खुशी वा नशे में रहो।

१४. मायाजीत, निर्विघ्न आत्मा भव

सदैव यथार्थ योग और यथार्थ सेवा द्वारा निर्विघ्न स्थिति का अनुभव करने वाली मैं श्रेष्ठ भाग्यवान आत्मा हूँ। नि:स्वार्थ सेवा और सेवा करते हुए याद में रहना -- यही डबल लाक है जिससे माया के आने का गेट बंद हो जाता है। तो इसी वरदान को स्मृति में रख मायाजीत निर्विघ्न आत्मा बनो।

१५. विधि द्वारा वृद्धि को प्राप्त करने वाली श्रेष्ठ आत्मा भव

हर बात में आगे बढ़ने की सबसे सहज विधि है -- दिल से मानो ''मेरा बाबा''। इसी स्मृति की सहज विधि द्वारा पुरुषार्थ में वृद्धि करो अर्थात् कमजोरियों को समाप्त करो।

१६. सदा लवली और लवलीन आत्मा भव

कर्म में, वाणी में, सम्पर्क और सम्बन्ध में लवली तथा स्मृति और स्थिति में लवलीन रहो। बापदादा के लॅव ने आप सबको अपना बनाया

और सब-कुछ भुलाया, देही-अभिमानी बनाया। तो इसी विशेषता के वरदान को धारण कर बाप समान बनो।

१७. स्वमानधारी-स्वदर्शन चक्रधारी भव

स्वमान में रहने से देह-अभिमान समाप्त हो जायेगा और निर्मान स्थिति स्वत: बन जायेगी। स्व-दर्शन चक्र चलता रहे तो परदर्शन वा परचिन्तन समाप्त हो जायेगा। इसलिए इस वरदान की स्मृति से मायाजीत जगतजीत बन महादानी-वरदानी बनो।

१८. सदा ज्ञान-मूर्त भव

बुद्धि में सदा ज्ञान का ही सिमरण चलता रहे। वाणी से ज्ञान के ही बोल वर्णन करते रहो। हर कर्म द्वारा ज्ञान-स्वरूप वा मास्टर नालेजफुल का साक्षात्कार हो। ज्ञानमूर्त बनना अर्थात् जीवन से अंधकार समाप्त होना। ज्ञानमूर्त की वरदानी आत्मा से कोई भी अयथार्थ संकल्प, बोल वा कर्म हो ही नहीं सकता।

१९. सर्व सुखों का अनुभव करने के लिए बहुरूपी भव

जैसे आजकल की दुनिया में जैसा कर्त्तव्य वैसा वेश धारण कर लेते हैं ऐसे आप बच्चे भी जिस समय जैसा कर्म करना चाहते हो वैसा वेश धारण करो। अपने बुद्धि बल द्वारा साकारी वस्त्र को छोड़ सूक्ष्म शरीर धारण कर लो। अभी-अभी साकारी और अभी-अभी आकारी -- ऐसे बहुरूपी बन सर्व स्वरूपों के सुखों का अनुभव करो और सर्व को कराओ।

२०. अंगद समान अचल-अडोल भव

जैसे आदि में स्थापना के समय सारी दुनिया एक तरफ थी और एक निमित्त आत्मा (ब्रह्मा बाप) दूसरी तरफ थी। फिर भी निश्चय में सदा अंगद समान अचल-अडोल रहे। कोई भी परिस्थिति वा समस्या बुद्धि रूपी पांव को हिला नहीं सकी। ऐसे अचल-अडोल भव के वरदानी बनो अर्थात् फालो फादर करो।

२१. सदा साक्षी दृष्टा भव

ड्रामा की ढाल व ड्रामा के पट्टे पर हर कर्म और हर संकल्प चलता रहे तो यह साक्षी वा दृष्टापन की स्थिति सहज बन जायेगी। साक्षी दृष्टा बनने से मैं-पन समाप्त हो जायेगा। विस्तार समा जायेगा। सार स्वरूप स्थिति में सहज स्थित हो जायेंगे। इसलिए इस वरदान को प्रैक्टिकल अभ्यास में लाओ।

२२. धारणामूर्त वा गुणमूर्त भव

परमात्म ज्ञान का प्रूफ प्रैक्टिकल जीवन है। तो आपकी प्रैक्टिकल जीवन में सर्व दिव्य गुणों की धारणायें दिखाई दें। एक तरफ भाषण हो दूसरे तरफ प्रैक्टिकल मूर्त हो तब सक्सेसफुल बन सकेंगे अर्थात् धर्म युद्ध में विजय प्राप्त होगी।

२३. स्व कल्याणकारी के साथ-साथ विश्व कल्याणकारी भव

जैसे स्व की उन्नति के लिए तन वा मन की शक्ति लगाते हो, ऐसे ही विश्व कल्याण के प्रति अपना तन-मन-धन लगाओ। अपने हिसाब-किताब तो चुक्तू करने ही हैं लेकिन अब विश्व-कल्याणकारी बन विश्व की सर्व आत्माओं के कर्मबन्धन व हिसाब-किताब चुक्त कराने के निमित्त बनो। यही महीन पुरुषार्थ है।

२४. निराकारी वा अशरीरी भव

अब संगठित रूप में इस वरदान को प्रैक्टिकल में लाओ। एक ही इशारे में वा एक ही सेकेण्ड में जब संगठित रूप में एकरस स्थिति अथवा निराकारी, अशरीरी स्थिति में स्थित हो जायेंगे तब विजय का नगाड़ा बजेगा। इसलिए अब एक ही समय पर एक ही आर्डर प्रमाण अशरीरी बनने का अभ्यास करो।

२५. सदा श्रेष्ठ संग में रहने वाली पद्मापद्म भाग्यशाली आत्मा भव

जो जिसके समीप रहता है उनमें समीप रहने वाले के गुण स्वत: और सहज ही आ जाते हैं। इसलिए कहा जाता है संग का रंग। तो हम सदा

बापदादा के समीप श्रेष्ठ संग में रहने वाली रूहानी रंग से रंगी हुई आत्मायें हैं, इसी वरदान को सदा स्मृति में रख स्वयं द्वारा बापदादा के गुणों वा संस्कारों को प्रत्यक्ष करो।

२६. सम्पूर्ण नष्टोमोहा भव

जिस वस्तु से मोह अर्थात् लगन होती है वह अपनी तरफ बार-बार आकर्षित करती है। सभी से ज्यादा अपनी तरफ देह के हिसाब-किताब, रहे हुए कर्मभोग के रूप में आने वाली परिस्थितियां अपनी तरफ आकर्षित करती हैं। तो अब विशेष अटेन्शन से रूहानी ड्रिल के अभ्यास द्वारा इस आकर्षण को भी समाप्त कर सम्पूर्ण नष्टोमोहा के वरदान को जीवन में लाओ।

२७. सर्वशक्तिमान् के बालक सो प्रकृति के मालिक भव

हम बालक सो मालिक हैं इस स्मृतिस्वरूप के वरदान से अभी प्रकृति के मालिक बनो फिर विश्व के मालिक बनेंगे। जितना बालकपन याद रहेगा उतना मालिकपन का नशा वा खुशी रहेगी और इस मस्ती में मग्न रहेंगे। सर्वशक्तिमान् बाप के बालक अर्थात् अधिकारी कभी भी किसी के अधीन नहीं हो सकते।

२८. सदा एवररेडी वा तीव्र पुरुषार्थी भव

कैसी भी परिस्थिति हो, परीक्षायें हों लेकिन श्रीमत के आर्डर प्रमाण जिस स्थिति में स्थित होना चाहें उस स्थिति में एक सेकेण्ड में स्थित हो जाएं, ज़रा भी संकल्पों की हलचल न हो। ऐसे तीव्र पुरुषार्थी ही एवररेडी के वरदानी हैं। इसके लिए वाणी से परे स्थिति में स्थित रहने का अभ्यास बढ़ाओ।

२९. लक्की और लवली भव

बाप का बनना अर्थात् लक्की बनना। लेकिन जो लक्की होगा वह लवली भी जरूर होगा। लवली अर्थात् स्नेह की लेन-देन करने वाला। जो भी सामने आये, सम्बन्ध में आये उससे स्नेह की लेन-देन करो।

इस दान के महादानी बनो तो सर्व का सहयोग भी स्वत: प्राप्त होगा और सर्व कमजोरियों का ग्रहण भी छूट जायेगा।

३०. अपनी अच्छी तस्वीर बनाने के लिए फ्रॉख़ दिल भव

अपने संकल्प, कर्म, वाणी, समय, श्वांस अर्थात् प्राप्त हुए सभी खजानों को फ्रॉख़ दिल बनकर यूज करो अर्थात् सेवा में लगाओ तो आपकी तस्वीर अच्छी बन जायेगी। जो जितना इस फ्रॉख़दिली के वरदान को प्रैक्टिकल में लायेंगे उतना फर्स्टक्लास बनेंगे।

३१. बापदादा के मददगार, दिलतख्त नशीन भव

जो बापदादा के कार्य में सदा मददगार रहते हैं उन्हें ही दिलतख्त नशीन बनने का वरदान प्राप्त हो जाता है। और जो दिलतख्त नशीन होते हैं उनके मस्तक पर सदैव अविनाशी आत्मा की स्थिति का तिलक और सेवा की जिम्मेवारी का ताज दूर से ही चमकता हुआ दिखाई देता है।

३२. सरलचित बन सर्व बातों में आलराउन्डर भव

सरलचित माना जो बात सुनी, देखी, की–वह सार-युक्त हो। सार को उठाये और जो बात बोले वा कर्म करे उसमें सार भरा हुआ हो। इससे पुरुषार्थ भी सरल होगा और सरल पुरुषार्थी सर्व बातों में आलराउन्डर का वरदानी होगा। उसमें कोई बात की कमी दिखाई नहीं देगी। उनके मुख से यह बोल कभी नहीं निकलेगा कि हम यह नहीं कर सकते हैं।

३३. अकालतख्त नशीन भव

जैसे शरीर निर्वाह के लिए अनेक साधन आवश्यक समझते हो, ऐसे आत्मिक उन्नति के लिए अकालतख्त नशीन बनो। इस अकालत-ख्तनशीन भव के वरदान को जितना प्रैक्टिकल में लायेंगे उतना अकाले मृत्यु से, अकाल से तथा सर्व समस्याओं से बच सकेंगे। मानसिक चिंताओं वा परिस्थितियों को हटाने वा देहभान को मिटाने के लिए यही वरदान सदा स्मृति में रहे।

३४. ज्ञान में सेन्ट और माया से इनोसेंट भव

जैसे सतयुगी आत्मायें जब यहाँ आती हैं तो विकारों की बातों की नालेज से इनोसेंट होती हैं। ऐसे माया की नालेज से अब इनोसेंट बनो और ज्ञान अर्थात् पढ़ाई में सेंट बनो। इस वरदान की स्मृति से अपने भविष्य संस्कार स्वरूप में लाओ तो कमजोरी, परेशानी आदि शब्द समाप्त हो जायेंगे।

३५. साक्षात् वा साक्षात्कार मूर्त भव

जैसे आप लोगों से ईश्वरीय स्नेह, श्रेष्ठ ज्ञान और श्रेष्ठ चरित्रों का साक्षात्कार होता है, ऐसे अब अव्यक्ति स्थिति का स्पष्ट साक्षात्कार हो। इसके लिए अपने संस्कारों को साक्षात् मूर्त के समान बनाओ। इस वरदान की स्मृति से चलते-फिरते आकारी वा निराकारी स्थिति का अनुभव कराते रहो।

३६. सदा संहारी और अलंकारी भव

अपने शक्ति स्वरूप की स्मृति से संहारी और अलंकारी बनो अर्थात् इस वरदान की स्मृति से अपने पुराने संस्कारों वा कमजोरियों पर विकराल संहारी रूप धारण कर उन्हें भस्म करो और अलंकारी बन अपने रूहानी रूप, रुहानी दृष्टि और कल्याणकारी वृत्ति द्वारा बाप का साक्षात्कार कराओ तब बाप की प्रत्यक्षता का झण्डा हर आत्मा के दिल पर लहरा सकेंगे।

३७. कर्त्तव्य की विधि और संकल्प के सिद्धि स्वरूप भव

यह दोनों वरदान जन्मसिद्ध अधिकार के रूप में प्राप्त करने के लिए व्यर्थ की रचना बंद कर समर्थ संकल्पों की रचना करो। कोई भी संकल्प की सिद्धि और कर्मों में सफलता तभी प्राप्त हो सकती है जब मास्टर त्रिकालदर्शीपन की स्टेज पर स्थित हो आदि-मध्य-अन्त को जानकर संकल्प वा कर्म करो।

३८. आसक्ति को समाप्त करने के लिए शक्ति-स्वरूप भव

अपनी देह में, सम्बन्धों में वा कोई भी पदार्थ में कहाँ भी आसक्ति है तो

माया भी आ सकती है। इसलिए शक्ति-स्वरूप के वरदान को स्मृति में रख आसक्ति को अनासक्ति में परिवर्तन करो। शक्ति-स्वरूप की वरदानी आत्मा विघ्नों में घबराती वा चिल्लाती नहीं लेकिन उसका सामना करके विघ्न- विनाशक बन जाती है।

३९. जिम्मेवारी के ताजधारी भव

अभी आप श्रेष्ठ आत्मायें जिस रूप में कदम उठाती हो उस रूप में अनेक आत्मायें फालो करती हैं। इतनी बड़ी आप हर एक की जिम्मे-वारी है। इस जिम्मेवारी के ताजधारी समझते हुए हर कदम उठाओ। यह वरदान अवस्था को ऊंचा बनाने में बहुत मदद करता है, इसलिए इस वरदान को स्मृति में रख हर कार्य करो।

४०. सर्व से सहयोग प्राप्त करने के लिए योगी भव

योगी बनने से सर्व का सहयोग स्वत: प्राप्त होता है। क्योंकि योगी बनना अर्थात् बीज से कनेक्शन जोड़ना। तो जो बीज को स्नेह का पानी देते हैं उन्हें सर्व आत्माओं द्वारा सहयोग का फल प्राप्त हो जाता है। इसलिए कनेक्शन का अटेन्शन रखो अर्थात् योगी भव के वरदानी बनो तो सर्व के सहयोग का अधिकार मिल जायेगा।

४१. संकल्पों पर विजयी बनने के लिए मन्सा महादानी भव

मन्सा महादानी बनना अर्थात् अपनी दृष्टि, वृत्ति और स्मृति की शक्ति से किसी भी आत्मा को शान्ति का अनुभव करा देना। ऐसी वरदानी आत्मा संकल्पों के वश नहीं होगी लेकिन जहाँ चाहे वहाँ अपने संकल्पों को टिका लेगी। उसमें संकल्पों को रचने, विनाश करने वा पालना करने की शक्ति होगी। उसका हर संकल्प सिद्ध होने वाला होगा।

४२. सदा खुशी की प्राप्ति के लिए वाचा महादानी भव

वाचा द्वारा ज्ञान रत्नों का दान होता रहे तो एक-एक वचन अनेक आत्माओं की प्यास बुझाने वाला वैल्युबल हो जायेगा। इस वरदान को कार्य में लगाने से वाणी में बहुत गुण आ जायेंगे। अवस्था में सहज खुशी की प्राप्ति होगी। जैसे कोई खान से चीज निकलती है तो अखुट

होती है, ऐसे खुशी के लिए मेहनत वा पुरुषार्थ नहीं करना पड़ेगा लेकिन स्वत: खुशी वा सन्तुष्टता का अनुभव होगा।

४३. फरिश्ता स्थिति का अनुभव करने के लिए कर्म द्वारा गुणों के महादानी भव

इस वरदान को कार्य में लगाने से अर्थात् कर्म द्वारा गुणों का दान करने से चलन और चेहरा फरिश्ते की तरह दिखाई देगा। उनका जो भी कदम उठेगा वह हल्का होगा, कोई बोझ महसूस नहीं होगा। क्योंकि ऐसी आत्मा सर्व की आशीर्वाद का पात्र बन जाती है। उन्हें हर कर्म में मदद की महसूसता होती है।

४४. महान आत्मा बनने के लिए डबल अहिंसक भव

इस वरदान को स्मृति में रखने से कभी किसी भी प्रकार की हिंसा नहीं होगी। हिंसा अर्थात् जिससे दु:ख-अशान्ति की प्राप्ति हो। यदि किसी शब्द द्वारा किसी की स्थिति को डगमग भी करते हो तो यह भी हिंसा है। यदि अपने असली ओरीजिनल ईश्वरीय संस्कारों को दबाकर दूसरे संस्कारों को प्रैक्टिकल में लाते हो तो यह भी हिंसा है। इसलिए डबल अहिंसक भव के वरदान को स्मृति में रख महान आत्मा बनो।

४५. समाने की शक्ति द्वारा विश्व-कल्याणकारी भव

विश्व-कल्याणकारी भव का वरदान प्राप्त करने के लिए मास्टर सागर बन समाने की शक्ति धारण करो। समाना अर्थात् संकल्प रूप में भी किसी की व्यक्त बातों और भाव का आंशिक रूप समाया हुआ न हो। लेकिन वह परिवर्तन हो जाए। अकल्याणकारी बोल कल्याण की भावना में बदल जाएं, नुकसान फायदे में, निंदा स्तुति में बदल जाए -- ऐसी दृष्टि और वृत्ति बनाना ही विश्व-कल्याणकारी बनना है।

४६. अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करने के लिए शान्त-स्वरूप भव

जितना लास्ट स्टेज अर्थात् कर्मातीत स्टेज समीप आती जायेगी उतना आवाज से परे शान्त-स्वरूप की स्थिति अधिक प्रिय लगेगी अर्थात्

इस वरदान का स्वरूप बनते जायेंगे। जितना शान्त-स्वरूप स्थिति का अभ्यास होगा उतना अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति होगी और इसी सुखमय स्थिति द्वारा अनेक आत्माओं का सहज ही आह्वान कर सकेंगे।

४७ बैलेन्स द्वारा कम खर्च बाला नशीन भव

हर कर्म में, हर संकल्प और बोल, सम्बन्ध वा सम्पर्क में बैलेन्स हो तो बोल, कर्म, संकल्प, सम्बन्ध वा सम्पर्क साधारण के बजाय अलौकिक दिखाई देगा। फिर समय रूपी खजाना, इनर्जी का खजाना और स्थूल खजाना.....सबमें 'कम खर्च बाला नशीन भव' के वरदानी हो जायेंगे।

४८. लक्ष्य और लक्षण की समानता से तकदीरवान भव

रोज़ अपने संकल्प, बोल और कर्म को लक्ष्य की कसौटी पर चेक करते हुए लक्ष्य प्रमाण लक्षण धारण करो तो तकदीरवान बन जायेंगे। जो हूँ, जैसा हूँ, जिस श्रेष्ठ बाप और परिवार का हूँ, वैसा जानते वा मानते हुए अपने तकदीर की तस्वीर को देखो। दिव्य गुण रूपी सम्पत्ति और ईश्वरीय सुख आपका बर्थ- राइट है..। इस नशे वा श्रेष्ठ तकदीर की स्मृति से लक्ष्य और लक्षण को समान बनाओ।

४९. मेहनत से मुक्त होने के लिए स्मृति-स्वरूप भव

अब मेहनत करने का समय नहीं रहा, अब स्मृति-स्वरूप के वरदानी बनो। जो जानना था वह जान लिया, पाना था वो पा लिया -- यह स्मृति मेहनत से मुक्त कर देगी। मैं मास्टर रचता हूँ -- इस स्मृति से बचपन की बातें समाप्त हो जायेंगी और सदा उमंग-उल्लास की रास करते रहेंगे। कभी किसी भी बात में मूंझेंगे वा घबरायेंगे नहीं।

५०. मैं परमपूज्य आत्मा हूँ -- इस स्मृति से सम्पूर्ण पवित्र भव

बापदादा सदा परमपवित्र हैं और मैं आत्मा भी परमपवित्र हूँ, पवित्रता ही बाप को प्यारी लगती है। इसलिए पवित्रता ज़रा भी खण्डित न हो। कभी कोई अपवित्र संकल्प आये तो स्मृति में लाओ कि मैं तो परम-पूज्य आत्मा हूँ। मन्सा संकल्प, बोल, सम्बन्ध-सम्पर्क सबमें सम्पूर्ण

पवित्रता के वरदानी बनने के लिए अपने पूज्य स्वरूप को बार-बार स्मृति में लाओ।

५१. समेटने की शक्ति से अकर्मी अर्थात् कर्मातीत भव

कर्मेन्द्रियों के कर्म की स्मृति से परे एक ही आत्मिक-स्वरूप में स्थित होने का अभ्यास करो तो अकर्मी अर्थात् कर्मातीत भव के वरदानी बन जायेंगे। एक होती है कर्म-अधीन स्टेज, दूसरी है कर्मातीत अर्थात् कर्म अधिकारी स्टेज। तो कर्मातीत भव के वरदान को स्वरूप में लाना अर्थात् अधिकारी बनकर कर्मेन्द्रियों से कर्म कराना। कोई भी कर्मेन्द्रिय रूपी कर्मचारी धोखा न दे।

५२. प्रकृति रूपी दासी को आर्डर में चलाने वाले प्रकृतिजीत भव

सबसे बड़े से बड़ी दासी प्रकृति है। जो प्रकृतिपति बन प्रकृति रूपी दासी को आर्डर में चलाना जानते हैं वह प्रकृतिजीत बन जाते हैं। सभी राज्य-कर्मचारियों अथवा अष्ट शक्तियों को आर्डर प्रमाण कार्य में लगाओ। जिनकी राज्य-दरबार ठीक है वह धर्मराज की दरबार में नहीं जायेंगे। धर्मराज भी उनका स्वागत करेंगे।

५३. चक्रवर्ती बनने के लिए निद्राजीत भव

विनाशकाल की स्मृति से अलबेलेपन की नींद को तलाक दे निद्राजीत भव के वरदानी बनो, तब भक्त लोग आप साक्षात्कार मूर्तियों का साक्षात्कार करेंगे। अब चक्रवर्ती बन भक्तों को साक्षात्कार कराओ। दु:खी आत्माओं के दु:ख की पुकार सुनो, प्यासी आत्माओं के प्रार्थना की आवाज सुनो तो कभी नींद नहीं आयेगी।

५४. अहम् और वहम को समाप्त कर रहमदिल के वरदानी भव

अहम् और वहम के बजाय रहम का भाव धारण करो। जैसे बाप को बच्चों प्रति रहम आता है ऐसे स्वयं प्रति वा सर्व के प्रति रहम भाव को अपनाओ अर्थात् इस वरदान को कार्य में लगाओ। स्वयं प्रति अथवा नालेज के प्रति जो वहम भाव दिलशिकस्त बना देता है उसे परिवर्तन

कर रहमदिल और दिलतख्तनशीन बनो।

५५. सदा बाप की छत्रछाया में रहने वाली स्नेही वा शक्तिशाली आत्मा भव

सदा बाप के याद की छत्रछाया में रहने वाली मैं श्रेष्ठ आत्मा हूँ -- इस अनुभव को बढ़ाओ। यह छत्रछाया ही सेफ्टी का साधन है। इस छत्र-छाया से संकल्प में भी अगर पांव बाहर निकालते तो रावण उठाकर शोक-वाटिका में बिठा देता। इसलिए सदा बाप की छत्रछाया में रहने वाली बाप की स्नेही आत्मा हूँ -- इसी अनुभव में रहो। इसी अनुभव से सदा शक्तिशाली बन आगे बढ़ते रहेंगे।

५६. बेहद की वैराग्य वृत्ति द्वारा तपस्वीमूर्त भव

बापदादा के स्नेह का रिटर्न देने के लिए तपस्वीमूर्त बनो। तपस्या का फाउन्डेशन है बेहद की वैराग्य वृत्ति। बेहद का वैराग्य अर्थात् चारों ओर से किनारे छोड़ देना अर्थात् प्यारा बनने के साथ-साथ समय प्रमाण न्यारा बन जाना। न्यारा बनना ही किनारा छोड़ना है और किनारा छोड़ना ही वैराग्य वृत्ति है।

५७. दाता के बच्चे मास्टर दाता भव

जिसके भी सम्बन्ध-सम्पर्क में आओ तो उन आत्माओं को आप द्वारा कोई न कोई प्राप्ति का अनुभव हो। चाहे हिम्मत मिले, चाहे उमंग-उत्साह मिले, चाहे शान्ति वा शक्ति मिले, सहज विधि मिले, खुशी मिले, हर एक को कुछ न कुछ देना है। इस देने में ही लेना समाया हुआ है। तो भरपूर आत्मा बन मास्टर दाता भव के वरदानी बनो।

५८. सदा नथिंग न्यु की स्मृति से निश्चिंत भव

कुछ भी हो जाए, निश्चिंत रहने की सबसे सहज युक्ति है -- नथिंग न्यु, कोई नई बात नहीं है। आश्चर्य वा चिंता तब हो जब कोई नई बात हो। कोई भी बात सोची नहीं हो, सुनी नहीं हो, समझी नहीं हो और अचानक हो जाए तो आश्चर्य लगता है। लेकिन आप नथिंग न्यु की

स्मृति से आश्चर्य के बजाय फुलस्टाप लगा दो तो निश्चिंत भव का वरदान मिल जायेगा।

५९. सदा मौजों का अनुभव करने वाली श्रेष्ठ भाग्यवान आत्मा भव

दिल में सदा यही गीत बजता रहे – वाह बाबा और वाह मेरा भाग्य! जो सामने देखो, जो सुनो, जो बोलो सबमें 'वाह-वाह' का अनुभव हो, हाय-हाय नहीं। कोई बुरा भी करे लेकिन आप अपनी सहन-शक्ति से बुरे को अच्छे में बदल दो, क्योंकि ब्राह्मण जीवन में बुरा होता ही नहीं। ब्राह्मण जीवन मौज की जीवन है। तो श्रेष्ठ भाग्यवान आत्मा हूँ -- इस वरदान की स्मृति से मौजों का अनुभव करो।

६०. दिव्य-जीवनधारी श्रेष्ठ आत्मा भव

बापदादा ने हर बच्चे को दिव्य संकल्प, दिव्य बोल और दिव्य कर्म करने वाली दिव्य मूर्ति बनाया है। दिव्य जीवन ही ब्राह्मण जन्म का विशेष वरदान है। दिव्य जीवनधारी श्रेष्ठ आत्मा किसी भी आत्मा को अपने दिव्य नयनों द्वारा अर्थात् दृष्टि द्वारा साधारणता से परे दिव्य अनभूतियां करायेगी। साधारण आत्मा उनके सामने आते ही अपनी साधारणता को भूल जायेगी।

६१. स्थिति में सदा समीप वा सम्पन्न भव

जैसे चन्द्रमा जब सम्पन्न होता है तो सम्पन्नता उसके सम्पूर्णता की निशानी होती है। ज़रा भी किनारी कम नहीं होती है, सम्पन्न होता है। तो ज्ञान, योग, धारणा और सेवा सभी में सम्पन्न बनना -- इसी को ही सम्पूर्णता कहा जाता है। जो सम्पन्न है वही सम्पूर्णता के समीप है। तो यही वरदान सदा स्मृति में रखना कि सदा समीप हैं, सम्पन्न हैं।

६२. रूहानी नशे द्वारा अविनाशी खुशी के वरदानी भव

रूहानी नशे द्वारा अविनाशी खुशी का अनुभव करना -- यही ब्राह्मण जन्म का विशेष वरदान है। कुछ भी हो जाए लेकिन इस खुशी के वरदान को खोना नहीं। समस्या आयेगी और जायेगी लेकिन खुशी

नहीं जाये। क्योंकि खुशी हमारी चीज़ है, समस्या वा परिस्थिति दूसरे तरफ से आई है। पराई चीज आयेगी और जायेगी लेकिन अपनी चीज़ को जाने नहीं देना। भले यह शरीर भी चला जाए लेकिन खुशी न जाये।

६३. निर्बल आत्माओं पर उपकार करने वाले पर-उपकारी भव

वर्तमान समय अनेक आत्मायें उपकार के लिए इच्छुक हैं। स्व-उपकार करने की इच्छा है लेकिन हिम्मत और शक्ति नहीं है। ऐसी निर्बल आत्माओं का उपकार करने वाले आप पर-उपकारी बच्चे निमित्त हो। विश्व के राज्य अधिकारी सिर्फ स्व-उपकारी नहीं बनते, वे पर-उपकारी होते हैं। लेकिन उपकार सच्चे दिल से होता है। सच्चे दिल पर ही साहेब राज़ी होता है। इसलिए सच्ची दिल वाले बनो।

६४. बाप हमारा सर्व संबंधी है -- इस स्मृति से सहजयोगी भव

याद का आधार संबंध है। जहाँ संबंध होता है वहाँ याद स्वत: सहज हो जाती है। तो सर्व सम्बन्धों का अनुभव एक बाप से करते हुए सहज योगी भव के वरदानी बनो। जब बुद्धि अनेकों तरफ जाती है तब मेहनत का अनुभव होता और माया वार करती है। इसलिए एक से सर्व सम्बन्धों का अनुभव करके माया को विदाई दो और बाप से बधाइयां लो तो सहज योगी बन जायेंगे।

६५. सच्चे दिल द्वारा विशाल दिमाग की लिफ्ट को प्राप्त करने वाली श्रेष्ठ आत्मा भव

जैसे दुनिया में मानव जीवन के लिए दिल और दिमाग, यह दोनों बातें ठीक होनी चाहिए। ऐसे इस ब्राह्मण जीवन में श्रेष्ठ भाग्यवान वह है जिसकी सच्ची दिल है और विशाल दिमाग है। क्योंकि सच्ची दिल वाले को दिमाग की लिफ्ट मिल जाती है। सच्चाई की शक्ति से दिमाग भी समय प्रमाण युक्तियुक्त, यथार्थ कार्य स्वत: करता है।

६६. सर्व परेशानियों को मिटाने के लिए श्रेष्ठ शान के तख्तनशीन भव

यही वरदान सदा स्मृति में रहे कि हम सदा अपनी श्रेष्ठ शान में रहने वाले हैं, परेशान होने वाले नहीं, औरों की परेशानी मिटाने वाले हैं। सदा श्रेष्ठ शान के तख्तनशीन हैं, मास्टर सर्वशक्तिमान् हैं -- इस स्मृति से कभी भी स्वप्न में भी परेशान नहीं होंगे, सदा श्रेष्ठ शान में रहेंगे।

६७. सर्व खजानों से भरपूर अचल-अडोल भव

किसी भी खजाने की ज़रा भी कमी न हो, सबमें भरपूर रहो। खाली होंगे तो हलचल होगी, भरपूर होंगे तो अचल रहेंगे। तो इसी वरदान को सदा याद रखना कि मैं सर्व खजानों से सम्पन्न अचल-अडोल रहने वाली आत्मा हूँ। माया को हिलाने वाली हूँ, हिलने वाली नहीं। मूंझने वाली नहीं, सदा मौज से उड़ने वाली हूँ।

६८. मास्टर सर्वशक्तिमान् की स्मृति से सदा खुशहाल भव

जो मास्टर सर्वशक्तिमान् अर्थात् शक्तिशाली आत्मायें हैं उनके आगे चाहे माया के विघ्न हों, चाहे व्यक्ति वा प्रकृति द्वारा विघ्न आयें लेकिन अपना प्रभाव नहीं डाल सकते। ऐसी शक्तिशाली आत्मायें सदा खुशहाल रहती हैं और दूसरों को भी खुशहाल बनाती हैं। कभी किसी भी परि-स्थिति में घबराती नहीं। तो यही वरदान सदा याद रहे कि हम खुशहाल रहने वाले हैं, मुरझाने वाले नहीं।

६९. सर्व वरदानों से सम्पन्न बनने के लिए एकव्रता भव

सर्व वरदानों से अपनी झोली भरने के लिए सर्व संबंधों से एकव्रता बनो। यही वरदाता बाप को राज़ी करने की विधि है। एकव्रता अर्थात् सदा वृत्ति में एक हो। मेरा तो एक दूसरा न कोई -- यह पक्का व्रत लिया हुआ हो। संकल्प, स्वप्न में भी दूजा-व्रता न हो, तब वरदाता बाप सर्व वरदानों से सम्पन्न कर देंगे।

७०. सर्व प्राप्ति स्वरूप के अनुभव द्वारा सदा सन्तुष्टता के वरदानी भव

संगमयुग पर बापदादा द्वारा सर्व प्राप्तियाँ स्वत: होती हैं। बिना मांगे

सब-कुछ इतना मिल जाता है जो मांगने की, इच्छा की आवश्यकता नहीं रहती। इसलिए प्राप्तियों के अनुभव को बढ़ाते हुए सन्तुष्टता के वरदानी बनो। प्राप्ति- स्वरूप आत्माओं को सन्तुष्ट रहने और सन्तुष्ट करने का विशेष वरदान प्राप्त हो जाता है। असन्तुष्टता का नाम-निशान भी नहीं रहता।

७१. स्व-सेवा और विश्व-सेवा में सदा सफलतामूर्त भव

स्व-सेवा अर्थात् स्व पुरुषार्थ में सच्ची दिल चाहिए जिससे बापदादा द्वारा सफलता का वरदान प्राप्त कर स्वयं के संस्कारों से वा संगठन से राज़युक्त अर्थात् राज़ी रह सकें तथा विश्व-सेवा में सफलतामूर्त का वरदान प्राप्त करने के लिए सर्व के प्रति शुभ भावना अर्थात् शक्तिशाली संकल्प हो। साथ-साथ एकान्त और एकाग्रता के अभ्यास पर विशेष अटेन्शन हो।

७२. अलौकिक जीवन का अनुभव करने के लिए मरजीवा भव

ब्राह्मण जीवन अलौकिक जीवन है। अलौकिक का अर्थ है इस लोक जैसे नहीं। आपकी दृष्टि, वृत्ति, स्मृति सब बदल गई। यही न्यारा जीवन सर्व को प्यारा है। मरजीवा भव के वरदानी बनें तो स्वप्न में भी पुरानी जीवन याद आ नहीं सकती। नई जीवन में सब नई बातें हैं। पुरानी बातें समाप्त हुईं। श्रेष्ठ जीवन को भूलकर साधारण जीवन को याद कर नहीं सकते।

७३. सर्व का सम्मान प्राप्त करने के लिए स्वमानधारी भव

जो बच्चे इस एक जन्म में स्वमानधारी बनते हैं अर्थात् इस वरदान को सदा स्मृति में रखते हैं वह सारा कल्प सर्व का सम्मान प्राप्त करते हैं। आधा कल्प राज्य अधिकारी बनने के कारण प्रजा सम्मान देती है और आधाकल्प भक्तों द्वारा सम्मान प्राप्त होता है। संगम पर ऐसे स्वमानधारी बच्चों को बाप भी सम्मान देते हैं। लेकिन इस वरदान का भाग्य प्राप्त करने के लिए देह-अभिमान का पूरा त्याग चाहिए।

७४. मास्टर रचयिता की स्मृति से सम्मान-दाता भव

जैसे ब्रह्मा बाप ने स्वयं को वर्ल्ड सर्वेन्ट कहलाया। बच्चों को माले-कम् सलाम किया। हर आत्मा की विशेषता को देखते हुए उन्हें सम्मान दिया। इसलिए नम्बरवन अविनाशी सम्मान के अधिकारी बने। राज्य सम्मान और पूज्य सम्मान दोनों में नम्बरवन बने। ऐसे फालो फादर करो। मास्टर रचयिता की स्मृति से निंदक को भी अपना मित्र समझ-कर सम्मान दो। सम्मान-दाता बनने से ही सर्व का सम्मान प्राप्त होगा।

७५. विश्व की राज्य सत्ता प्राप्त करने के लिए स्वराज्य-सत्ता अधिकारी भव

स्वराज्य ब्राह्मण जीवन का जन्मसिद्ध अधिकार है। स्वराज्य अर्थात् जब चाहो, जैसे चाहो वैसे कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म करा सको। मन, बुद्धि और संस्कार -- इन तीनों शक्तियों पर आत्मा का पूरा अधिकार हो। ऐसे स्वराज्य सत्ता के अधिकारी ही विश्व राज्य-अधिकारी बनते हैं। क्योंकि स्वराज्य अधिकारी की स्थिति में कोई भी शक्ति की कमी नहीं होती। वह सदा धारणामूर्त और शक्तिशाली होते हैं।

७६. सम्पन्नता द्वारा प्रसन्नमूर्त भव

सदा प्रसन्न रहने के लिए अपनी विशेषताओं को कार्य में लगाते हुए परमात्म प्राप्तियों के फल सम्पन्न बनो। प्रसन्नता का आधार सम्प-न्नता है। जो स्व से प्रसन्न रहते हैं वह औरों से वा सेवा से भी प्रसन्न रहते हैं। सबसे बड़े से बड़ी सेवा प्रसन्नमूर्त करती है। इसलिए पर-मात्म-प्राप्तियों का प्रत्यक्ष स्वरूप सदा प्रसन्नता चेहरे से दिखाई दे।

७७. पुरुषार्थ में तीव्र गति लाने के लिए डबल लाइट भव

डबल लाइट के वरदान की स्मृति से पुरुषार्थ में स्वत: तीव्रता आती है। इसके लिए सिर्फ एक शब्द याद रखो ''मेरा बाबा''। कोई भी बात चाहे वह हिमालय पहाड़ से भी बड़ी हो लेकिन 'बाबा' कहा और वह पहाड़ भी रूई बन जायेगा। दुनिया वाले जिसके लिए कहते 'यह कैसे होगा' और आपकी बुद्धि में बाबा याद आते ही टच होगा कि 'यह ऐसे होगा'।

७८. योगयुक्त बनने के लिए सारथी और साक्षी भव

हम श्रेष्ठ आत्मायें इस रथ के सारथी हैं। यह स्मृति स्वत: ही इस रथ अर्थात् देह से वा किसी भी प्रकार के देहभान से न्यारा बना देगी। सारथी समझने से सर्व कर्मेन्द्रियां अपने कन्ट्रोल में रहेंगी। साथ-साथ साक्षी बन देखने, सोचने, करने से सब-कुछ करते भी निर्लेप (न्यारे)रहेंगे। तो इन दो शब्दों की स्मृति के वरदान से हर कर्म में योगयुक्त, युक्तियुक्त बन जायेंगे।

७९. सदा निर्भय और निश्चिंत रहने के लिए दिल-तख्तनशीन भव

माया से सदा सेफ रहने का स्थान दिलतख्त है। जो सदा दिलतख्तनशीन है वह निश्चित ही निश्चिंत है। जैसे कहते हैं भावी टाली नहीं जाती, अटल होती है। ऐसे दिलतख्तनशीन आत्मा निर्भय है, निश्चिंत है। यह निश्चत है, अटल है। दिलतख्त पर माया आ नहीं सकती। यही सदा सेफ्टी का स्थान है।

८०. सर्व गुणों वा सर्व शक्तियों से सम्पन्न सन्तुष्टमणि भव

ज्ञानी-योगी आत्मा की निशानी सन्तुष्टता है। जहाँ सन्तुष्टता है वहाँ सर्व गुण और सर्व शक्तियां हैं। अप्राप्ति की निशानी असन्तुष्टता है। सन्तुष्टमणि सदा रूहानियत से चमकने वाली, 'इच्छा मात्रम् अविद्या' होगी। बाप मिला सब- कुछ मिला..इसलिए कोई इच्छा उत्पन्न हो ही नहीं सकती। ऐसी सन्तुष्ट आत्मायें ड्रामा के हर दृश्य को देख 'वाह ड्रामा वाह' कहेंगी, हाय-हाय नहीं।

८१. वरदान रूप में विल-पावर प्राप्त करने के लिए सदा आज्ञाकारी भव

जो साधारण रीति से भी किसी मनुष्यात्मा के डायरेक्शन प्रमाण 'हाँ जी' कहकर के कार्य करते हैं तो उन्हें दुआयें जरूर मिलती हैं। यहाँ आज्ञाकारी बनने से अर्थात् बाप के कदम पर कदम रखने से परमात्म दुआयें प्राप्त होती हैं। साथ-साथ आज्ञाकारी आत्मा को आज्ञा पालन करने के रिटर्न में बाप द्वारा विल-पावर विशेष वरदान अथवा वर्से के

रूप में प्राप्त हो जाती है।

८२. मन को बिजी रखने की कला से सदा समर्थ भव

बापदादा ने अमृतवेले से लेकर रात को सोने तक मन्सा-वाचा-कर्मणा और सम्बन्ध-सम्पर्क में कैसे चलना वा रहना है, इसके लिए श्रीमत अर्थात् आज्ञा दी है। उसी आज्ञा प्रमाण मन-बुद्धि की दिनचर्या को सेट करो अर्थात् मन और बुद्धि को बिजी रखने की कला सम्पूर्ण रीति से यूज करो तो 'समर्थ भव' के वरदानी बन जायेंगे। समर्थ आत्मा का बोलना, देखना, सुनना, सोचना व्यर्थ नहीं हो सकता।

८३. श्रेष्ठ चरित्र बनाने वाले बड़े से बड़े चित्रकार भव

सबसे बड़ा चित्रकार वही है जो हर कदम में चरित्र का चित्र बनाये। यह चरित्र का चित्र बनाने के कारण ही आपके जड़ चित्र आधा कल्प चलते हैं। तो आप चित्रकार बन अपने भी श्रेष्ठ चरित्र का चित्र बनाओ और अन्य आत्माओं का भी श्रेष्ठ चरित्र बनाने के निमित्त बनो।

८४. आसुरी स्वभाव-संस्कार को भस्म करने वाले ज्वालामुखी भव

जब आप सम्पूर्णता के समीप आयेंगे तो आपके श्रेष्ठ संकल्प से, लगन की अग्नि वा योग-ज्वाला से सब कीचड़ा भस्म हो जायेगा। तो निर्भय, ज्वालामुखी बन प्रकृति और आत्माओं के अन्दर जो तमोगुण है उसे भस्म करने वाले बनो। पवित्रता की शक्ति से अपवित्रता को सेकेण्ड में भगाने वाले बनो। क्योंकि पवित्रता ऐसी ज्वाला है जो सेकेण्ड में विश्व के कीचड़े को भस्म कर सकती है।

८५. विघ्नों को समाप्त करने के लिए शक्तिशाली आत्मा भव

जितना शक्तिशाली आत्मा बनेंगे उतना विघ्न समाप्त होते जायेंगे। पहले स्व को निर्विघ्न बनाना है फिर औरों को निर्विघ्न बनाना है। अपनी शक्तिशाली स्थिति से ऐसा पावरफुल वातावरण बनाओ जो विघ्न सदा कमजोर रहें और आप सर्वशक्तिमान् रहो। कमजोर आत्माओं को बाप द्वारा प्राप्त हुई शक्ति देकर शक्तिशाली बनाओ – यही श्रेष्ठ वा सच्ची सेवा है।

८६. ब्राह्मण जीवन में सदा बेफिक्र बादशाह भव

सदा निश्चय रहे कि सेवा का श्रेष्ठ कार्य होना ही है, हुआ ही पड़ा है। करावनहार बाप निमित्त बन सेवा करा रहे हैं, कराते रहेंगे। इस स्मृति से बेफ्रिक बादशाह बनो। निश्चयबुद्धि बच्चे निश्चिंत, बेफिक्र रहते हैं। सेवा में सफ़लता का सहज साधन ही है -- करावनहार की स्मृति। तो बेफिक्र बादशाह बन सदा यही गीत गाते रहो कि पाना था सो पा लिया...

८७. सेवा का सहज साधन -- सदा खुशमिज़ाज भव

खुशमिज़ाज रहने वाले बच्चे अपने चेहरे से बहुत सेवा करते हैं। मुख से भले कुछ न भी बोलें लेकिन उनकी सूरत, ज्ञान की सीरत को स्वत: प्रत्यक्ष करती है। वह दिलखुश मिठाई खाते और दूसरों को खिलाते हैं। खुशमिज़ाज चेहरा सबको अच्छा लगता है। चाहे ज्ञान को कोई न भी समझे लेकिन खुशी की जीवन को देखकर मन से अनुभव जरूर करते हैं कि इनको कुछ मिला है जो खुश रहते हैं।

८८. असम्भव को सम्भव करने वाले सदा हिम्मतवान भव

जहाँ हिम्मत है वहाँ असम्भव भी सम्भव हो जाता है। हिम्मत रखने से बाप की मदद स्वत: मिलती ही है। दुनिया वाले कहते मन को एकाग्र करना बहुत मुश्किल है, असम्भव है, लेकिन आपके लिए सेकण्ड की बात है। बस, बाबा कहा और मन ठिकाने पर पहुंचा। तो हिम्मत के वरदान से असम्भव को सम्भव करने वाले सहजयोगी बनो।

८९. मन को सु-मन बनाने वाले सदा खुशनसीब भव

भक्ति-मार्ग में मन को अमन वा दमन करते हैं, प्राणायाम चढ़ाना, एक ही मूर्ति को देखते रहना–कितनी मेहनत करते हैं! आप बच्चे ऐसे खुशनसीब हो जो सिर्फ मन को बाप की तरफ लगाते तो मन सु-मन बन जाता है अर्थात् मन का भटकना बंद हो जाता है। सदा अनहद खुशी के गीत अन्दर से बजते रहते हैं – यही है श्रेष्ठ नसीब वा भाग्य की निशानी।

९०. दु:ख के चक्करों से मुक्त होने के लिए सदा स्वदर्शन चक्रधारी भव

अनेक प्रकार के दु:ख के चक्करों से बचने के लिए लोग सोचते हैं कि इस सृष्टि-चक्र से ही निकल जाएं। लेकिन आप सृष्टि-चक्र के अन्दर पार्ट बजाते हुए अनेक दु:ख के चक्करों से मुक्त हो जीवनमुक्त स्थिति को प्राप्त करने के लिए सदा स्वदर्शन चक्रधारी बनते हो। यही वरदान कर्मेन्द्रियों के धोखे से बचा देता है। परवश होने के बजाय अधिकारी बना देता है। दु:खों के चक्कर से मुक्त करा देता है।

९१. सदा निर्लिप्त अर्थात् न्यारे और अति प्यारे भव

इस वरदान को प्रैक्टिकल अभ्यास में लाने से जब चाहो तब अशरीरी स्थिति में स्थित हो सकते हो और जब चाहो तब कर्मयोगी बन सकते हो। शरीर का बंधन, कर्म का बंधन, व्यक्तियों, वैभवों का बंधन, स्वभाव-संस्कार का बंधन अपनी तरफ आकर्षित नहीं कर सकता। कोई भी खिंचाव अपनी तरफ खींच नहीं सकता।

९२. सर्व आत्माओं को दुआयें देने वाले मास्टर सतगुरु भव

जैसे सतगुरु द्वारा श्रीमत पर चलने वाले बच्चों को सदा दुआयें मिलती रहती हैं, ऐसे आप बच्चे भी अपनी उड़ती कला की विशेषता द्वारा हर आत्मा के प्रति शुभ भावना और शुभ कामना के शुद्ध वायब्रेशन देते रहो अर्थात् मन से हर समय सर्व आत्माओं प्रति दुआयें स्वत: निकलती रहें तो 'मास्टर सतगुरु भव' के वरदानी बन जायेंगे।

९३. रूहानी पर्सनैलिटी द्वारा सदा आकर्षण मूर्त भव

जैसे शरीर की पर्सनैलिटी हर एक को अपनी ओर आकर्षित करती है, ऐसे आपकी रूहानी पर्सनैलिटी दूर से हर आत्मा को अनुभव हो। इसके लिए कर्मकर्त्ता नहीं लेकिन योगयुक्त होकर हर कर्म करो। बोल वा कर्म में साधारणता न हो, अलौकिकता हो। तो रूहानियत की पर्सनैलिटी से आकर्षण मूर्त बन जायेंगे।

९४. परिस्थितियों को सहज पार करने के लिए स्मृति सो समर्थी स्वरूप भव

स्मृति-स्वरूप सो समर्थ-स्वरूप आत्मा के लिए परिस्थितियां, पेपर, विघ्न सब साइडसीन हैं। स्मृति में है कि यह मंजिल के साइड-सीन्स अनगिनत बार पार किए हैं, नथिंग न्यु। इस स्मृति के फाडन्डेशन से हलचल हो नहीं सकती। स्मृति स्वरूप आत्मा समर्थ होने के कारण परिस्थितियों को खेल समझकर पार कर लेती है। घबराती नहीं है।

९५. पवित्रता की विशेषता से गायन-योग्य सम्पन्न वा सम्पूर्ण भव

आप होलीहंस आत्मायें संगमयुग पर स्वच्छता अर्थात् पवित्रता को धारण करती हो, अर्थात् तन, मन और दिल से सदा बेदाग वा स्वच्छ बनती हो। यह स्वच्छता वा सम्पूर्ण पवित्रता ही गायन योग्य सम्पन्न वा सम्पूर्ण भव का वरदानी बना देती है। तन, मन, दिल और सम्बन्ध चारों की सम्पूर्ण स्वच्छता को ही पवित्रता कहा जाता है।

९६. सर्व कर्मेन्द्रियों को शीतल और शान्त बनाने वाले शीतल योगी भव

अभी आप बच्चे योग द्वारा कर्मेन्द्रियों को शीतल और शान्त बनाते हो। कर्मेन्द्रियों की चंचलता समाप्त होना अर्थात् शीतल योगी बनना। इसी का यादगार शीतला देवी के रूप में पूजा जाता है। जो शीतल योगी बनते हैं उनमें कभी क्रोध वा रोब का संस्कार स्वप्न में भी आ नहीं सकता। कोई भी कर्मेन्द्रिय धोखा दे नहीं सकती।

९७. परखने की शक्ति द्वारा सम्बन्ध-सम्पर्क में सफलतामूर्त भव

दिव्य बुद्धि के वरदान से परखने की शक्ति को यथार्थ और श्रेष्ठ बनाओ तो निर्णय यथार्थ दे सकेंगे। और यथार्थ निर्णय होने के कारण सम्बन्ध-सम्पर्क वा सेवा में सफलतामूर्त के वरदानी बन जायेंगे। क्योंकि जिस आत्मा को जिस विधिपूर्वक सहयोग चाहिए, शिक्षा चाहिए वा स्नेह चाहिए, उस समय यथार्थ परखकर देने से सम्बन्ध-सम्पर्क में

सफलता अवश्य मिलती है।

९८. पावरफुल ब्रेक द्वारा फर्स्ट-डिवीज़न के अधिकारी भव

कभी भी ऊंचाई के रास्ते पर जाते हैं तो पहले ब्रेक चेक करते हैं। आप बच्चे भी फर्स्ट डिवीजन में आने के लिए फास्ट पुरुषार्थ कर रहे हो अर्थात् ऊंची मंजिल की ओर जा रहे हो। तो ब्रेक को बार-बार चेक करो। ऐसी पावरफुल ब्रेक हो जो संकल्पों की ट्रैफिक को एक सेकेण्ड में जहाँ चाहे वहाँ स्टॉप कर दो अर्थात् मन-बुद्धि को जहाँ चाहे वहाँ लगा लो। इससे फर्स्ट डिवीजन में आने का अधिकार मिल जायेगा।

९९. तपस्वीमूर्त बनने के लिए सदा अन्तर्मुखी भव

अन्तर्मुखी भव का वरदान प्रैक्टिकल अभ्यास में लाओ तो तपस्वीमूर्त बन जायेंगे। अन्तर्मुखी अर्थात् भ्रकुटी की कुटिया में सदा शान्तचित स्थिति का अनुभव करने वाले। अधिक बोलचाल के रस में आने वाले नहीं। जिस समय, जिस स्थान पर जो बोल आवश्यक है, युक्तियुक्त है, स्वयं के लिए वा दूसरी आत्माओं के लिए लाभदायक है वही बोल बोलो। बोल पर संयम रखो तो तपस्या का आनंद ले सकेंगे।

१००. राज़युक्त और योगयुक्त बनने के लिए युक्तियुक्त भव

युक्तियुक्त वह है जिससे सदा यथार्थ और श्रेष्ठ कर्म हो। कोई भी कर्म रूपी बीज फल के सिवाय न हो। तो यह वरदान कार्य में लगाना अर्थात् जिस समय जो संकल्प, वाणी वा कर्म चाहिए वही करना। इससे सहज ही राज़युक्त और योगयुक्त बन जायेंगे।

१०१. मेरे को तेरे में समाने वाले विश्व-कल्याणकारी भव

मेरे को तेरे में समाना अर्थात् हद को बेहद में समाना। सबके संकल्प, बोल और सेवा की विधि बेहद की अनुभव हो। दिल में सदा बेहद का भाव हो। दिल में हदें नहीं हों। स्थान की हद का प्रभाव दिल पर न हो। हदों को सर्व वंश सहित समाप्त करना ही 'विश्व-कल्याणकारी भव' का वरदान प्राप्त करना है।

१०२. मन-बुद्धि की समर्पणता द्वारा सर्वन्श त्यागी भव

मन-बुद्धि से समर्पण होना -- यह सबसे पहला त्याग है। जो ऐसे समर्पण हैं उन्हें हर समय बाप और श्रीमत की स्मृति रहती है। वे सदा स्वयं को निमित्त समझ हर कर्म में न्यारे और प्यारे रहते हैं। देह के संबंध से भी मैं-पन का त्याग हो जाता है। यही है सर्वंश त्याग, जो मन-बुद्धि से समर्पण होने वाले बच्चों को वरदान रूप में प्राप्त हो जाता है।

१०३. हर संकल्प में ब्रह्मा बाप समान वफादार, पतिव्रता भव

जैसे पतिव्रता नारी एक पति के बिना और किसी को भी स्वप्न में भी याद नहीं कर सकती, ऐसे हर समय 'एक बाप दूसरा न कोई -- यह वफादारी का प्रत्यक्ष स्वरूप है। जैसे ब्रह्मा बाप ने इसी वफादारी के बल से, एक बल एक भरोसे के प्रत्यक्ष कर्म से हर परिस्थिति को सहज पार किया। ऐसे फालो फादर अर्थात् हर संकल्प में वफादार बनो।

१०४. निमित्त और निर्माण भाव की विशेषता से सिद्धि-स्वरूप भव

सेवा की सफलता का विशेष आधार निर्माण भाव, निमित्त भाव और बेहद का भाव है। इसी विधि से सिद्धि-स्वरूप बनो। एक तरफ अति निर्माण, दूसरे तरफ नये ज्ञान की अथॉर्टी। निर्माणता के साथ सत्यता की निर्भयता ही सेवा में सिद्धि-स्वरूप बनाती है।

१०५. माननीय बनने के लिए स्वमानधारी निर्माण भव

जो स्वयं स्वमान में रहते हैं उन्हें स्वत: ही औरों द्वारा मान मिलता है। आप अविनाशी स्वमान वाली पूज्य आत्मा बनते हो, इसलिए अभी तक अपनी पूजा देख रहे हो। लेकिन जितना ही स्वमानधारी उतना ही निर्माण। स्वमान का भी अभिमान न हो। कैसी भी आत्मायें हो सबके प्रति रहम की दृष्टि हो, अभिमान की नहीं, तब सर्व द्वारा मान प्राप्त होगा।

१०६. सदा सेफ्टी के लिए मस्तक पर परमात्म हाथ का अनुभव करने वाले स्नेही भव

दिल का ऐसा अटूट स्नेह हो जो हर-पल दिल में बाप की याद समाई हुई हो। मस्तक पर परमात्म हाथ का अनुभव ऐसा होता रहे जो हर एक को दृष्टि, बोल वा कर्म से परमात्मा बाप का साक्षात्कार हो। यही वरदान का हाथ हर बात में सेफ्टी का साधन है। यही सबसे बड़े ते बड़ी सिक्योरिटी है।

१०७. सर्व विशेषताओं को कार्य में लगाते विशेषता सम्पन्न भव

बापदादा हर बच्चे की विशेषताओं को देखते हैं, हर एक में अपनी-अपनी विशेषता है, सिर्फ उस विशेषता को जानकर कार्य में लगाओ तो वह विशेषता बढ़ती जायेगी। दुनिया में तो धन खर्च करने से कम होता है लेकिन यहाँ विशेषता रूपी धन को जितना यूज़ करेंगे, खर्च करेंगे उतना बढ़ेंगी अर्थात् विशेषता सम्पन्न बनते जायेंगे।

१०८. बाप और आप -- इस स्मृति से सदा आगे बढ़ने वाली श्रेष्ठ आत्मा भव

बाप और आप इस स्मृति की लकीर से बाहर नहीं जाओ, यह लकीर ही परमात्म-छत्रछाया है। जो इस छत्रछाया की लकीर के अन्दर हैं उनके पास माया के आने की हिम्मत नहीं। इससे मेहनत, रुकावट वा विघ्नों की अविद्या हो जाती है। यह स्मृति सदा तीव्र पुरुषार्थ द्वारा उड़ती कला में आगे बढ़ाने वाली है।

१०९. सन्तुष्टता के खजाने द्वारा सर्व गुणों से सम्पन्न भव

सन्तुष्टता का खजाना अविनाशी खजाना है, जिसके पास सन्तुष्टता का खजाना है उसके पास और गुण भी अवश्य होंगे, गुणों की खान हो जाती है। कोई भी बात हो जाए, कोई समस्या आ जाए लेकिन सन्तुष्टता न जाए, बात आयेगी और चली जायेगी लेकिन सन्तुष्टता को नहीं जाने दो तो हर समय भरपूरता का अनुभव होता रहेगा।

११०. अपनी प्रत्यक्ष जीवन द्वारा सदा श्रेष्ठ सेवाधारी भव

जो बच्चे अपनी जीवन को सदा ही सन्तुष्ट और खुशनुमा बनाते हैं, वह

हर कदम में सेवा करने के निमित्त बनते हैं। वाणी द्वारा तो सेवा होती ही है लेकिन वाणी के साथ-साथ चेहरे और चलन द्वारा निरन्तर सेवा होती रहे। जो भी सम्पर्क में आये, उसके दिल से वाह-वाह के गीत निकलें। आपकी जीवन को देखकर दूसरों में विजयी बनने की हिम्मत आ जाए–यह बहुत श्रेष्ठ सेवा है।

१११. अलबेलेपन को समाप्त करने के लिए यथार्थ रहमदिल भव

अपने दिल का रहम अलबेलापन सहज समाप्त कर देता है। जो स्वयं प्रति रहमदिल बनते हैं वो स्वत: दूसरों के प्रति भी रहमदिल बन जाते हैं। ज्ञान-मार्ग में जो यथार्थ रहमदिल के वरदानी हैं उनका ३ बातों से किनारा हो जाता है – १. अलबेलापन, २. ईर्ष्या, ३. घृणा। क्योंकि ज्ञानयुक्त रहम में रूहानियत का रुहाब भी अवश्य होता है।

११२. सेवा का सहज साधन लाइट-माइट रूप भव

जैसे कोई भी प्रकार की लाइट अपनी तरफ आकर्षित जरूर करती है, ऐसे आप बच्चे लाइट-माइट रूप बनो जिससे हर एक बाप की तरफ आकर्षित हो। जिस भी आत्मा को कोई देखे तो हर चेहरे से बाप द्वारा प्राप्त हुई अविनाशी खुशी, अतीन्द्रिय सुख वा अविनाशी शान्ति की झलक दिखाई दे। यही सेवा का सहज साधन है।

११३. विश्व के आगे एग्जाम्पल बनने के लिए माया प्रूफ भव

अब ऐसे मायाप्रूफ बनो जो आपका एग्जाम्पल बापदादा सभी को दिखायें। मायाप्रूफ वही बन सकता जो खुशी में सदा हर्षित रहता है। जिसकी दिल से यही खुशी का गीत सदा निकलता कि जो पाना था वह पा लिया .. इस खुशी में रहने से किसी भी प्रकार की उलझन वा उदासी आ नहीं सकती अर्थात् मायाप्रूफ का वरदान मिल जाता है।

११४. संकल्प और स्वरूप की समानता द्वारा स्कॉलरशिप के वरदानी भव

जैसा संकल्प उठता है वैसा स्वरूप बनता जाए। संकल्प किया -- अशरीरी हो जाएं, मास्टर प्रेम के सागर की स्थिति में स्थित हो जाएं .. संकल्प के साथ वही स्वरूप बनाना -- इसी प्रैक्टिस के आधार पर स्कॉलरशिप प्राप्त होगी। जैसे स्थूल वस्त्र उतारना सहज होता है ऐसे देह-अभिमान का वस्त्र सेकेण्ड में उतार दें। जब चाहें धारण करें जब चाहें न्यारे हो जाएं। इसके लिए किसी भी प्रकार का बंधन न हो।

११५. नथिंग न्यु की स्मृति से सदा अचल भव

वृत्ति चंचल होने का कारण क्यों और क्या..यही दो शब्द हैं। इसी से हलचल होती है। और एक शब्द 'नथिंग न्यु' अचल बना देता है। कैसी भी बात आ जाए, चाहे मन्सा की, चाहे वाणी की, चाहे सम्पर्क-सम्बन्ध की लेकिन नथिंग न्यु। नथिंग न्यु में न क्वेश्चन है और न आश्चर्य। इसी पाठ को रिवाइज करके पक्का करो तो अचल भव का वरदान मिल जायेगा।

११६. नालेजफुल की स्टेज द्वारा सदा विजयी भव

माया अन्दर से बिल्कुल ही शक्तिहीन है, उसका बाहर का रूप देख घबराओ नहीं, उसको जिंदा समझ मूर्छित न हो जाओ, माया मूर्छित हुई पड़ी है। अब उसे खुशी-खुशी विदाई दो। नालेजफुल की स्टेज पर रहो तो कभी धोखा नहीं खायेंगे, सदा विजयी भव के वरदानी बन जायेंगे।

११७. अमृत्व का वरदान प्राप्त करने वाले सदा मायाजीत भव

सद्गुरु द्वारा संगम पर मायाजीत भव का वरदान और भविष्य में अकाले मृत्यु से बचने का वरदान प्राप्त होता है। ऐसी अमृत्व की वरदानी आत्मा को माया हिला नहीं सकती, दूर से भी नज़र नहीं डाल सकती। जिन्हें इस वरदान का नशा रहता है वह स्वप्न में भी माया से मूर्छित नहीं हो सकते हैं।

११८. सर्व खजाने विश्व-सेवा में अर्पित करने वाली सम्पन्न आत्मा भव

जैसे मन-बुद्धि से स्वयं को बाप के आगे समर्पण किया है वैसे अब अपना समय और सर्व प्राप्तियां–ज्ञान, गुण और शक्तियां विश्व की सेवा अर्थ समर्पण करो। जो संकल्प उठता है उसे चेक करो कि यह विश्व-सेवा प्रति है। ऐसे सेवा प्रति अर्पण होने से स्वयं सम्पन्न हो जायेंगे। सेवा की लगन से छोटे-बड़े पेपर्स वा परीक्षायें स्वत: ही समाप्त हो जायेंगी।

११९. समीप रत्नों में आने के लिए रूहानी स्थिति में स्थित श्रेष्ठ आत्मा भव

सदा रूहानी स्थिति में स्थित रहने वाली आत्मा शरीर में होते हुए भी न्यारी स्थिति में स्थित रहती है। उनके ऊपर सत के संग का रंग चढ़ा होता है। सत का रंग है ही रूहानियत का रंग–जिसमें रंगी हुई आत्मा शरीर को देखते हुए भी नहीं देखती। उसे जो न देखने वाली चीज़ है वह प्रत्यक्ष दिखाई देती है। ऐसे रूहानी मस्ती में रहने वाले ही बाप को अपना साथी बना सकते हैं।

१२०. एक सेकेण्ड के वन्डरफुल खेल द्वारा 'पास विद् आनर' के अधिकारी भव

एक सेकेण्ड में विस्तार से सार में जाना और एक सेकेण्ड में सार से विस्तार में आना – यह है वन्डरफुल खेल। इस सेकण्ड के खेल का अभ्यास ऐसा हो जो जब चाहो जैसे चाहो उसी स्थिति में स्थित हो जाओ। क्योंकि अन्तिम पेपर सेकेण्ड का ही होगा और जो सेकेण्ड के पेपर में पास हुए वो 'पास विद् आनर' हो जायेंगे। इसके लिए समेटने की शक्ति को बढ़ाओ।

१२१. दु:ख की लहरों से छूटने के लिए सदा सुखदाई भव

आपके नयन, मुख और चेहरा सभी को सुख दे, ऐसे सुखदाई भव के वरदानी बनो तो संकल्प में भी दु:ख की लहर नहीं आ सकती। सदा ज्ञान का मनन करते हुए अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलते रहो।

जिससे सभी आत्मायें आपको सुख में झूलता हुआ देख दु:खी से सुखी बन जाएं।

१२२. डबल लाइट की स्थिति द्वारा सदा अथक भव

जो जितना हल्का होता है उतना अथक होता है। जैसे शरीर के बोझ वाला भी थक जाता है, हल्का थकता नहीं। ऐसे किसी भी प्रकार का बोझ चाहे मन्सा का हो, चाहे सम्पर्क-संबंध का हो लेकिन बोझ थकावट में लायेगा। इसलिए सब बोझ बाप को देकर आप सदा हल्के रहो तो अथक भव का वरदान मिल जायेगा।

१२३. सदा एक की याद में रहने वाले सच्चे तपस्वी भव

तपस्वी की तपस्या सिर्फ बैठने के समय नहीं, तपस्या अर्थात् लगन। चलते-फिरते, भोजन करते भी लगन लगी हो। एक की याद में, एक के साथ में भोजन स्वीकार करना, सदा एक के संग में रहना, एक से दिल की बातें करना, एक बाप दूसरा न कोई....यही तपस्या है। ऐसे तपस्वी भव का वरदान प्राप्त कर स्वयं भी सम्पन्न बनो और दूसरों को भी सम्पन्न बनाओ।

१२४. दु:ख की परिस्थिति में भी सदा सुख का अनुभव करने वाले महावीर भव

कोई भी परिस्थिति चाहे असन्तोष की हो, दु:ख की घटना हो लेकिन स्थिति सदा सुखमय वा एकरस रहे। नालेज की शक्ति के आधार पर पहाड़ माफिक परिस्थिति भी राई अनुभव हो। कुछ भी हो जाए, नथिंग न्यु..ऐसी स्थिति में रहना अर्थात् महावीर भव का वरदान प्राप्त करना।

१२५. सदा ज्ञान रत्नों से खेलने वाले मास्टर ज्ञान सागर भव

सबसे बड़े से बड़े अविनाशी रत्न ज्ञान रत्न हैं। जो सदा ज्ञान रत्नों से खेलते हैं वह मास्टर ज्ञान सागर बन जाते हैं। आधा कल्प पत्थरों से खेला, इसलिए पत्थरबुद्धि बन दु:खी-अशान्त होते रहे। अब मास्टर ज्ञान सागर के वरदान को स्मृति में रख सदा ज्ञान रत्नों से खेलते रहो

तो बीती हुई जीवन ऐसे लगेगी जैसे मेरी नहीं, किसी दूसरे की थी।

१२६. अपने हर कर्म द्वारा बाप का साक्षात्कार कराने वाले कर्मयोगी भव

जैसे हद की आत्माओं से स्नेह रखने वाली आत्मा के चेहरे और चलन से दिखाई देता है कि यह कोई के स्नेह में लवलीन है। ऐसे आपके हर कर्म द्वारा बाप के स्नेह और संबंध का हर आत्मा को साक्षात्कार हो-तब कहेंगे कर्मयोगी भव के वरदानी। ऐसा वरदान प्राप्त कर हर संकल्प, वाणी और कर्म द्वारा बाप के स्नेह वा सुख-शान्ति का वायब्रेशन विश्व में फैलाओ।

१२७. रूहानी लाइट द्वारा वायुमण्डल को परिवर्तन करने की सेवा में सफलतामूर्त भव

जैसे स्थूल लाइट आंखों से दिखाई देती है ऐसे रूहानी लाइट अनुभव से जानेंगे। अब ऐसी अपनी पावरफुल लाइट-माइट हाउस स्टेज बनाओ जिससे हर आत्मा को शान्ति, सुख और पवित्रता की लाइट-माइट का अनुभव हो। जब ऐसा रूहानी वायुमण्डल बने तब आत्मायें स्वत: खिंचकर समीप आयेंगी। ऐसी सेवा से ही सफलतामूर्त बनेंगे।

१२८. सदा गॉडली स्टूडेन्ट लाइफ की स्मृति से निश्चिंत वा निर्विघ्न भव

जैसे स्टूडेन्ट सदा हंसते, खेलते और पढ़ते रहते, दूसरी कोई बात बुद्धि में विघ्न रूप नहीं बनती। ऐसे ही पढ़ना, पढ़ाना और निर्विघ्न रहना, बाप के साथ उठना-बैठना, खान-पीना -- यही है गाडॅली स्टूडेन्ट, बेस्ट लाइफ। इसमें सदा हंसते रहो, गाते रहो और बाप के साथ चलते रहो तो निश्चिंत वा निर्विघ्न भव के वरदानी बन जायेंगे।

१२९. विधि द्वारा स्व पुरुषार्थ वा सेवा में वृद्धि प्राप्त करने वाली श्रेष्ठ आत्मा भव

वृद्धि का वरदान प्राप्त करने के लिए सदा विधिपूर्वक चलो। ब्राह्मण अर्थात् विधिपूर्वक चलने वाले। अमृतवेले से रात तक मन्सा-वाचा-

कर्मणा व सम्पर्क-सम्बन्ध में विधिपूर्वक चलो तो वृद्धि अवश्य होगी। अगर किसी भी बात में वृद्धि नहीं होती है तो जरूर कोई विधि की कमी है। इसलिए कारण को सोचकर निवारण करो तो कभी दिलशिकस्त नहीं होंगे।

१३०. सदा विघ्न-विनाशक बनने के लिए निरन्तर योगी के साथ निरन्तर सेवाधारी भव

जैसे बाप अति प्यारा लगता है, बाप के बिना जीवन नहीं, ऐसे ही सेवा के बिना जीवन नहीं। सोते हुए भी सेवा हो, सोते समय कोई देखे तो आपके चेहरे से शान्ति, आनंद के वायब्रेशन अनुभव करे। हर संकल्प हर कर्म में सदा सेवा समाई हुई हो – इसको कहते हैं निरन्तर सेवा-धारी। ऐसे निरन्तर सेवाधारी वा निरन्तर योगी सदा विघ्न-विनाशक होते हैं।

१३१. सर्व आत्माओं को छत्रछाया की अनुभूति कराने वाले विश्व-कल्याणकारी भव

जो भी आत्मायें आपके सम्पर्क में आती हैं उन्हें शक्ति वा शान्ति प्राप्त होने का अनुभव हो, उदास आत्मायें सम्पर्क में आते ही हर्षित हो जाएं। हर बोल से उमंग-उत्साह दिलाने का, मुश्किल को सहज करने का, अधीन को अधिकारी बनाने का कार्य होता रहे, तब कहेंगे विश्व-कल्याणकारी। ऐसी वरदानी आत्मा का सम्पर्क भी आत्माओं को छत्रछाया के रुप में अनुभव होता है।

१३२. संकल्प और समय पर अधिकार रखने वाले विश्व-अधिकारी भव

आदिकाल में विश्व-अधिकारी बनने का वरदान उन्हीं बच्चों को प्राप्त होता है जिनका अभी अपने संकल्प और समय पर पूरा अधिकार है। ऐसी अधिकारी आत्मायें ही विश्व की आत्माओं द्वारा सतोप्रधान आदि-काल में सर्व का सत्कार प्राप्त करती हैं। वर्तमान समय स्वराज्य करने वाले ही भविष्य में विश्व राज्य- अधिकारी बनते हैं।

१३३. सदा समानता द्वारा सदा समीपता का अनुभव करने वाली विशेष आत्मा भव

वर्तमान समय बापदादा के गुणों, नालेज और सेवा में समानता और साथीपन का अनुभव करना ही समीपता का वरदान प्राप्त करना है। जो बच्चे अभी बाप से वायदा निभाते हैं कि तुम्हीं से बैठूं, तुम्हीं से हर सेकेण्ड, हर कर्म में साथ निभाऊं, ऐसा वायदा निभाने वाले सपूत बच्चों को बाप भी जन्म-जन्मान्तर साथी भव का वरदान देते हैं। साकार बाप के साथ ज्ञानी तू आत्मा और भक्त आत्मा बनने में सदा साथी वा ततत्वम् का वरदान ऐसी विशेष आत्माओं को प्राप्त होता है।

१३४. सम्पन्न मूर्त के वरदान द्वारा एवर वेल्दी भव

एवर वेल्दी रहने के लिए सर्व शक्तियों के खजाने से, सर्व गुणों के खजाने से, ज्ञान के खजाने से सदा सम्पन्न रहो। क्या करूं, कैसे करूं, चाहते हैं लेकिन कर नहीं पाते–कभी भी ऐसी शक्तियों के निर्धनता के बोल वा संकल्प उत्पन्न न हों। स्वयं को सदा सम्पन्न मूर्त अनुभव करो और अपनी भरपूरता द्वारा निर्धन आत्माओं को छत्रछाया के रूप में उमंग-उत्साह का अनुभव कराओ।

१३५. नीरस वातावरण में खुशी की झलक लाने वाले एवर हैप्पी के वरदानी भव

कैसा भी दु:ख की लहर उत्पन्न करने वाला, अप्राप्ति का अनुभव कराने वाला नीरस वातावरण हो, ऐसे वातावरण में भी सदा खुश रहकर अपनी खुशी की झलक से दु:ख और उदासी के वातावरण को ऐसा परिवर्तन कर दो जैसे सूर्य अंधकार को परिवर्तन कर देता है। एवर हैप्पी रहने का वरदान प्राप्त करने वाली आत्मायें ही यह सेवा कर सकती हैं।

१३६. सर्व को वरदान देने वाले वरदानीमूर्त, कामधेनु, इष्टदेव आत्मा भव

बापदादा के ऐसे समीप साथी इष्ट देव आत्मा बनो जो हर आत्मा को उनकी इच्छा प्रमाण वरदान देने वाले वरदानी मूर्त वा कामधेनु बन उन्हें वरदान दे दो। कोई को भक्त तू आत्मा का वरदान दो, कोई को आत्म-ज्ञानी भव का वरदान दो। सकामी राज्य करने वालों को राज्य-पद का वरदान दो। जो आत्मा जो मांगे तथास्तु।

१३७. प्योरिटी की पर्सनैलिटी द्वारा आकर्षण मूर्त भव

कोई भी पर्सनैलिटी मनुष्य को अपनी तरफ आकर्षित जरूर करती है। वर्तमान समय प्योरिटी ही सबसे बड़ी पर्सनैलिटी है। हर एक इसी का ही अनुभव करना चाहते हैं। तो अभी आपके प्रैक्टिकल जीवन में यह प्योरिटी की पर्सनैलिटी हो तो यह पर्सनैलिटी स्वत: ही सबको आकर्षित करेगी और अनुभव करायेगी कि यही विश्व में बड़े से बड़ी पर्सनैलिटी वाले हैं।

१३८. स्वयं के नाम, मान के त्याग द्वारा सर्व का भाग्य बनाने वाले भाग्यविधाता भव

अल्पकाल के नाम और मान से न्यारे बनो तो सदाकाल के लिए सर्व के प्यारे बन जायेंगे। नाम और मान के भिखारीपन का अंशमात्र भी त्याग करने से सर्व का भाग्य बनाने वाले विश्व के भाग्यविधाता बन जायेंगे। कर्म का फल तो स्वत: आपके सामने सम्पन्न स्वरूप में आयेगा, लेकिन अल्पकाल की इच्छाओं से इच्छा मात्रम् अविद्या बनो, त्याग करो तो भाग्य आपके पीछे-पीछे आयेगा।

१३९. अनेकों की मुश्किल को सहज करने वाले सैलवेशन आर्मी भव

अब ऐसी सैलवेशन आर्मी बनो जो अनेकों की मुश्किल को सहज कर दो। हर एक के कर्म की गति को जान सद्गति देने के फैसले करो, खुद फैसल्टीज़ न लो। अब दाता बनकर दो। कोई भी सेवा प्रति वा स्वयं प्रति सैलवेशन लेते हो तो अल्पकाल की सफलता प्राप्त होगी लेकिन आज महान होंगे कल महानता के प्यासी आत्मा बन जायेंगे। इसलिए सैलवेशन लेने के बजाय अब सैलवेशन आर्मी बनो।

१४०. इन्साफ(न्याय) मांगने के बजाय सर्व प्राप्तियों से तृप्त आत्मा भव

ब्राह्मण जीवन का सलोगन है–अप्राप्त नहीं कोई वस्तु मास्टर सर्वशक्तिमान् के खजाने में। सदा यह सलोगन स्मृति में रख तृप्त आत्मा बनो। कभी भी इन्साफ मांगने वाले नहीं बनना। ऐसे नहीं -- मैंने किया, मुझे ही मिलना चाहिए, मेरा कुछ इन्साफ होना चाहिए। किसी भी प्रकार से कुछ भी मांगने वाले स्वयं को तृप्त आत्मा अनुभव नहीं कर सकते, कोई भी इच्छा अच्छा कर्म समाप्त कर देती है, इसलिए सर्व प्राप्ति स्वरूप बनो।

१४१. विश्व से दु:ख, अशान्ति की समस्या को समाप्त करने वाले दु:खहर्ता सुखकर्ता भव

अभी दु:ख, अशान्ति की अनुभूति अति में जा रही है, उसे अपनी अन्तिम सम्पन्न स्टेज द्वारा समाप्त करने का कार्य तीव्रता से करो। अपनी रचना के बेहद दु:ख और अशान्ति की समस्या को समाप्त करने के लिए मास्टर रचता की स्टेज पर स्थित हो दु:खहर्ता सुखकर्ता का पार्ट बजाओ। अपने सुख-शान्ति के खजाने से अपनी रचना को महादान और वरदान दो।

१४२. दु:ख-सुख, निंदा-स्तुति में समान रहने वाले सम्पूर्ण योगी भव

योगियों की स्टेज का वर्णन है कि योगी दु:ख को भी सुख के रूप में अनुभव करते हैं। तो ऐसे सम्पूर्ण योगी भव के वरदानी बनो जो दु:ख-सुख, निंदा-स्तुति सबमें समान स्थिति रहे। यह दु:ख है..यह सुख है, इसकी नालेज होते भी दु:ख के प्रभाव में नहीं आओ। दु:ख की भी बलिहारी सुख के दिन आने की समझो–तब कहेंगे सम्पूर्ण योगी।

१४३. आपदाओं को भी मनोरंजन का रूप देने वाले मास्टर रचता भव

सदा इस वरदान की स्मृति से मास्टर रचता की स्टेज पर स्थित हो खिलाड़ी बन खेल करो तो बड़े से बड़ी आपदा भी मनोरंजन का दृश्य अनुभव होगी। जैसे महाविनाश जैसी आपदा भी स्वर्ग का गेट खुलने

का साधन है। ऐसे किसी भी प्रकार की छोटी-बड़ी समस्या वा आपदा मनोरंजन का रूप दिखाई देगी। 'हाय-हाय' के बजाय 'ओहो' शब्द निकलेगा। यही है अंगद के समान अचल स्टेज।

१४४. प्रशंसा रूपी प्रत्यक्षफल प्राप्त करने के लिए सदा प्रसन्नमूर्त भव

जो स्वयं सदा सन्तुष्ट वा प्रसन्न रहते हैं उनकी प्रशन्सा हर एक अवश्य करते हैं। प्रसन्नता का प्रत्यक्षफल है ही प्रशन्सा। सन्तुष्टता की निशानी प्रत्यक्ष रूप में प्रसन्नता दिखाई देगी। परन्तु सन्तुष्टता भी तीन प्रकार की चाहिए -- एक बाप से सन्तुष्ट, दूसरा सदा अपने आपसे सन्तुष्ट और तीसरा सर्व सम्बन्ध और सम्पर्क से सन्तुष्ट।

१४५. सर्व शक्तियों को आर्डर में चलाने वाले सदा निडर और निर्भय भव

यह सर्व शक्तियां आपकी भुजायें समान हैं, सिर्फ मालिक बनकर आर्डर करो अर्थात् आह्वान करो तो सेवाधारी बन सेवा में हाजिर हो जायेंगी। लेकिन यदि किसी भी प्रकार का डर है, सोचते हो पता नहीं सहन कर सकेंगे, सामना कर सकेंगे या नहीं, तो यह डर आर्डर चलने नहीं देगा। इसलिए महाकाल के बच्चे निडर और निर्भय बनो तो सर्व शक्तियां सदा सहयोग देती रहेंगी।

१४६. सदा श्रेष्ठ भाव और शुभ भावना द्वारा पुण्य आत्मा भव

पुण्य आत्मा बनने के लिए न व्यर्थ सुनो, न सुनाओ और न सोचो। सदा शुभ भावना से सोचो, शुभ बोल बोलो, व्यर्थ को शुभ भाव से परिवर्तन कर दो। पहले स्वयं को परिवर्तन करने का सोचो, न कि अन्य के परिवर्तन का सोचो। स्वयं का परिवर्तन ही अन्य का परिवर्तन है, इसमें पहले मैं। इस मरजीवा बनने में ही मजा है, इसे ही महाबलि कहा जाता है। यह मरना ही जीना है, यही सच्चा जीयदान है।

१४७. मनमनाभव के महामंत्र की स्मृति से सुख-स्वरूप भव

यह मनमनाभव का महामंत्र सर्व दु:खों से पार कर सुख-स्वरूप बनाने

वाला है। स्वप्न में भी दु:ख का अनुभव न हो, भले तन बीमार हो जाए, धन नीचे- ऊपर हो जाए, कुछ भी हो लेकिन दु:ख की लहर अन्दर आ नहीं सकती। मनमनाभव के मन्त्र की स्मृति से दु:ख की लहर को ऐसे क्रॉस कर लो जैसे सागर में नहाने का खेल कर रहे हैं।

१४८. अपने रजिस्टर को साफ रखने के लिए वृत्ति से भी सदा ब्रह्मचारी भव

सदा ब्रह्मचारी अर्थात् संकल्प में भी किसी प्रकार की अपवित्रता वृत्ति को चंचल नहीं बनाये। पहली हार वृत्ति में होती है, फिर दृष्टि और कृति से होती है। यह वृत्ति की चंचलता ही रजिस्टर को दाग़ी बना देती है। इसलिए वृत्ति के सदा ब्रह्मचारी बनो तो रजिस्टर साफ रहेगा।

१४९. एक मत के फेथफुल संगठन द्वारा साक्षात्कारमूर्त भव

सदा एक दो की विशेषता को स्मृति में रखते हुए आपस में एक दो में फेथफुल रहो, हर एक की विशेषता को देखो तो अनेक होते भी एक दिखाई देंगे और एकमत संगठन हो जायेगा। कोई किसी की ग्लानि की बात सुनाये तो उसे टेका देने के बजाय सुनाने वाले का रूप परिवर्तन कर दो। व्यर्थ के वातावरण को समाप्त कर सबके प्रति शुभ और कल्याण की भावना रखो तो साक्षात्कारमूर्त बन जायेंगे।

१५०. सदा स्नेह सहयोग की लेन-देन द्वारा रायॅल्टी के निज़ी संस्कारों से सम्पन्न भव

ईश्वरीय रायॅल्टी के निज़ी संस्कार वाली रॉयल आत्मायें आपस में सदा एक दो की विशेषताओं का वर्णन करती और सदा सहयोग स्नेह के पुष्पों की लेन- देन कर, रूहानी वृत्ति द्वारा रूहानी वायब्रेशन फैलाती हैं। वे कभी दूसरे द्वारा फेंकी हुई बढ़िया चीज़ भी स्वयं धारण नहीं करतीं। इसलिए सदा ध्यान रहे कि जिस अवगुण वा कमजोरी को हर आत्मा छोड़ने का पुरुषार्थ कर रही है उसे संकल्प में भी धारण करना महापाप है।

१५१. कांटों को फूल बनाने वाले सदा परोपकारी भव

हर आत्मा की कमजोरियों को परखते हुए उसकी कमजोरी को स्वयं में धारण अथवा वर्णन करने के बजाय उस कमजोरी रूपी कांटे को अपने कल्याणकारी स्वरूप से समाप्त कर देना अर्थात् कांटे को भी फूल बना देना–यही है परोपकारी बनना। ऐसी परोपकारी आत्मा होपलेस में भी होप पैदा कर देगी। अपनी शुभ भावना से, स्नेह से, उमंग-उत्साह के सहयोग से, मीठे बोल से उसे शक्तिशाली बना देगी।

१५२. स्वयं की सर्व इच्छाओं का त्याग करने वाले अखण्ड दानी भव

जैसे साकार बाप ने स्वयं निर्माण बन बच्चों को मान दिया, काम के नाम की प्राप्ति का त्याग किया। स्वयं को सदा सेवाधारी रखा, मालिकपन का भी मान वा शान बच्चों को दे दिया। स्वयं इच्छा मात्रम् अविद्या बन सदा अखण्ड दानी बने। त्याग से ही सदाकाल का भाग्य बन गया। तो ऐसे फालो फादर करो अर्थात् अखण्ड दानी बन त्याग से तकदीर की लकीर श्रेष्ठ बनाओ।

१५३. हर महावाक्य के अर्थ को जानने वाले सदा निश्चयबुद्धि, निश्चिन्त भव

निश्चयबुद्धि की पहली निशानी है सदा निश्चिंत। जब कल्याणकारी बाप है, कल्याणकारी जीवन है तो जो भी भगवानुवाच है उसमें अनेक प्रकार के कल्याण समाये हुए हैं, क्यों कैसे और कहां..इस संकल्प से निश्चयबुद्धि का फाउन्डेशन कभी भी हिलाओ मत। हर महावाक्य के अर्थ को जानकर कल्याणकारी बाप और कल्याणकारी समय का हर सेकेण्ड लाभ उठाओ। सदा समर्थ आत्मा बनो।

१५४. सर्व प्राप्तियों के अनुभूति स्वरूप रॉयल आत्मा भव

जैसे आजकल की रॉयल आत्मायें सदा भरपूर होने के कारण यहाँ-वहाँ किसी के अधीन नहीं होतीं। ऐसे आप रॉयल आत्मायें सर्व प्राप्तियों की अनुभूति द्वारा हर खजाने से सदा ऐसे भरपूर रहो जो कोई भी अल्पज्ञ वा अल्पकाल के व्यक्ति वा वैभव की तरफ नज़र न जाये। सदा नयनों में एक बिन्दु रूप बाप ही समाया हुआ हो–यही है रायॅल्टी

अर्थात् रीयल्टी।

१५५. फर्स्ट डिवीज़न का अधिकार प्राप्त करने के लिए हर गुण वा शक्ति की अनुभूति में सम्पन्न भव

संगमयुग पर हर गुण वा हर शक्ति की अनुभूति करना ही फर्स्ट डिवीज़न का अधिकार लेना है। यदि शान्ति की अनुभूति होती, अतीन्द्रिय सुख की नहीं, खुशी की होती, शक्ति-रूप की नहीं तो सेकण्ड डिवीज़न में चले जायेंगे। इसलिए फर्स्ट डिवीज़न का वरदान प्राप्त करने के लिए सर्व प्राप्तियों का अनुभव करो। तब प्रकृति की सतोप्रधानता का सुख प्राप्त कर सकेंगे।

१५६. हर कर्म वा बोल द्वारा रीयल्टी की रॉयल्टी का अनुभव कराने वाली श्रेष्ठ आत्मा भव

रॉयल्टी अर्थात् एक बाप दूसरा न कोई–इसी स्मृति से हर कर्म वा बोल में रायॅल्टी दिखाई देगी। हर कर्म ऐसा सत्य अर्थात् श्रेष्ठ होगा जो सम्पर्क में आने वाली आत्मा को बाप समान चरित्र अनुभव होंगे। हर बोल समर्थ अर्थात् फल देने वाला सत-वचन होगा। उनका सम्पर्क अर्थात् संग पारस का काम करेगा, जो असमर्थ को समर्थ बना देगा। तो ऐसी रीयल्टी की रॉयल्टी के वरदान वाली श्रेष्ठ आत्मा बनो।

१५७. एकमत और एकरस स्थिति के वरदान द्वारा सदा प्रफुल्लित भव

जो बच्चे एकमत और एकरस स्थिति में, एक ही श्रेष्ठ कार्य में लगे हुए हैं वह सदा प्रफुल्लित(हर्षित)रहते हैं। प्रफुल्लित रहने से सेवा भी सदा फलती-फूलती रहती है अर्थात् धरनी फलदायक बन जाती है। क्योंकि जैसी निमित्त आत्मायें होती हैं वैसा वायुमण्डल बनता है। जो स्वयं सदा एक बाप की लगन में मग्न रह निर्विघ्न रहते वह सम्पर्क में आने वाली आत्माओं को भी निर्विघ्न बना देते हैं।

१५८. स्वयं पर सदा बाप के वरदानों का हाथ अनुभव करने वाले रहमदिल भव

बापदादा के वरदानों का हाथ सभी बच्चों पर है लेकिन स्वयं प्रति रहमदिल बन हर कर्म में उसका अनुभव करो। अभी भी परिवर्तन की मार्जिन है, टू लेट का बोर्ड नहीं लगा है। दिन-रात एक दृढ़ संकल्प के पुरुषार्थ से हाई जम्प लगा सकते हो। अपने भाग्य को नम्बरवन बनाने के पुरुषार्थ की लाटरी डालो तो नम्बर निकल आयेगा। इसलिए बीती सो बीती कर अपने भविष्य को श्रेष्ठ बनाने के लिए रहमदिल बनो।

१५९. सेवा अर्थ अवतरित हुए अवतार हैं – इस स्मृति से सदा उपराम भव

अवतार जिस कार्य अर्थ अवतरित होते हैं उन्हें वही कार्य याद रहता है। तो आप हर एक शक्ति-अवतार हो। सदा यही स्मृति में रहे कि हम इस मृत्युलोक के नहीं लेकिन अवतार हैं तो उपराम हो जायेंगे। कोई भी बोझ अनुभव नहीं होगा। सदा न्यारे रह संगमयुग के श्रेष्ठ सुहावने सुख के जीवन का अनुभव करते रहेंगे। कभी भी अपने समय को व्यर्थ नहीं गंवायेंगे।

१६०. पावरफुल स्टेज की अनुभूति करने के लिए सदा ट्रस्टी भव

ट्रस्टी सदा फ़िकर से फारिग होते हैं, उन्हें रूहानी फखुर रहता कि हम मास्टर सर्वशक्तिमान् हैं। कैसे भी सरकमस्टांश में वे स्वयं सदा हल्के और न्यारे रहते हैं। जरा भी वातावरण के प्रभाव में नहीं आते। गृहस्थी समझने से क्या क्यों शुरू हो जाता है लेकिन ट्रस्टी भव के वरदान से फुलस्टॉप आ जाता है। फुलस्टॉप लगाना अर्थात् पावरफुल स्टेज का अनुभव करना।

१६१. निष्काम, रहमदिल की विशेषता से इष्ट देव भव

रहमदिल की विशेषता से ऐसा इष्ट देव बनो जो हर भटकती वा भिखारी आत्मा प्रति निष्काम रहम हो। अपने रहम के संकल्प से हर आत्मा को रूहानी रूप वा रूह की मंजिल की स्मृति दिलाओ। भिखारी आत्मा को सर्व खजानों की झलक दिखा दो। भटकती हुई आत्मा को मुक्ति वा जीवनमुक्ति का किनारा वा मंजिल सामने दिखा दो। सर्व के प्रति

दु:खहर्ता सुखकर्ता का पार्ट बजाओ तब आपको सभी इष्ट देव के रूप में याद करेंगे।

१६२. प्रत्यक्षता के लिए स्वच्छता और निर्भयता की विशेषता में सम्पन्न भव

परमात्म प्रत्यक्षता का आधार आप बच्चों की स्वच्छता और निर्भयता है। इन दो बातों में अब सम्पन्न बनो अर्थात् संकल्प द्वारा भी किसी प्रकार की अशुद्धि(बुराई)को टच न करो और अपने पुराने तमोगुणी संस्कारों पर विजयी बनने वा अन्य आत्माओं के संस्कारों को परिवर्तन करने में निर्भय बनो। साथ-साथ सत्य ज्ञान को निर्भयता के आधार पर सिद्ध करो वा परमात्म बाम्ब फेंको तब प्रत्यक्षता होगी।

१६३. वरदानीमूर्त बनने के लिए अमृत-कलश धारी भव

स्वयं को अमृत कलश से ऐसा सम्पन्न बनाओ जो वरदानीमूर्त का पार्ट बजा सको। क्योंकि आत्माओं में अब सुनने की शक्ति, चलने की हिम्मत नहीं है, सिर्फ एक प्यास है कि कुछ मिल जाए, ऐसी अनेक आत्मायें विश्व में भटक रही हैं जिन्हें चलने के पांव अर्थात् हिम्मत भी आपको देनी है। इसलिए सर्व के प्रति अब वरदानीमूर्त बनो अर्थात् अमृतकलशधारी बन वरदानों की वर्षा के भाषण करो। सर्व प्रति संकल्प वा वाणी से वरदान दो।

१६४. स्मृति वा समर्थ-स्वरूप से विजय का झण्डा लहराने वाले सच्चे रूहानी सोशल-वर्कर भव

अब ऐसे सच्चे रूहानी सोशल वर्कर बनो जिनके स्थूल हाथों में नहीं लेकिन स्मृति वा समर्थ-स्वरूप में सदा विजय का झण्डा हो। सदा मुख पर वा संकल्प में बाबा-बाबा की निरन्तर माला के समान स्मृति हो। संकल्प, कर्म और वाणी में यही अखण्ड धुनी वा अजपाजाप हो। जब यह अजपाजाप हो जायेगा तब और सब बातें स्वत: समाप्त हो जायेंगी। फिर सभी की नज़र ऐसी विशेष आत्माओं तरफ स्वत: जायेगी और वे नज़र से निहाल हो जायेंगी ।

१६५. अन्तिम फरिश्ते जीवन की मंजिल पर पहुंचने वाले, सर्व बन्धनमुक्त भव

जैसे जब कोई चीज़ बनाते हैं और वह तैयार हो जाती है तो किनारा छोड़ देती है, ऐसे जितना सम्पन्न स्टेज अर्थात् फरिश्ते जीवन के समीप आते जायेंगे उतना वृत्ति द्वारा सर्व बन्धनों से किनारा होता जायेगा। किसी से भी लगाव नहीं रहेगा। भटकना बंद हो जायेगा, ठिकाना मिल जायेगा। सर्व रिश्ते एक साथ निभाते रहेंगे।

१६६. भरपूरता का वरदान प्राप्त करने के लिए सदा सहयोगी भव

जो आत्मायें दिल व जान, सिक व प्रेम से यज्ञ को सम्पन्न बनाती हैं, जो समय प्रमाण सहयोग की अंगुली देती हैं–उन्हीं का एक से अनेक गुणा बन जाता है। जिन आत्माओं का अमूल्य सहयोग स्थापना के कार्य में आवश्यकता के समय रहा है उन्हें रिटर्न में सदा सम्पन्न रहने का वरदान प्राप्त हुआ है। इसलिए इस विधि को स्मृति में रख सदा भरपूर रहने का वरदान प्राप्त करो।

१६७. सर्व सम्बन्धों का रस एक बाप से लेने वाले नष्टोमोहा स्मृति-स्वरूप भव

रोज़ अमृतवेले यह स्मृति में लाओ कि सर्व सम्बन्धों का सुख बापदादा से लेकर औरों को भी दान देना है। हर संबंध का सुख लो, सर्व सुखों के अधिकारी बन औरों को भी बनाओ। जो भी काम हो तो पहले साकार साथी याद न आये, बाप याद आये, ऐसे सच्चे साथी का सदा साथ लो, एक बाप दूसरा न कोई — इस स्थिति का अनुभव करो तो सहज ही नष्टोमोहा स्मृति-स्वरूप बन जायेंगे।

१६८. शुद्धि की विधि द्वारा सदा विजयी वा निर्विघ्न भव

जैसे कोई भी कार्य शुरु करते हो तो शुद्धि की विधि अपनाते हो, ऐसे जब किसी स्थान पर कोई विशेष सेवा शुरु करते हो, वा चलते-चलते सेवा में कोई विघ्न आते हैं तो पहले संगठित रूप में चारों ओर विशेष

टाइम पर एक साथ योग का दान दो। सर्व आत्माओं का एक ही शुद्ध संकल्प हो – विजयी। यह है शुद्धि की विधि, इससे सभी विजयी वा निर्विघ्न बन जायेंगे और किला मजबूत हो जायेगा।

१६९. फर्स्ट जन्म में साथी बनने के लिए निर्विघ्न व अव्यभिचारी भव

निर्विघ्न का अर्थ है – आये हुए विघ्नों को जम्प दे पार करने वाले, विघ्नों के वश होने वाले नहीं लेकिन विघ्न-विनाशक वा विघ्नों के ऊपर सदा विजयी और अव्यभिचारी अर्थात् एक तुम्हीं से बोलूँ, तुम्हीं से खेलूँ,, तुम्हीं से साथ निभाऊं–ऐसे बच्चों को ही फर्स्ट जन्म का साथ मिलता है। जो यहाँ सर्व संबंधों से बाप के साथ का अनुभव करते हैं वही वहाँ रॉयल कुल के समीप संबंध में आते हैं।

१७०. अनेक आत्माओं की दुआयें प्राप्त करने वाले सच्चे विश्व-सेवाधारी भव

जब लक्ष्य रहता है कि हम विश्व-सेवाधारी, विश्व-कल्याण के कर्त्तव्य के निमित्त हैं; तो जैसा कार्य होता है वैसी अपनी धारणायें होती हैं, विश्व-सेवा का कार्य याद रहे तो सदा रहमदिल और महादानी रहेंगे। हर कदम में कल्याणकारी वृत्ति से चलेंगे और चलायेंगे। मैं-पन समाप्त हो जायेगा, निमित्त-पन याद रहेगा फिर सेवा करने से बाप की याद स्वत: रहेगी और जिनकी सेवा करेंगे उनकी दुआयें भी अवश्य प्राप्त होंगी।

१७१. हर कदम में पद्मों की कमाई जमा करने वाले पद्मापद्म भाग्यशाली भव

संगमयुग को हर कदम में पद्मों की कमाई जमा कर पद्मापद्म भाग्यशाली बनने का वरदान मिला हुआ है। जो हर कदम में पद्मों की कमाई जमा करते हैं उनके चेहरे से सदा प्राप्ति की झलक दिखाई देती है, सम्पर्क में आने वाले भी समझते हैं इनको कुछ प्राप्त हुआ है। उनका सम्पन्न चेहरा सेवा के निमित्त बन जाता है।

१७२. याद और सेवा के डबल लॉक द्वारा मायाजीत भव

माया के गेट को बंद करने के लिए अब डबल लॉक लगाओ अर्थात् याद और सेवा में बिजी रहो, अगर सिर्फ याद में होंगे सेवा में नहीं तो भी माया आ जायेगी, डबल लॉक में माया अन्दर नहीं आयेगी अर्थात् वार नहीं कर सकेगी। इसलिए याद के साथ सेवा भी करते रहो, तो माया का गेट बन्द हो जायेगा, वह आपके खजाने को छीन नहीं सकेगी।

१७३. सेवा का सहज साधन सहज योगी भव

यदि किसी भी बात में कभी मुश्किल का अनुभव हो तो वह मुश्किल बात बाप पर छोड़ दो, स्वयं सदा सहज योगी रहो। इससे सेवा सहज होती रहेगी। क्योंकि सहज योग की सूक्ष्म शक्ति स्वत: ही आत्माओं को अपनी तरफ आकर्षित करेगी। इसलिए कभी किसी भी बात में दिलशिकस्त नहीं बनना, कोई भी कर्म का फल निष्फल हो नहीं सकता।

१७४. सदा सेफ्टी का अनुभव करने वाले कम्बाइन्ड रूपधारी भव

कहाँ भी रहते, कोई भी कार्य करते सदा यही वरदान स्मृति में रहे कि मैं कम्बाइन्ड रूपधारी हूँ, अकेला नहीं, बाप मेरे साथ है। जहाँ बच्चे हैं वहाँ बाप हर बच्चे के साथ है। सदैव बाप की याद की छत्रछाया के अन्दर रहो तो किसी भी प्रकार की माया के विघ्न छत्रछाया के अन्दर आ नहीं सकते। इसलिए सदा अनुभव करो कि हम सेफ्टी के स्थान पर हैं।

१७५. डबल सेवा द्वारा डबल ताजधारी भव

शरीर द्वारा स्थूल सेवा करते हुए मन्सा द्वारा विश्व-परिवर्तन की सेवा में तत्पर रहो, एक ही समय पर दोनों इक्ट्ठी सेवा चलती रहें तो डबल प्राप्ति होगी। कर्म करते हुए चेक करो कि डबल सेवा के बदले सिंगल तो नहीं हो गई! जो मन्सा और कर्मणा दोनों सेवा साथ-साथ करते हैं, वही डबल ताजधारी बनते हैं। इसलिए इस अभ्यास को नेचरल और निरन्तर बनाओ।

१७६. सर्व प्राप्तियों के अनुभवों द्वारा सफलतामूर्त भव

दिन प्रतिदिन वेराइटी प्रकार की इच्छा वाली आत्मायें आपके सामने आयेंगी, उनकी सर्व इच्छाओं को पूर्ण तब कर सकेंगे जब सर्व प्राप्ति के अनुभवी स्वरूप होंगे। जिनके पास सर्व शक्तियों का स्टॉक जमा होगा और साथ-साथ योगी-जीवन का अनुभव होगा वे सर्व को सन्तुष्ट कर सफलतामूर्त बन जायेंगे।

१७७. लवलीन स्थिति द्वारा स्वत: योगी भव

जो एक बाप के प्यार में सदा लीन रहते हैं उन्हें याद में रहने का पुरुषार्थ नहीं करना पड़ता। वे स्वत: योगी बन जाते हैं। उन्हें सिवाय बाप और सेवा के और कुछ दिखाई नहीं देता। जब बुद्धि को एक ही ठिकाना मिल जाता है तो बुद्धि का भटकना स्वत: बंद हो जाता है। वह सहज ही मायाजीत बन जाते हैं।

१७८. बाप को प्रत्यक्ष करने के लिए स्नेह और प्राप्तियों में लवलीन भव

जैसे लौकिक रीति से कोई किसी के स्नेह में लवलीन होता है तो उसके चेहरे से, नयनों से, वाणी से अनुभव होता है कि यह लवलीन है, आशिक है, ऐसे आप बच्चे भी सदा बाप के स्नेह और प्राप्ति में लवलीन रहो। आपके बोल और स्वरूप से बाप के स्नेह का साक्षात्कार हो। बोल में सत्यता और स्वरूप में नम्रता हो। तो इसी विधि से बाप को प्रत्यक्ष कर सकेंगे।

१७९. हर परिस्थिति में पास होने वाले ज्ञान के शस्त्रधारी, महावीर भव

महावीर को सदा ज्ञान के शस्त्र दिखाते हैं। जैसी परिस्थिति वैसे ज्ञान के शस्त्र द्वारा महावीर बन मायाजीत बनो अर्थात् शस्त्रों को समय पर काम में लगाकर सेकेण्ड में विजयी बनो। महावीर अर्थात् हर घड़ी अटेन्शन। पास विद् ऑनर वही होता है जो हर परिस्थिति में पास हो। इसलिए सदा ज्ञान के शस्त्रों से सदा सज़े-सजाये रहो।

१८०. सदा अपने मन में भाग्य के गीत गाने वाली सुख-स्वरूप आत्मा

भव

बापदादा द्वारा संगमयुग पर सभी बच्चों को अविनाशी और श्रेष्ठ प्राप्ति होती है, जिससे सुख स्वरूप बनने का वरदान मिल जाता है। सदा इसी भाग्य के गीत मन में गाते रहो कि घर बैठे भगवान मिल गया तो सुख स्वरूप स्थिति का अनुभव होगा। दु:ख का दरवाजा बन्द हो जायेगा, स्वर्ग अर्थात् सुख का दरवाजा खुल जायेगा। कभी भी वियोग में नहीं आयेंगे।

१८१. स्व-स्थिति की सीट द्वारा हर परिस्थिति में विजयी भव

कोई भी परिस्थिति प्रकृति द्वारा आती है, इसलिए परिस्थिति रचना है और स्वस्थिति वाला रचता है। मास्टर रचता अर्थात् मास्टर सर्वशक्तिमान् कभी रचना से हार खा नहीं सकते, असम्भव है। क्योंकि सीट पर सेट होने वाले में शक्ति होती है। इसलिए सदा अपनी स्वस्थिति की सीट पर सेट रहो तो हर परिस्थितियों पर विजयी बनने का वरदान प्राप्त हो जायेगा।

१८२. ज्ञान-रत्नों से खेलने वाले मरजीवा जन्मधारी श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मा भव

ब्राह्मण अर्थात् मरजीवा जन्म वाले, पिछले शूद्र जन्म की बातें खत्म। ब्राह्मण कभी देह-अभिमान की मिट्टी में खेल नहीं सकते, वह सदा बाप के याद की गोद में रहते हैं, मिट्टी में नहीं जाते। मिट्टी में खेलने वालों को रॉयल नहीं माना जाता। तो श्रेष्ठ ब्राह्मण जन्म की स्मृति से रॉयल बाप के बच्चे रॉयल बनो अर्थात् सदा ज्ञान-रत्नों से खेलते रहो।

१८३. लाफुल और लवफुल के बैलेन्स द्वारा सदा विश्व-कल्याणकारी रहमदिल भव

कोई कैसे भी अवगुण वाली, कड़े संस्कार वाली आत्मा हो, कम बुद्धि वाली आत्मा हो, सदा ग्लानि करने वाली आत्मा हो लेकिन रहमदिल की वरदानी, बेहद की दाता, विश्व-कल्याणकारी आत्मा उनके प्रति भी लाफुल और लवफुल होगी। उनकी बुराई वा कमजोरी को वह पहले क्षमा करेगी, उन्हें अपनी महानता की स्मृति दिलायेगी, फिर

शिक्षा देगी।

१८४. सर्व को हिम्मत व उत्साह दिलाने वाले शुभचिंतक भव

कोई भी आत्मा चाहे कितनी भी कमजोर हो, लेकिन आप शुभचिंतक आत्माओं के मुख से हर आत्मा के प्रति शुभ बोल निकलने चाहिए, दिलशिकस्त बनाने वाले नहीं। किसी को शिक्षा भी देनी हो तो पहले समर्थ बनाकर फिर शिक्षा दो। पहले धरनी पर हिम्मत और उत्साह का हल चलाओ फिर बीज डालो तो उस बीज का फल अवश्य निक-लेगा।

१८५. बाप की समीपता का अनुभव करने वाले कमल पुष्प समान न्यारे और प्यारे भव

जो कमल पुष्प के समान सदा न्यारा और प्यारा है वही बाप के समीप है। ऐसे समीपता का अनुभव करने वाले बच्चे सदा हर परिस्थिति में बापदादा की छत्रछाया का अनुभव करते हैं। बाप सेवाधारी बन सदा छत्रछाया के रूप में बच्चों की सेवा करते हैं। सिर्फ देह और देह की दुनिया से न्यारे और बाप के प्यारे बन याद करो तो बाप सेकेण्ड में सेवा के लिए हाजिर हो जायेंगे।

१८६. मनन शक्ति की खुराक द्वारा सदा शक्तिशाली भव

मनन-शक्ति दिव्य बुद्धि की खुराक है। इस खुराक को सदा खाते रहो तो बुद्धि शक्तिशाली बन जायेगी। रोज़ अमृतवेले अपने एक टाइटल को भी स्मृति में लाओ और मनन करते रहो तो मनन करने से सदा शक्तिशाली भव का वरदान मिल जायेगा। फिर शक्तिशाली बुद्धि के ऊपर माया का वार हो नहीं सकता अर्थात् कभी भी परवश हो नहीं सकते।

१८७. सारे विश्व में सुख की किरणें फैलाने वाले मास्टर ज्ञान-सूर्य भव

जैसे बाप ज्ञान का सागर, सुख का सागर है.., ऐसे स्वयं को भी ज्ञान-स्वरूप, सुख स्वरूप अनुभव करो। जब सुख स्वरूप बन जायेंगे तो

सुख स्वरूप आत्मा द्वारा सुख की किरणें सारे विश्व में स्वत: फैलेंगी। जैसे सूर्य की किरणें सारे विश्व में जाती हैं, ऐसे आप मास्टर ज्ञान सूर्य बच्चों के ज्ञान, सुख, आनंद की किरणें सर्व आत्माओं तक पहुंचेंगी।

१८८. माया की लेप वा आकर्षण से परे रहने के लिए आत्म-अभिमानी भव

आत्म-अभिमानी स्थिति निर्लेप स्थिति है, उसमें माया की लेप व आकर्षण आ नहीं सकती। निर्लेप अर्थात् न्यारा। इस अवस्था में माया किसी भी प्रकार से वार कर नहीं सकती। क्योंकि आत्म-अभिमानी रहने का अभ्यास कर्म करते भी साक्षी और साथीपन का अनुभव कराता है। ऐसी वरदानी आत्मा सब-कुछ देखते हुए, सम्पर्क में आते हुए सदा न्यारी और प्यारी रहती है।

१८९. संकल्प-शक्ति द्वारा हर कार्य में सफलता प्राप्त करने वाले सिद्धि-स्वरूप भव

जिन आत्माओं को, जिन स्थूल कार्यों को वा सम्बन्ध-सम्पर्क में आने वाली आत्माओं के संस्कारों को मुख द्वारा वा अन्य साधनों द्वारा परिवर्तन करते हुए भी सम्पूर्ण सफलता नहीं अनुभव करते, वे सब उम्मीदें संकल्प-शक्ति द्वारा सम्पूर्ण सफल हो जायेंगी। क्योंकि मुख के आवाज की गति से भी तेज गति से संकल्प-शक्ति काम करती है, इसे सिर्फ स्वच्छ बनाओ, ज़रा भी व्यर्थ की अस्वच्छता न हो तो सिद्धि-स्वरूप बन जायेंगे।

१९०. देह-भान को अर्पण करने और कराने वाले दिव्य दर्पण मूर्त भव

अब अपने रूहानी नयन वा रूहानी मूर्त को ऐसा दिव्य दर्पण बनाओ, जिस दर्पण से हर आत्मा बिना मेहनत के अपने आत्मिक स्वरूप को देखकर, 'अहो प्रभु' के गीत गाते देहभान से अर्पण हो जाए। अहो आपका भाग्य, ओहो मेरा भाग्य! इस भाग्य की अनुभूति से देह और देह के सम्बन्ध की स्मृति का त्याग सहज हो जायेगा। क्योंकि भाग्य के आगे त्याग करना सहज होता है।

१९१. त्याग और तपस्या द्वारा सदा विघ्न-विनाशक भव

सेवाधारी अर्थात् त्याग और तपस्या मूर्त। जहाँ त्याग और तपस्या है वहाँ भाग्य तो उनके आगे दासी के समान आता ही है और जहाँ त्याग-तपस्या का वातावरण है वहाँ सहज विघ्न-विनाशक भी बन जाते हैं। क्योंकि ब्राह्मण बनने के बाद सबसे बड़ा विघ्न–मान-शान वा सीट प्राप्त करने की सूक्ष्म कामना है। सेवाधारी समझने से विघ्नों की यह जड़ समाप्त हो जाती है।

१९२. सर्व को ब्लैसिंग देने वाली श्रेष्ठ शक्तिशाली आत्मा भव

साकार बाप की लास्ट कर्मातीत स्टेज की यही विशेषता देखी–जो बैलेन्स द्वारा सर्व को ब्लैसिंग देते रहे। तो फालो फादर। विशेष आत्माओं का पार्ट ही है–सर्व को ब्लैसिंग देना। चाहे नयनों से दो, चाहे मस्तक-मणि द्वारा–यही सहज और शक्तिशाली सेवा है। इसमें समय भी कम तो मेहनत भी कम लगती। सिर्फ शक्तिशाली बनो और आत्मिक स्मृति से सर्व को ब्लैसिंग दो।

१९३. बाह्यमुखता के खाते को समाप्त करने वाले बंधनमुक्त, योगयुक्त भव

बापदादा अब बच्चों के सभी पुराने बाह्यमुखता के खाते वा चौपड़े साफ देखना चाहते हैं। थोड़ा भी पुराना खाता संकल्प वा संस्कार रूप में रह न जाए। इसके लिए सदा बंधनमुक्त और योगयुक्त के वरदानी अर्थात् अन्तर्मुखी बनो। सेवा करो लेकिन बाह्यमुखता से अन्तर्मुखी बनकर सेवा करो। सेवा का नाम अच्छा बाला है लेकिन अब अन्तर्मुखता की सूरत द्वारा बाप का नाम बाला करो।

१९४. उत्साह द्वारा सदा उत्सव मनाने वाले सुहाग व भाग्य के तिलकधारी भव

ब्राह्मण जीवन में जिन बच्चों को सदा बाप से मिलन मनाने का, चढ़ती कला का, हर प्रकार की सेवा का सदा उत्साह और उमंग रहता है

उनके लिए भविष्य में हर दिन उत्सव बन जाता है। संगमयुग पर सभी बच्चों को देवों के देव का सुहाग और ईश्वरीय सन्तान के भाग्य का तिलक प्राप्त होता है। जो यहाँ सदा तिलकधारी रहते हैं, उनके लिए भविष्य में राज तिलक का हर जन्म में उत्सव होता है।

१९५. एकरस स्थिति का अनुभव करने वाले सच्चे ट्रस्टी भव

ट्रस्टीपन की स्मृति द्वारा एकरस स्थिति का अनुभव करो। क्योंकि जब गृहस्थीपन की स्मृति है तो अनेक रस हैं, मेरा-मेरा बहुत है। गृहस्थी अर्थात् अनेक रसों में भटकना और ट्रस्टी अर्थात् एकरस। ऐसे ट्रस्टी भव के वरदानी मेरे-पन की ममता को समाप्त कर सदा हल्के बन चढ़ती कला का अनुभव करते हैं, उनकी स्थिति एकरस सुख-स्वरूप हो जाती है।

१९६. याद की लगन द्वारा ब्राह्मण सो फरिश्ता स्वरूप भव

जैसे अग्नि में कोई भी चीज़ डालते हैं तो उसका नाम, रूप, गुण सब बदल जाता है, कच्ची मिट्टी को सांचे में ढालकर आग में डालते हैं तो ईंट बन जाती है, ऐसे जब बाप के याद की लगन अग्नि का रूप ले लेती है तो मानव बदलकर ब्राह्मण सो फरिश्ता बन जाते हैं अर्थात् अपनापन समाप्त हो जाता है। इसलिए इस याद को ही ज्वाला रूप कहा जाता है।

१९७. सर्व परिस्थितियों को सहज पार करने वाले फरिश्ता सो उड़ता पंछी भव

लौकिक या अलौकिक संबंध के आधार पर, अपने व दूसरों के संस्कार के आधार पर कोई भी परिस्थिति आती है तो उसे पार करने का सहज साधन है फरिश्ता बनो, उड़ता पंछी बनो, इससे परिस्थितियां नीचे और आप ऊपर हो जायेंगे। सिर्फ अपने अनादि संस्कारों को स्मृति में लाओ। ततत्वम् के वरदानी बनो–यही सहज पुरुषार्थ है।

१९८. सदा ऊंची तकदीर बनाने वाले श्रेष्ठ कर्मधारी भव

ऊंची तकदीर बनाने का साधन है ही श्रेष्ठ कर्म। जो बच्चे सदा श्रेष्ठ कर्म करते हैं उन्हें पद्मापद्म भाग्यशाली की तकदीर प्राप्त हो जाती है। लेकिन श्रेष्ठ कर्म का आधार श्रेष्ठ स्मृति है। जो श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ बाप की स्मृति में रहते हैं उनसे सदा ही श्रेष्ठ कर्म होता है, और श्रेष्ठ कर्म से अनेक जन्मों के लिए तकदीर की लम्बी लकीर खिंच जाती है।

१९९. सदा शक्तिशाली भोजन को हज़म करने वाले मास्टर सर्वशक्तिमान् भव

रोज़ की मुरली ताजा और शक्तिशाली भोजन है–जो भी शक्तियां चाहिए उन सबसे सम्पन्न यह रोज़ का भोजन मिलता है। जो इस शक्तिशाली भोजन को रोज़ ग्रहण करके (सुन करके) फिर मनन शक्ति द्वारा हज़म करते हैं वह कभी कमजोर नहीं हो सकते। इस भोजन का व्रत रखने की जरूरत नहीं। रोज़ भोजन खाओ और हजम करते चलो तो मास्टर सर्वशक्तिमान् बन जायेंगे।

२००. सर्व समस्याओं को समाप्त करने वाले सदा दयालु और कृपालु भव

आप सबके अनादि, आदि, अविनाशी संस्कार दातापन के हैं। लेकिन दाता वही बन सकता जो दयालु और कृपालु है। जिसमें दया भाव होता है वह सदा निराकारी, निर्विकारी और निरहंकारी होता है। ऐसी दया से भरपूर आत्मा दया भाव की अंचली देकर किसी की भी समस्याओं को समाप्त कर सकती है। क्योंकि दया वा कृपा की भावना ऑपोजीशन वाले को पोजीशन में टिका देती है।

२०१. जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव करने वाले सदा स्वतन्त्र, बंधनमुक्त भव

जो सदा उड़ता पंछी है, उन्हें नीचे की कोई भी आकर्षण अपनी ओर खींच नहीं सकती। चाहे कितना भी सुन्दर पिंजरा हो लेकिन है तो बन्धन। यह अलौकिक सम्बन्ध भी सोने का पिंजरा है, इसमें भी नहीं

फंसना। सदा स्वतन्त्र, बन्धनमुक्त के वरदानी बनो तो जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव होता रहेगा।

२०२. रूहानी एक्सरसाइज़ द्वारा माशूक समान डबल लाइट भव

स्थूल में भी हल्का होने का साधन एक्सरसाइज बताते हैं। यहाँ भी रूहानी एक्सरसाइज द्वारा डबल लाइट बनो। अभी-अभी निराकारी, अभी-अभी अव्यक्त फरिश्ता, अभी-अभी साकारी कर्मयोगी, अभी-अभी विश्व सेवाधारी। सेकेण्ड में स्वरूप बन जाना–यह है रूहानी एक्सरसाइज। इससे व्यर्थ के सब बोझ समाप्त हो जायेंगे और माशूक के समान डबल लाइट बन समानता और समीपता का अनुभव करते रहेंगे।

२०३. प्रकृति को दासी बनाने वाले सदा प्रकृतिजीत भव

प्रकृति अर्थात् नेचर का सुख लेने के लिए आपकी जो ऑरिजनल नेचर है उसे अपनाओ। नेचरल नेचर अर्थात् अनादि संस्कार जब स्वरूप में आयेंगे तब बिना मेहनत के नेचरल नेचर द्वारा सर्व प्राप्तियां नेचरल हो जायेंगी। यह प्रकृति दासी हो जायेगी। सूर्य की किरणें भी भिन्न-भिन्न प्रकार की कमाल दिखायेंगी। वहाँ गैस, कोयला, लकड़ी जलाने की आवश्यकता नहीं रहेगी, इस मेहनत से छूट जायेंगे। लेकिन अभी प्रकृतिजीत बनो।

२०४. सर्व को आगे बढ़ाने की भावना द्वारा ब्रह्मा बाप समान भव

जैसे ब्रह्मा बाप ने शुभचिंतक की भावना से पहले आप कहा। बच्चों को हर बात में अपने से आगे रखा। ऐसे फालो फादर करो। मैं आगे बढ़ूँ, नहीं, दूसरों को आगे बढ़ाकर आगे बढ़ो। जब यह भावना हर एक में आ जायेगी तब ब्रह्मा बाप की फोटोस्टेट कापी हो जायेंगे। फिर आपका हर कर्म और आपकी स्थिति ब्रह्मा बाप का स्पष्ट साक्षात्कार करायेगी।

२०५. तपस्या और सेवा के आसन द्वारा राज़ सिंहासनधारी भव

जो यहाँ सदा तपस्या और सेवा के आसन पर हैं, वही सदा सिंहासन-धारी हैं। जितना यहाँ सेवा में सदा सहयोगी उतना वहाँ राज्य के सदा साथी। जो यहाँ हर कर्म में बापदादा की याद में साथी हैं वे वहाँ हर कर्म में बचपन से लेकर राज्य करने के हर कर्म में साथी हैं। जो सदा समीप, सदा साथी, सहयोगी सदा तपस्या और सेवा के आसन पर रहते हैं वही वहाँ भी सदा साथ रहते हैं।

२०६. सेकेण्ड में संस्कार मिटाने वा मिलाने वाले सदा एवररेडी भव

जैसे स्थूल सेवाओं में एवररेडी रहते हो, ऐसे मन्सा से भी जो संकल्प धारण करने चाहो उसमें भी सदा एवररेडी बनो। जो सोचो वही करो, उसी समय करो। संस्कार-परिवर्तन में, रूहानी सम्बन्ध और सम्पर्क निभाने में भी एवररेडी। बाप से संस्कार मिलाने वा आपस में श्रेष्ठ संस्कार मिलाने की रास करने में भी एवररेडी बनो।

२०७. वायुमण्डल, वातावरण को परिवर्तन करने वाले मास्टर ज्ञान-सूर्य भव

मास्टर ज्ञान-सूर्य बन वातावरण, वायुमण्डल को परिवर्तन करने वाले विघ्न विनाशक बनो। किसी भी परिस्थिति में विघ्न-विनाशक तभी बन सकेंगे जब नालेजफुल अर्थात् समझदार होकर रहेंगे। अगर कोई विघ्न-रूप बनता है तो आप विघ्न-विनाशक बन जाओ। ऐसा वातावरण है, ऐसी परिस्थिति है-इसलिए यह करना पड़ा -- यह बोल विघ्न-विनाशक, मास्टर ज्ञान-सूर्य बच्चों के नहीं हो सकते।

२०८. सेवा द्वारा डबल कमाई जमा करने वाले निर्विघ्न, अखण्ड सेवाधारी भव

जो मन्सा और कर्मणा साथ-साथ सेवा करते हैं, वे डबल कमाई जमा करते हैं। लेकिन सेवा के बीच में वायुमण्डल का, संग का, आलस्य का..ऐसे भिन्न-भिन्न प्रकार के विघ्न न आयें, सदा निर्विघ्न सेवा होती रहे। इसी का ही महत्व है। ऐसे अखण्ड सेवाधारी कभी किसी के व्यर्थ चक्र में नहीं आते हैं इसलिए उनकी सेवा सफल होती है और माला-

माल बनने की लाटरी मिल जाती है।

२०९. इस अलौकिक जीवन में सदा अलौकिक कर्म करने वाले श्रेष्ठ चरित्रवान भव

जैसे ब्रह्मा बाप का हर कर्म चरित्र के रूप में वर्णन करते हो, क्योंकि उनका हर कर्म श्रेष्ठ है। ऐसे आप भी अलौकिक बाप के बच्चे अलौकिक जीवन वाले हो। अलौकिक बाप, अलौकिक बच्चे और अलौकिक कर्म। अलौकिक कर्म को ही चरित्र कहते हैं। तो अमृतवेले से रात तक हर कर्म अलौकिक हो, साधारण न हो, तब श्रेष्ठ चरित्रवान गाये जायेंगे।

२१०. सेवा में खुदाई जादू का अनुभव करने वाले खुदाई खिदमतगार भव

सेवा के क्षेत्र में जो भिन्न-भिन्न प्रकार के स्व प्रति वा सेवा प्रति विघ्न आते हैं – उसका कारण सिर्फ सेवाधारी समझते हो, लेकिन ईश्वरीय सेवाधारी अर्थात् खुदाई खिदमगार हूँ – इस वरदान को स्मृति में रख सेवा करो तो सेवा में स्वत: खुदाई जादू भर जायेगा। खुदा को खिदमत से जुदा न करो तो सहज सफलतामूर्त बन जायेंगे।

२११. करन-करावनहार की स्मृति से विघ्नों के बीज को समाप्त करने वाली समर्थ आत्मा भव

सेवा के क्षेत्र में विघ्न आने के दो दरवाजे हैं – १. अभिमान २. अपमान। मैंने किया -- यह अभिमान या मेरे को क्यों नहीं कहा गया, क्यों नहीं आगे रखा गया -- यह मेरा अपमान किया गया। तो यह दो बातें ही विघ्नों के रूप में आती हैं। लेकिन करन-करावनहार बाप है। मैंने किया, नहीं, खुदा ने मेरे से कराया -- तो यह स्मृति का वरदान समर्थ बना देता है और विघ्नों का बीज समाप्त हो जाता है।

२१२. युद्ध के संस्कार समाप्त कर राज्य के संस्कार धारण करने वाले श्रेष्ठ प्रालब्धी भव

अब युद्ध के संस्कारों को समाप्त कर दिलतख्तनशीन बनो और

राज्य के संस्कार धारण करो तब बहुतकाल के भविष्य प्रालब्धी बनेंगे। अगर अन्त तक योद्धेपन की जीवन होगी तो चन्द्रवंशी बनना पड़ेगा। बहुत समय के लिए राज्य-भाग्य की प्रालब्ध चाहिए तो संगमयुग के प्रालब्धी बनो अर्थात् अभी-अभी पुरुषार्थी और अभी-अभी प्रालब्धी। मेहनत को मुहब्बत में बदलकर ताजा प्रत्यक्षफल खाओ।

२१३. रूहानी नशे में रहने वाले सर्व प्राप्ति स्वरूप भव

रूहानी नशा अर्थात् चलते-फिरते सदा आत्मा को देखना वा आत्म-अभिमानी रहना–इस रूहानी नशे में सर्व प्राप्तियों का सहज अनुभव होता है। जैसे स्थूल नशे वाले अपने को प्राप्तिवान समझते हैं, वैसे इस रूहानी नशे में रहने वाले सर्व प्राप्ति स्वरूप बन जाते हैं। इस नशे में रहने से सर्व प्रकार के दु:ख, अशान्ति की विदाई हो जाती है।

२१४. आलराउन्ड पार्ट बजाने वाले सदा उड़ता पंछी भव

जैसे बाप आलराउन्ड पार्टधारी हैं, सखा भी बन सकते तो बाप भी बन सकते, ऐसे उड़ती कला के वरदान वाले बच्चे जिस समय जो सेवा की आवश्यकता होगी उसमें सम्पन्न पार्ट बजायेंगे। वे ऐसे निर्बन्धन होंगे जो जहाँ भी सेवा होगी वहाँ पहुंच जायेंगे और हर प्रकार की सेवा में सफलतामूर्त बन जायेंगे। उन्हें ही कहा जाता है आलराउन्ड उड़ता पछी।

२१५. विशेषता रूपी बीज से सन्तुष्टता का फल प्राप्त करने वाले सदा सन्तोषी भव

संगमयुग विशेष युग है, इसमें पार्ट बजाने वाली आत्मायें विशेषता सम्पन्न हैं, लेकिन उस विशेषता को सेवा में लगायेंगे तो वह विशेषता विस्तार को पाती जायेगी। विशेषता के बीज का सबसे श्रेष्ठ फल है''सन्तुष्टता''। सन्तुष्ट रहना और सर्व को सन्तुष्ट रखना–यही है सन्तोषी भव का वरदान प्राप्त करना। इसलिए विशेषता के बीज को सर्व शक्तियों के जल से सींचो तो फलदायक हो जायेंगे।

२१६. विशेषता की दृष्टि द्वारा विश्व-परिवर्तन के कार्य में सफलतामूर्त भव

ब्राह्मण परिवार विशेष आत्माओं का परिवार है, इसलिए हर एक की विशेषता देखने वाला चश्मा पहन लो। अर्थात् विशेषता देखने की दृष्टि धारण करो, दूसरा कुछ भी दिखाई न दे, सर्व की विशेषतायें ही देखो और उन्हें कार्य में लगाओ। विशेष युग की विशेष आत्मा समझ विशेष संकल्प, बोल और कर्म करो तो विशेष समय मिल जायेगा और विश्व परिवर्तन के कार्य में सफलतामूर्त बन जायेंगे।

२१७. शान्ति की शक्ति का महादान देने वाले शान्ति देवा भव

विश्व में सबसे प्यारी और शक्तिशाली वस्तु शान्ति है। आप बच्चों का स्वधर्म शान्ति है। इसलिए कैसी भी अशान्त आत्मा को शान्त-स्वरूप में स्थित होकर शान्ति की ऐसी किरणें दो जो अशान्त भी शान्त हो जाए। जहाँ शान्ति होगी वहाँ सब बातें स्वत: होंगी। जैसे बाप की महिमा है शान्ति-दाता, वैसे आप बच्चे भी शान्ति देवा हो। तो स्वयं भी शान्त रहना और सबको शान्ति देना–यही सबसे बड़े ते बड़ा महादान है।

२१८. विश्व को लाइट देने वाले सच्चे-सच्चे रुहानी लाइट-हाउस भव

लाइट-हाउस अर्थात् ज्योति का घर–जिसमें किसी भी प्रकार के अज्ञान का अंधकार आ नहीं सकता। इतनी अथाह ज्योति अर्थात् लाइट जमा हो जो सारे विश्व को लाइट मिलती रहे। लाइट-हाउस बनकर विश्व को लाइट देना–यही ब्राह्मणों का आक्यूपेशन है। सच्चे रूहानी सेवा-धारी महादानी अर्थात् लाइट हाउस होंगे। दाता के बच्चे दाता होंगे। जितना दूसरों को देंगे उतना स्वत: बढ़ता जायेगा।

२१९. सोचने और करने को समान बनाने वाले तुरन्त दानी महापुण्य आत्मा भव

अब सोचने और करने को समान बनाओ अर्थात् इसके बीच की

मार्जिन को समाप्त करो–यही है तुरन्त दान महापुण्य। अगर सोचते बहुत अच्छा हो और करते कुछ समय के बाद हो तो उस समय संकल्प में जो तीव्रता, उमंग-उल्लास, उत्साह होता है वह समय पड़ने से परसेन्टेज कम हो जाती है, इसलिए मेहनत करनी पड़ती है। तो तुरन्त दान महापुण्य के वरदान द्वारा अब सम्पन्न बनो।

२२०. हर संकल्प और कर्म पर अटेन्शन रखने वाले श्रेष्ठ हीरो पार्टधारी भव

सदा यही स्मृति रहे कि हर कदम, हर सेकेण्ड सारे विश्व के आगे स्टेज पर हैं। अगर आराम भी करते तो स्टेज पर सोने का पार्ट बजाते हैं, सबकी नज़र होती है -- कैसे सोये हुए हैं। अमृतवेले से रात तक स्वयं को सेवा की स्टेज पर समझकर चलने से हर संकल्प और कर्म पर नेचरल अटेन्शन रहेगा और हीरो पार्टधारी बन जायेंगे।

२२१. मायाजीत बनने का सहज साधन–स्वदर्शन चक्रधारी भव

जो बाप के समान स्वदर्शन चक्रधारी बच्चे हैं उनसे कभी भी साधारण कर्म नहीं हो सकते। जैसे बाप के हर कर्म चरित्र के रूप में गाये जाते हैं, ऐसे उनका हर कर्म चरित्र के समान होगा। इसलिए स्वदर्शन चक्रधारी स्वत: मायाजीत बन जाते हैं और जो मायाजीत हैं उन्हें हर कर्म में सफलता प्राप्त होती है। ऐसे सफलतामूर्त हर कदम में पद्मा-पद्मपति होते हैं।

२२२. अंधकार में रोशनी करने वाले अखण्ड ज्योति के समान सदा जागती ज्योति भव

जैसे बाप सदा जागती ज्योति, अखण्ड ज्योति, अमर ज्योति है, ऐसे आप बच्चे भी सदा जागती ज्योति बनो। कितने भी तूफान आयें लेकिन सदा एकरस, अखण्ड ज्योति के समान जगे हुए दीपक, ऐसे दीपकों को विश्व भी नमन करती है, बाप भी ऐसे दीपकों के साथ रहते हैं। वे अंधकार को भी रोशन करने वाले होते हैं।

२२३. बिन्दु की मात्रा के महत्व को जानने वाले सहज योगी भव

बापदादा सिर्फ बिन्दु का ही हिसाब बताते हैं, स्वयं भी बिन्दु रूप बनो, याद भी बिन्दु को करो और ड्रामा के हर दृश्य को जानने, करने के बाद बिन्दु की मात्रा लगा दो। एक बिन्दु की मात्रा में आप, बाप और रचना सब आ जाता है। सबसे सरल मात्रा बिन्दु है। बीज, बिन्दु में सारा वृक्ष समाया हुआ है। तो इसी बिन्दु की मात्रा के महत्व को जानकर सहज योगी बनो।

२२४. रूहानी नशे में रहने वाले सदा नम्रचित, सुखदाता भव

रुहानी नशा जितना ऊंचा उतना नम्र बनायेगा। सच्चे रूहानी नशे में रहने वाले सदा नम्रचित होंगे। नम्रचित आत्मा ही सुखदाता बन सकती है। सेवाधारी की विशेषता है–झुकना अर्थात् नम्रचित रहना। स्वयं झुकने वाले ही औरों को भी झुका सकते हैं। लेकिन झुक वही सकता जिसमें रूहानियत है। चलते-फिरते, बोलते..हर कर्म में रूहानियत दिखाई दे, तब नम्रचित, सुखदाता बन सकेंगे।

२२५. माया के रॉयल रूप को परखने वाले शान्ति की शक्ति के अनुभवी भव

परमार्थी बच्चों के सामने माया रॉयल ईश्वरीय रूप रचकर के आती है, जिसको परखने के लिए एकाग्रता की शक्ति चाहिए और एकाग्रता की शक्ति साइलेन्स की शक्ति से ही प्राप्त होती है। तो अब शान्ति की शक्ति के अनुभवी बनो अर्थात् एकाग्रता द्वारा परखने वा निर्णय करने की शक्ति प्राप्त करो तो व्यवहार वा परमार्थ की सर्व समस्याओं का सहज समाधान मिल जायेगा और मायाजीत बन जायेंगे।

२२६. साक्षात्कारमूर्त बनने के लिए श्रेष्ठ स्थिति के वाहनधारी वा अलंकारधारी भव

महावीर बच्चों का वाहन है श्रेष्ठ स्थिति और अलंकार हैं सर्व शक्तियां। जो सदा ऐसे वाहनधारी और अलंकारधारी बनकर रहते हैं वह स्वत: साक्षात्कारमूर्त बन जाते हैं। ऐसे साक्षात्कारमूर्त बच्चे सदा

उड़ती कला में उड़ते रहते हैं। उनके लिए सर्व परिस्थितियां खेल वा खिलौने के समान अनुभव होती हैं। वे साक्षात् बाप समान बन सबको बाप का साक्षात्कार कराते रहते हैं।

२२७. सम्पूर्ण स्टेज को वरने वाले ब्रह्मा बाप के समीप साथी भव

अभी आप पुरुषार्थी बच्चों को अपनी सम्पूर्ण स्टेज को स्वयं वरना है अर्थात् सदा उमंग-उत्साह की वरमाला पहननी है। जब आप सम्पूर्ण स्टेज को पायेंगे तब ही सम्पूर्ण ब्रह्मा और ब्राह्मण साथ-साथ ब्रह्म घर में जा सकेंगे और फिर राज्य-अधिकारी बन सकेंगे। इसके लिए व्यक्त में होते अव्यक्त रूप की अनुभूति कराओ। सामने आने वाली आत्मायें व्यक्त भाव को भूल अव्यक्त स्थिति का अनुभव करें।

२२८. अलबेलेपन के नाज़-नखरे छोड़ सहनशक्ति के कवचधारी भव

कई बच्चे ऊंचे ते ऊंचे बाप के ज्यादा लाड़ले होने के कारण नाज़ुक बन जाते हैं और नाजुक होने के कारण नाज़-नखरे बहुत करते हैं। फिर बाप की बातें बाप को ही सुनाने लगते हैं। इसका कारण सहन-शक्ति की मजबूती कम है। इसलिए इस वरदान को स्मृति में रख सहनशक्ति के कवच को धारण करो। यही सर्व विघ्नों से बचने का कवच है। इस कवच को पहनने से अलबेलेपन के सब नाज़-नखरे समाप्त हो जायेंगे।

२२९. ईश्वरीय कमाई जमा करने का राज़ जानने वाले राज़युक्त, युक्तियुक्त अनासक्त भव

ईश्वरीय कमाई के जमा का राज़ जानने वाले बच्चे साधारण खाते, साधारण चलते, साधारण रहते हैं। पहले अलौकिक सेवा का विशेष हिस्सा निकालते हैं। वे अपने सर्व खजानों को, समय, शक्ति वा स्थूल धन को लौकिक में एकॉनामी कर अलौकिक कार्य में फ्राख़दिली से लगाते हैं। ऐसे बच्चों को राज़युक्त, युक्तियुक्त, अनासक्त भव का वरदान स्वत: मिल जाता है।

२३०. त्याग का भी त्याग करने वाले महात्यागी श्रेष्ठ भाग्यवान आत्मा भव

गुप्त महादान की विशेषता है -- त्याग का भी त्याग कर महात्यागी बनना। क्योंकि श्रेष्ठ कर्म का प्रत्यक्ष फल–सर्व द्वारा महिमा होती है। सेवाधारी को श्रेष्ठ गायन की सीट मिलती है, मान, मर्तबे की सीट मिलती है, यह सिद्धि उन्हें अवश्य प्राप्त होती है। परन्तु यह सिद्धियां रास्ते की चट्टियां हैं, फाइनल मंजिल नहीं है, इसलिए इसका भी त्याग कर भाग्यवान बनो।

२३१. सदा सेवा के उमंग-उत्साह में रहने वाले सदा बेहद सेवाधारी भव

सदा यही लक्ष्य रहे कि हमारा हर सेकण्ड, हर संकल्प दूसरों की सेवा के लिए है। जीना ही सेवा है, चलना ही सेवा है, बोलना, सोचना सब सेवा के लिए है। हर नस में सेवा का उमंग-उत्साह भरा हुआ हो अर्थात् हर संकल्प, हर सेकण्ड सेवा होती रहे। गुडनाइट करो तो भी सेवा, गुडमार्निंग करो तो भी सेवा, स्वप्न में भी सेवा चलती रहे, तब कहेंगे सच्चे सेवाधारी।

२३२. सहज योगी भव के वरदान को सदा कायम रखने के लिए सर्व के सहयोगी भव

सेवा में सर्व के सहयोगी बनना यही सहज योग की विधि है। अमृतवेले बाप से मिलन मनाकर बाप समान मास्टर बीजरूप बन सर्व आत्माओं को अपनी प्राप्त हुई शक्तियों के द्वारा आत्माओं की वृत्ति और वायुमण्डल को परिवर्तन करने में सहयोगी बनो। फिर सारे दिन में कोई भी कार्य करते यही लक्ष्य हो कि अपनी शुभ भावना और श्रेष्ठ कामना से सबको सहयोग देना है। तो इस विधि वा वरदान से सदा सहज योगी बन जायेंगे।

२३३. सूक्ष्म शक्तियों द्वारा स्थापना के कार्य में सफल होने वाले मास्टर रचयिता भव

आप पूर्वज आत्माओं की अलौकिकता सूक्ष्म शक्ति है। साधनों की वा

वाणी की शक्ति तो सबके पास है लेकिन श्रेष्ठ संकल्प की शक्ति, शुभ वृत्ति की शक्ति, स्नेह और सहयोग की शक्ति–यह आप मास्टर रचयिता बच्चों की विशेषता है। इसी विशेषता वा वरदान से अपनी वंशावली के प्राप्ति की आशाओं के दीपक जगाए उन्हें यथार्थ मंजिल तक पहुंचाओ।

२३४. अपने हर कर्म, हर बोल द्वारा शिक्षा देने वाले चलते-फिरते मास्टर शिक्षक भव

जैसे आजकल चलती-फिरती लाइब्रेरी होती है, ऐसे आप चलते-फिरते मास्टर शिक्षक हो। आप किसी को सिखाओ या न सिखाओ लेकिन आपका हर कर्म हरेक आत्मा को शिक्षा देता रहता है। आप अकेले नहीं, सदा स्टूडेन्ट्स के सामने हो। सदा स्टडी कर भी रहे हो और करा भी रहे हो। इसी स्मृति से अलबेलापन स्वत:समाप्त हो जायेगा।

२३५. सर्व को अच्छा बनने की प्रेरणा देने वाले चैतन्य लाइट-हाउस व ज्वाला - स्वरूप भव

अभी सम्पर्क में आने वाली आत्मायें अच्छा-अच्छा कहती हैं लेकिन उन्हें अच्छा बनने की प्रेरणा तब मिलेगी जब आप एक-एक चैतन्य लाइट-हाउस अर्थात् ज्वाला-स्वरूप बनेंगे। सेवाधारी हो, स्नेही हो, एक बल एक भरोसे वाले हो–लेकिन हर एक से अलौकिकता का अनुभव हो अर्थात् मास्टर सर्वशक्तिमान् की स्टेज, स्टेज पर आ जाए तो सब आपके आगे परवाने के समान चक्र लगाने लग जायेंगे।

२३६. प्रसन्नता की प्राप्ति के प्रसाद द्वारा सदा प्रसन्न भव

यज्ञ-सेवा करने से शक्तियों के, सुख वा शान्ति के जो भी खजाने हैं उन सर्व खजानों की अनुभूति होती है, यह अनुभूति ही यज्ञ-प्रसाद है। और सबसे बड़ा खजाना वा प्रसाद है प्रसन्नता की प्राप्ति। जो यहाँ प्रसन्न भव के वरदानी बन जाते वे किसी भी प्रकार के वातावरण में प्रसन्न रह सकते हैं। उन्हें कोई भी वातावरण अपनी तरफ खींच नहीं

सकता।

२३७. अपने शक्तिशाली स्वरूप द्वारा सर्व का अटेन्शन खिंचवाने वाले सत्य तीर्थ भव

जब आप आधारमूर्त आत्मायें अपने शक्तिशाली स्वरूप में स्थित हो जायेंगी तो दूर बैठे भी अनेकों के टेन्शन को समाप्त करने वाली, सहज अटेन्शन खिंचवाने वाली सत्य तीर्थ बन जायेंगी। फिर स्वत: ही खिंचते-खिंचते, ढूंढ़ते-ढूंढ़ते आपके पास सब पहुंच जायेंगे। इसके लिए पहले स्वयं समर्थ-स्वरूप बनो तब सत्य तीर्थ बन अनेक आत्माओं को मुक्ति वा स्वीट होम की प्राप्ति करा सकेंगे।

२३८. स्टार्ट और स्टाप करने की शक्ति द्वारा कर्मेन्द्रियों के राज्य अधिकारी भव

जब स्टार्ट करने और स्टॉप करने की दोनों ही शक्तियां समान रूप में होंगी तब कहेंगे कर्मेन्द्रियों के राज्य अधिकारी। ऐसे नहीं कि आप कहो स्टॉप और वह स्टार्ट हो जाए। हर कर्मेन्द्रिय की शक्ति को आंख से इशारा करो और इशारे से ही जैसे चाहो वैसे चला लो–अर्थात् ऐसी जब कन्ट्रोलिंग और रूलिंग पावर हो तब कर्मेन्द्रिय जीत, प्रकृतिजीत बन कर्मातीत स्थिति के आसनधारी बन सकेंगे।

२३९. प्रीत की रीति निभाने वाले शमा के दिलपसन्द परवाने भव

शमा और परवानों की प्रीत अविनाशी है। प्रीत की रीति निभाना अर्थात् सब कुछ पाना। प्रीत की रीति भी सिर्फ दो बातों की है–एक गीत गाना और दूसरा नाचना। अमृतवेले से बाप के वा अपनी श्रेष्ठ जीवन की महिमा के, सर्व प्राप्तियों के गीत गाओ और खुशियों में नाचते-नाचते हर कर्म करो तो शमा के दिलपसन्द परवाने बन जायेंगे।

२४०. सेवा में वृद्धि करने के लिए निमित्त और नम्रचित भव

सेवा करते कभी यह भान न आये कि मैंने किया, मैं टीचर हूँ..यह मैं का भाव सर्विस में रुकती कला का आधार है। निमित्त के बजाय मैं-पन आने से सर्विस ढीली हो जाती है, फिर खुशी और नशा भी गुम हो

जाता है। इसलिए निमित्त हूँ और नम्रचित हूँ–यह दो वरदान स्मृति में रखकर चलते चलो तो सेवा में सहज वृद्धि होती रहेगी।

२४१. क्रोध के सूक्ष्म अंश -- घृणा को भी समाप्त करने वाले शुभ भावना वा श्रेष्ठ कामना से सम्पन्न भव

किसी के स्वभाव को देख उससे किनारा करना -- यह भी घृणा अर्थात् क्रोध का अंश है। यह ऐसा है, यह तो बदलना ही नहीं है–किसी को भी ऐसा फाइनल सर्टीफिकेट देकर श्रापित नहीं करो। लेकिन शुभ भावना और श्रेष्ठ कामना के वरदानी बन इस अंश को भी विदाई दो। विशेष बनो और बनाओ। खुद को भी बचाओ और दूसरे को भी बचाओ।

२४२. सी फादर, फालो फादर के पाठ द्वारा अचल, अडोल, एकरस भव

संगठन में भिन्न-भिन्न प्रकार के संस्कार-स्वभाव तो होंगे ही, लेकिन सी फादर, फालो फादर करने वाले सदा बापदादा के समीप रहते हैं। जो सी फादर के साथ सी सिस्टर-ब्रदर कर लेते वह समीप के बजाय दूर हो जाते हैं। इसलिए कहाँ भी रहते यह पाठ पक्का करो ''सी फादर, फालो फादर'' तो कभी किसी भी परिस्थिति में डगमग नहीं होंगे, अचल-अडोल और एकरस बन जायेंगे।

२४३. संकल्पों की गति को धैर्यवत बनाने वाले सिद्धि-स्वरूप भव

इस मरजीवे जन्म का खजाना वा विशेष एनर्जी है ही संकल्प, मरजीवे जन्म का आधार शुद्ध संकल्प हैं। इसलिए वही संकल्प चले जो आवश्यक हो। संकल्प रूपी बीज सफलता के फल से सम्पन्न हो अर्थात् समर्थ हो। समर्थ की संख्या स्वत: कम होगी लेकिन शक्ति-शाली होगी और व्यर्थ की संख्या ज्यादा होगी, प्राप्ति कुछ नहीं होगी। इसलिए संकल्पों की गति को धैर्यवत बनाओ, कम सोचो तो सिद्धि-स्वरूप बन जायेंगे।

२४४. सदा मुहब्बत में लवलीन रहने वाले सहज अभ्यासी भव

अब मेहनत करने के, युद्ध करने के संस्कार समाप्त करो। बापदादा को बच्चों की मेहनत के संस्कार देख तरस पड़ता है -- अभी तक भी मेहनत करेंगे तो फल कब खायेंगे। लेकिन इसका मतलब अलबेला नहीं बनना, मुहब्बत में सदा मगन रहना, लवलीन रहना। मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ–इस स्मृति से संकल्प करते ही अनुभूति होगी। सहज अभ्यासी बन जायेंगे।

२४५. हर गुण का गहराई व नवीनता से अनुभव करने वाले सदा एकान्तवासी भव

कोई भी नया अनुभव करने के लिए एकान्त की आवश्यकता है। एकान्तवासी बनना अर्थात् सदा स्थूल एकान्त के साथ-साथ एक के अन्त में रहना। तो हर गुण के अनुभूति की गहराई में जाओ, रोज़ नया अनुभव करो। रोज़ कोई नई पाइंट निकालो। नवीनता का अनुभव करने से सुस्ती भाग जायेगी। वैराइटी होने से रमणीकता में आ जायेंगे। कभी बोर नहीं होंगे।

२४६. विश्व-कल्याणकारी स्टेज पर स्थित हो बाप समान विश्व परिक्रमा लगाने वाले चक्रवर्ती भव

बाप के साथ विश्व का चक्र लगाने के लिए विश्व-कल्याणकारी की बेहद की स्टेज, बीजरूप स्टेज में स्थित होना पड़े। जब उस स्टेज में स्थित होंगे तो ऐसा अनुभव करेंगे जैसे चित्र दिखाते हैं -- ग्लोब के ऊपर श्रीकृष्ण बैठा है; ऐसे विश्व के ग्लोब पर बैठा हूँ..इससे आटोमेटिकली विश्व का चक्र लग जायेगा। विश्व ऐसे दिखाई देगा जैसे छोटा बाल (गेंद) है।

२४७. सेवा के साथ-साथ स्व पर अटेन्शन देने वाले अमरनाथ के बच्चे सदा अमर भव

संगमयुग पर अमर बाप द्वारा विशेष 'अमर भव' का वरदान सभी बच्चों को प्राप्त होता है। लेकिन सदा अमर वही रहते हैं जो (१) सेवा

के साथ-साथ स्व का फुल अटेन्शन रखते हैं, (२)बापदादा वा निमित्त बनी हुई आत्माओं के आगे बिल्कुल क्लीयर(स्पष्ट) रहते हैं, (३) अपने संस्कारों को मोल्ड कर लेते हैं, किसी के संस्कारों से टक्कर नहीं खाते।

२४८. स्टेज पर स्थित होने के लिए सर्व प्राप्तियों से सम्पन्न भव

लास्ट समय में वरदान देने का ही पार्ट है क्योंकि लास्ट में वही आत्मायें आयेंगी जो सब बातों में बिल्कुल कमजोर होंगी। उन्हें वरदान देने के लिए सर्व प्राप्तियों में सम्पन्नता चाहिए। अगर स्वयं प्रति कुछ रहा हुआ होगा तो दूसरों को देखते भी स्वयं तरफ अटेन्शन जायेगा और स्वयं को भरने में समय लगेगा। इसलिए स्वयं सर्व प्राप्तियों से सम्पन्न बनो तब वरदानी बन सकेंगे।

२४९. हर शक्ति को कर्म द्वारा प्रत्यक्ष दिखाने वाले श्रेष्ठ कर्म कर्ता भव

साकार वतन की विशेषता कर्म है, यहाँ कर्म श्रेष्ठ हैं तो प्रालब्ध श्रेष्ठ है। कर्म ही आत्मा का दर्शन कराने वाले दर्पण हैं। कर्म द्वारा अपने शक्ति-स्वरूप को जान सकते हो। जैसा समय वैसी शक्ति कार्य में लगाना -- यही कर्म की श्रेष्ठता है। विश्व की सर्व आत्माओं के आगे कर्म ही आपकी पहचान करायेंगे। तो श्रेष्ठ कर्म कर्ता बन शक्ति-स्वरूप का दर्शन अथवा साक्षात्कार कराओ।

२५०. मात पिता के स्वरूप से अपनी प्रजा की पालना करने वाले राज्य सत्ता अधिकारी भव

राज्य-सत्ता अधिकारी अर्थात् अथार्टी स्वरूप, सर्व खजानों से भरपूर, मात-पिता के समान पालना की विशेषता वाले। तो जो भी आत्मायें सम्बन्ध-सम्पर्क में आयें, वे अनुभव करें कि यही श्रेष्ठ आत्मायें हमारे पूर्वज हैं। इन्हीं आत्माओं द्वारा जीवन का सच्चा प्रेम और जीवन की उन्नति का साधन प्राप्त हो सकता है। तो राज्य-सत्ता के वरदानी बन ऐसी रूहानी पालना दो जिससे वे सदा प्रेम के सागर बाप द्वारा सच्चे अथाह प्रेम की अनुभूति करते रहें।

२५१. ब्राह्मण कुल की धारणाओं में सम्पन्न धर्म-सत्ता-धारी भव

धर्म-सत्ता अर्थात् हर धारणा की शक्ति स्वयं में अनुभव करने वाले। ब्राह्मण कुल की मुख्य धारणा है पवित्रता। तो पवित्रता की शक्ति से पतित दुनिया को परिवर्तन करने वाले, विकारों की अग्नि में जलती हुई आत्माओं को शीतल बनाने वाले, आत्माओं को अनेक जन्मों के विकर्मों के बंधन से छुड़ाने वाले। ऐसे पवित्रता वा हर गुण की धारणा आत्मा में समाई हुई हो तब कहेंगे धर्म- सत्ता-धारी आत्मा।

२५२. अपनी निर्माण स्थिति द्वारा हर गुण को प्रत्यक्ष करने वाले फल सम्पन्न भव

हर कर्म में निर्माण बनना–यह आप महान आत्माओं की महानता है। जितना अन्दर में सर्व गुणों की धारणा होगी अर्थात् गुणों रूपी फल से सम्पन्न होंगे उतना ही निर्माण बनकर अपनी निर्माण स्थिति द्वारा हर गुण को प्रत्यक्ष कर सकेंगे। निर्माण बनने से सेवा में भी सदा हल्के रहेंगे, मान की इच्छा नहीं रहेगी। निर्माणता ही राज्य वा धर्म-सत्ता अधिकारी आत्माओं की विशेषता है।

२५३. मन्सा पवित्रता द्वारा सर्व उलझनों से मुक्त, सुख-शान्ति सम्पन्न सदा हर्षित भव

पवित्रता सुख-शान्ति की जननी है। मन्सा संकल्प में भी पवित्रता है तो उन्हें सुख शान्ति सम्पन्न, सदा हर्षित रहने का वरदान प्राप्त हो जाता है। क्यों-क्या की उलझन से मुक्त हो जाते हैं। सदा सुख-शान्ति की शय्या पर आराम से विराजमान रहते हैं। उनके लिए विकार भी छत्र-छाया बन सेवा के निमित्त बन जाते हैं। उनके अन्दर क्यों, क्या और कैसे की उलझन नहीं होती है।

२५४. विस्तार में आते सार स्वरूप में स्थित साक्षात् आत्म-स्वरूप के अनुभवी मूर्त भव

जहाँ साक्षात् स्वरूप है वहाँ साक्षात्कार की आवश्यकता नहीं, जो साक्षात् आत्मा-स्वरूप की अनुभूति करने वाले वरदानी बच्चे हैं वे अथार्टी व निश्चय से कहते हैं कि मैंने आत्मा को देखा तो क्या अनुभव किया है। वे चलते-फिरते अपने ज्योति-स्वरूप का अनुभव करते हैं।

लेकिन इसके लिए सार-स्वरूप में स्थित रहने का अभ्यास हो। सेवा के विस्तार में सार रूपी बीज की अनुभूति भूले नहीं।

२५५. एक धक से बाप पर बलि चढ़ने वाले मरजीवा भव

मरजीवा भव का वरदान उन्हीं बच्चों को प्राप्त होता है जो बाप पर एक धक से बलि चढ़ते हैं। सोचा, संकल्प किया–मेरा बाबा और मैं बाबा का तो झाटकू अर्थात् मरजीवा बनें। भक्ति-मार्ग में भी जड़ चित्र को प्रसाद वही चढ़ाते हैं जो झाटकू होता है। चिलचिलाकर मरने वाला प्रसाद नहीं होता। तो बाप के आगे प्रसाद वही बनेगा जो झाटकू अर्थात् एक धक से बलि चढ़ने वाला है।

२५६. सर्व संबंधों की अनुभूति एक बाप से करने-कराने वाले सच्चे रूहानी सेवाधारी भव

सच्चे रूहानी सेवाधारी का वरदान उन्हीं बच्चों को मिलता है जो सर्व सम्बन्धों की रसना एक बाप से लेते हैं। तुम्हीं से खाऊं, तुम्हीं से बैठूं, तुम्हीं से सुनूं...जो सम्बन्ध चाहिए उस सम्बन्ध से बापदादा सदा सम्मुख में हाजिर- नाजिर है, इसलिए सर्व रसनाओं का अनुभव करो और कराओ। स्वयं अनुभव किया है तब ही औरों को भी करा सकते हैं।

२५७. खुशी का दान करने वाले महादानी सो श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मा भव

ब्राह्मणों का कर्त्तव्य है–खुशी का दान कर महादानी बनना। खुशी का खजाना सबसे बड़ा खजाना है। तो महादानी बन खुशी के खजाने का दान करते रहो। जिसको खुशी देंगे वह बार-बार आपको धन्यवाद देगा। दु:खी आत्माओं को खुशी का दान दे दिया तो आपके गुण गायेंगे। तो रोज़ किसी न किसी को दान जरूर करो। दान करने के बिना नींद नहीं आनी चाहिए।

२५८. सर्व के गुण ग्रहण करने वाले गुणमूर्त सच्चे वैष्णव भव

यह वरदान उन्हीं बच्चों को प्राप्त होता है जो हर आत्मा को सदा गुणमूर्त की दृष्टि से देखते हैं। स्वयं को सदा अशुद्धि से दूर रखते हैं।

सर्व के प्रति सदा शुभचिंतक रहते हैं। कभी किसी के अवगुण रूपी गंदगी को न धारण करते, न वर्णन करते, न अपने मन में रखते, न औरों को मन्मनाभव होने में विघ्न रूप बनते। अगर किसी के अवगुण दिखाई भी देते हैं तो वे मास्टर ज्ञान-सूर्य बन उस किचड़े को जला देते हैं।

२५९. श्रेष्ठ संकल्प और श्रेष्ठ कर्म द्वारा भाग्य की लकीर खींचने वाले श्रेष्ठ भाग्यवान भव

श्रेष्ठ भाग्य की लकीर खींचने का आधार श्रेष्ठ संकल्प और श्रेष्ठ कर्म हैं। ड्रामानुसार इस संगमयुग पर जो चाहे वह श्रेष्ठ भाग्यवान बन सकता है। जन्मते ही बापदादा सबको 'श्रेष्ठ भाग्यवान भव' का वरदान वा भाग्य की प्रापर्टी देते हैं। लेकिन भाग्य रूपी खजाने को सम्भालना अर्थात् स्व में धारण करना और भाग्य के खजाने को बढ़ाना अर्थात् मन-वाणी-कर्म द्वारा सेवा में लगाना–इसमें नम्बर बन जाते हैं।

२६०. सहनशक्ति के साथ समाने की शक्ति द्वारा धारणा-स्वरूप भव

धारणा-स्वरूप तभी बन सकते जब एक गुण के साथ समय प्रमाण दूसरा गुण भी कार्य में लगाना आता हो। जैसे सहनशक्ति को धारण करते हो लेकिन समाने की शक्ति वा गुण को साथ-साथ यूज नहीं करते, यहाँ-वहाँ वर्णन कर देते कि इसने यह किया, मैंने यह किया, मुझे मालूम है कि मैंने कितना सहन किया। तो यह वर्णन करने से अभिमान और परचिंतन दोनों ही स्वरूप कर्म में आ जाते हैं, जिससे धारणा-स्वरूप नहीं बन सकते। इसलिए सहन करने के साथ समाने की शक्ति भी धारण करो।

२६१. मेरे-पन का त्याग कर मेहमान समझ महान कार्य करने वाली श्रेष्ठ महान आत्मा भव

महान आत्मा उसे कहा जाता जो स्वयं को मेहमान समझ कर महान कार्य करता है। जिसे अपना असली घर सदा याद रहता है, जो पुराने शरीर रूपी घर में भी कभी फंसता नहीं लेकिन कर्म के लिए आधार

लेता और कर्म पूरा होते ही अपने फरिश्ते व निराकारी स्वरूप में स्थित हो जाता। ऐसे न्यारेपन की ऊंची स्थिति में स्थित रहकर साकार कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म कराने वाला ही मेहमान वा महान है।

२६२. पुरानी दुनिया की देह का भान छोड़ने वाले डबल लाइट फरिश्ता भव

डबल लाइट स्थिति का अनुभव करने के लिए पहला वायदा याद करो–पहला वायदा है यह तन भी तेरा। इसलिए कहते हैं देह सहित देह के सम्बन्धों का त्याग। तो देह के भान का त्याग करना अर्थात् इसकी विस्मृति होना। फिर कोई भी कर्मेन्द्रिय की आकर्षण विचलित कर नहीं सकती। जो इस पुरानी देह के भान को छोड़ हर कर्मेन्द्रिय को श्रीमत प्रमाण चलाते हैं, उन्हें डबल लाइट फरिश्ते भव का वरदान मिल जाता है।

२६३. रोब का त्याग कर रूहाब को धारण करने वाले सच्चे सेवाधारी भव

जो रूहाब में रहने वाले हैं वह सदा नम्रचित रहते हैं। और जो नम्र होते हैं वे निर्माण का कार्य करते हैं। उनमें जरा भी रोब नहीं होता, रूहानियत का रूहाब होता है। जैसे बाप नम्रचित बनकर बच्चों के सेवाधारी बनते हैं, ऐसे फालो फादर करो। सेवा में जरा भी रोब न आये तब कहेंगे सच्चे सेवाधारी। यदि रोब आया तो सेवा समाप्त हो जायेगी।

२६४. श्रेष्ठ स्वमान की स्मृति से हर कदम में पुण्य करने वाली श्रेष्ठ पुण्यात्मा भव

मैं ऊंचे ते ऊंची ब्राह्मण आत्मा, महान आत्मा हूँ, मैं हर कदम में पुण्य कर्म करने वाली पुण्यात्मा हूँ। इस श्रेष्ठ स्मृति के स्वमान की सीट अर्थात् आसन पर स्थिति होकर हर संकल्प, बोल और कर्म करो तो पुण्यात्मा बन जायेंगे। कभी भी अपने को साधारण नहीं समझो। किसके बन गये और क्या बन गये, इस स्मृति के आसन पर विराजमान रह

मायाजीत बनो।

२६५. सर्व सम्बन्ध एक के साथ जोड़ने वाले बन्धनमुक्त, योगयुक्त भव
एक बाप के साथ सर्व सम्बन्ध जोड़ने से मेरा-मेरा सहज ही समाप्त हो जाता है। जब बाप के बन गये तो बाप के सिवाय और कोई याद आ नहीं सकता क्योंकि सदा प्रिय या बढ़िया वस्तु ही याद आती है। तो जब बुद्धि में यह स्पष्ट हो गया कि बाप के सिवाय और कोई भी श्रेष्ठ नहीं तो सर्व सम्बन्ध स्वत: बाप से जुट जाते हैं और सर्व सम्बन्ध एक से जोड़ना अर्थात् बन्धनमुक्त और योगयुक्त बनना।

२६६. समीपता के अनुभव द्वारा गुण वा शक्तियों में बाप समान भव
जो जिसके समीप होता है उस पर उसके संग का रंग स्वत: चढ़ता है। तो बाप के समीप रहना अर्थात् बाप के समान बनना। जो बाप के गुण वह बच्चों के गुण, जो बाप का कर्त्तव्य वह बच्चों का। जैसे बाप विश्व-कल्याणकारी ऐसे बच्चे भी विश्व-कल्याणकारी। तो हर कर्म करते वा बोल बोलते चेक करो कि यह बाप समान है! बाप से मिलाते हर कदम उठाते चलो तो समान बन जायेंगे।

२६७. विकर्मों के त्याग द्वारा सुकर्मी वा विकर्माजीत भव
विकर्माजीत अर्थात् विकर्म, विकल्प के त्यागी। कर्मेन्द्रियों का जो कर्म के साथ सम्बन्ध है उस कर्म के हिसाब से विकर्म का त्याग। ऐसे त्यागी ही सुकर्मी वा विकर्माजीत भव का वरदान प्राप्त करते हैं। ऐसी वरदानी आत्मायें विकर्म तो क्या साधारण कर्म भी नहीं कर सकती। तो अमृतवेले से लेकर हर कर्म में चेक करो कि रॉयल रूप में वा सूक्ष्म अंश मात्र भी कोई विकार के वश विकर्म तो नहीं होते हैं! सुकर्म अर्थात् सदा श्रीमत के आधार पर कर्म हों।

२६८. महात्यागी, नि:स्वार्थी स्वरूप द्वारा महादानी, वरदानी भव
महादानी अर्थात् मिले हुए खजाने बिना स्वार्थ के सर्व आत्माओं प्रति देने वाले, नि:स्वार्थी। वरदानी अर्थात् सदा स्वयं में गुणों, शक्तियों

और ज्ञान के खजाने से सम्पन्न, सदा सर्व आत्माओं प्रति श्रेष्ठ और शुभ भावना तथा सर्व का कल्याण हो, ऐसी श्रेष्ठ कामना रखने वाली, सदा रूहानी रहमदिल, फ्राखदिल आत्मा। लेकिन इसके लिए महा-त्यागी अर्थात् नि:स्वार्थी और नष्टोमोहा स्थिति चाहिए। न किसी से घृणा हो और न किसी में लगाव वा झुकाव हो।

२६९. सदा सेवा में सफलता प्राप्त करने वाले श्रेष्ठ कमल आसनधारी भव

न्यारे और प्यारे-पन के बैलेन्स की स्थिति ही श्रेष्ठ कमल आसन है। जो कमल आसन पर विराजमान रहकर सेवा करते हैं उन्हें सदा सफलता प्राप्त होती है। सेवा में मेहनत तो सभी करते हैं लेकिन न्यारे और प्यारेपन का बैलेन्स चाहिए। अगर प्यार से सेवा नहीं करते तो भी ठीक नहीं और प्यार में फंसकर सेवा करते तो भी ठीक नहीं। इसलिए न्यारी स्थिति में स्थित होकर प्यार से सेवा करनी है तब सफलता होगी।

२७०. सच्ची दिल से दिलाराम बाप को अपना बनाने वाले दिलतख्तनशीन भव

दिलाराम बाप सच्ची दिल के सिवाय सेकण्ड भी याद के रूप में ठहर नहीं सकते। सच्ची दिल वाले की सर्वश्रेष्ठ संकल्प रूपी आशायें सहज सम्पन्न होती हैं। सच्ची दिल वाले साकार, आकार, निराकार तीनों ही रूपों से बाप के साथ का अनुभव करते हैं। कहा जाता है–सच्ची दिल पर साहेब राज़ी। तो जिन बच्चों की सच्ची दिल है वे दिल तख्तनशीन बन जाते हैं, दिलाराम को अपना बना लेते हैं।

२७१. सदा ज्ञान-रत्न चुगने वा धारण करने वाले होलीहंस भव

जो बच्चे सदा सागर के कण्ठे पर रहते, सदा सागर की लहरों से खेलते, सदा ज्ञान-रत्न चुगते वा धारण करते हैं उन्हें होलीहंस का वरदान मिल जाता है। उनके लिए व्यर्थ बातें वा व्यर्थ दृश्य सब

कंकड़ समान दिखाई देते हैं। उन पर कभी किसी भी व्यर्थ बात का प्रभाव नहीं पड़ता। वे कभी व्यर्थ बातें सुनते भी हैं तो मनन या वर्णन द्वारा वायुमण्डल में नहीं फैलाते, उस बात को समा लेते हैं।

२७२. बेगर टू प्रिन्स बनने वाले संगमयुगी स्वराज्य अधिकारी भव

संगम पर तुम बच्चे इस पुरानी दुनिया और पुराने संस्कारों से बेगर तथा ज्ञान के खजाने, गुण व शक्तियों के खजाने के मालिक, राज्य-अधिकारी अर्थात् प्रिन्स बनते हो। अभी तन की, मन वा धन की अधीनता अर्थात् बेगरपन समाप्त हुआ, अब अधिकारी बन गये। जब संगमयुग पर यह स्वराज्य अधिकारी बनने का वरदान लेते हो तब भविष्य में विश्व के राज्य का अधिकार मिलता है।

२७३. बाप की याद में लवलीन रहने वाले कर्मयोगी सो कर्मबन्धन मुक्त भव

कोई भी कार्य करते बाप की याद में लवलीन रहो। याद में रहकर हर कर्म करो तो कर्मबन्धन-मुक्त बन जायेंगे। ऐसे अनुभव होगा जैसे काम नहीं कर रहे हैं लेकिन खेल कर रहे हैं। किसी भी प्रकार का बोझ वा थकावट महसूस नहीं होगी। कर्मयोगी अर्थात् कर्म को खेल की रीति से न्यारे होकर करने वाले। ऐसे न्यारे बच्चे कर्मेन्द्रियों द्वारा कार्य करते बाप के प्यार में लवलीन रहने के कारण बन्धनमुक्त बन जाते हैं।

२७४. सेवा में सहज सफलता प्राप्त करने वाले शिव शक्ति कम्बाइन्ड स्वरूपधारी भव

सदैव अपना शिव शक्ति कम्बाइन्ड स्वरूप स्मृति में रहे तो सेवा में सदा शक्तिशाली आत्माओं की वृद्धि होती रहेगी। क्योंकि जैसी धरनी होती है वैसा फल निकलता है। तो जितनी अपनी स्वयं की शक्ति-शाली स्टेज बनाते, वायुमण्डल को शक्ति स्वरूप बनाते उतना आत्मायें भी ऐसी आती हैं। इसलिए शिव शक्ति कम्बाइन्ड स्वरूप के वरदान

को याद रखो तो सेवा की वृद्धि सहज और श्रेष्ठ होती रहेगी।

२७५. कर्मबन्धन से मुक्त स्थिति का अनुभव करने वाले कर्मयोगी भव

सदा हर कर्म करते, कर्म के बन्धनों से न्यारे और बाप के प्यारे रहो। कर्मयोगी कभी अच्छे वा बुरे कर्म करने वाले व्यक्ति के प्रभाव में नहीं आते। ऐसे नहीं कि कोई अच्छा कर्म करने वाला कनेक्शन में आये तो उसकी खुशी में आ जाओ और कोई अच्छा कर्म न करने वाला सम्बन्ध में आये तो गुस्से में आ जाओ या उसके प्रति ईर्ष्या व घृणा पैदा हो–यह भी कर्मबन्धन है। कर्मयोगी के आगे कोई कैसा भी आ जाए -- स्वयं सदा न्यारा, प्यारा कर्मबन्धन से मुक्त रहेगा।

२७६. सर्व कमजोरियों से प्लेन बनने वाले साक्षात्कारमूर्त भव

अभी साक्षात्कार की लहर फैलाने के लिए सर्व कमजोरियों से प्लेन बनने का प्लैन बनाओ। इसकी धूम मचाओ। साक्षात् बाप बनो तो साक्षात्कार आपेही होंगे। साक्षात् बाप समान बनना ही साक्षात्कार की चाबी मिलना है। इस प्लैन को प्रैक्टिकल में ले आओ तो सेवा आपके चरणों में झुकेगी। अभी थोड़ा-थोड़ा अनुभव करते हो लेकिन यह लहर चारों ओर फैलाओ।

२७७. सेवा के हर कदम में सफलता का अनुभव करने वाले त्यागी और तपस्वी मूर्त भव

त्यागी अर्थात् जैसा समय, जैसी समस्या, जैसा व्यक्ति सामने हो वैसा स्वयं को मोल्ड कर स्व-कल्याण और औरों का कल्याण करने के लिए सदा इज़ी रहे। अपने नाम का, संस्कारों का, अल्पकाल के साधनों का त्याग कर परिस्थिति और समय अनुसार अपनी श्रेष्ठ स्थिति बना ले, त्याग का भी अभिमान न आये और तपस्या अर्थात् एक बाप दूसरा न कोई..ऐसा त्यागी और तपस्वी मूर्त का वरदान प्राप्त करने वाली आत्मा हर कदम में सफलता का अनुभव करती है।

२७८. बड़ों के डायरेक्शन को अमल में लाने वाले श्रेष्ठ स्वमान अधिकारी

वा माननीय भव

लोक संग्रह अर्थ कोई भी डायरेक्शन मिलता है तो सिद्ध करने के बजाय–जी हाँ, जी हाजिर करना–यही श्रेष्ठ सेवाधारी की विशेषता है। यह झुकना नहीं है, नीचे जाना नहीं है लेकिन ऊंचा जाना है। क्योंकि मानना अर्थात् माननीय बनना। बड़ों को मान देना अर्थात् स्वमान लेना। आज्ञाकारी बनना अर्थात् सदाकाल का मान-शान लेना। बड़ों ने कहा और किया–ऐसे सेवाधारी बाप के प्रिय वा सर्व के माननीय बन जाते हैं।

२७९. श्रेष्ठ वायब्रेशन, श्रेष्ठ वायुमण्डल द्वारा साक्षात् बाप की झलक दिखाने वाले श्रेष्ठ योगी भव

अब सहज योगी की लहर चेंज करो। सहज शब्द पवित्र प्रवृत्ति में यूज़ नहीं करो लेकिन सर्व सिद्धि स्वरूप बनने में यूज करो। श्रेष्ठ योगी की लहर, महातपस्वी वा साक्षात्कार मूर्त बनने की लहर, रूहानियत की लहर फैलाओ। श्रेष्ठ योगी बन श्रेष्ठ वायब्रेशन, श्रेष्ठ वायुमण्डल द्वारा साक्षात् बाप की झलक अनुभव कराओ। वाणी द्वारा सन्देश देने के बजाय अनुभव कराने व अनुभवी बनाने की रेस करो।

२८०. हर सेकण्ड बाप की पालना में रहने वा सर्व को पालना देने वाले स्नेही स्वरूप भव

शक्तियों को हमेशा पालना लेने के संकल्प से माँ के रूप में याद करते हैं। तो अभी स्नेही स्वरूप के वरदान द्वारा विशेष पालना दो। पालना का अर्थ है उन्हें शक्तिशाली बनाना, उन्हों के संकल्पों को, शक्तियों को इमर्ज करना, उमंग उत्साह में लाना। तो जो भी सम्पर्क में आये वह अनुभव करे कि हम ईश्वरीय पालना के अन्दर आ गये। यह हमें प्रभु के पालना की दृष्टि दे रहे हैं। यही है सम्बन्ध में लाना।

२८१. प्रवृत्ति में रहते निवृत्त रहने वाले बाप समान विश्व-सेवाधारी भव

प्रवृत्ति में रहते निवृत्त भी रहना है -- यह पाठ रोज़ स्वयं को पढ़ाओ। हर एक अपनी-अपनी सेवा में बिजी हो गये हो लेकिन अब बेहद विश्व

की सेवा का नशा चाहिए। बढ़ती हुई प्रवृत्ति को सम्भालते हुए बुद्धि बेहद सेवा के लिए फ्री होनी चाहिए। जैसे साकार बाप को देखा, कारोबार चलाते भी सदा अपने को फ्री रखा। कभी भी बिजी होने की रूपरेखा चेहरे पर नहीं आई, सदा बेहद में बुद्धि रही–ऐसे फालो फादर।

२८२. हर प्रकार के वार से सेफ रहने वाले लाइट रूपधारी, शक्ति-स्वरूप भव

अभी समय बहुत खराब आ रहा है, इसमें कई प्रकार के वार होंगे, ईविल आत्माओं के वार होंगे, बुरी दृष्टि वालों के वार होंगे, कैलेमिटीज वा बीमारियों के वार होंगे लेकिन इन सबसे बचने वा सेफ रहने का साधन है लाइट रूप में रहने का अभ्यास। ऐसा अभ्यास करो जो दूसरे समझें कि यह कोई लाइट जा रही है, शरीर वा साधारण रूप दिखाई न दे। शक्ति रूप की झलक दिखाई दे।

२८३. अपनी श्रेष्ठ स्थिति द्वारा परिस्थिति वा विघ्नों को पार करने वाले तीव्र पुरुषार्थी भव

जो भी परस्थितियां वा विघ्न आते हैं, उसमें घबराने के बजाय उन्हें साइडसीन समझकर अपनी ऊंची स्थिति में रहकर बड़ी बात को छोटा बना दो। जब समय बीत गया, परिस्थितियां बीत गई, फिर उसका चिन्तन न करो–सदा खुशी में झूलते रहो। बीच-बीच में कुछ हो भी जाता तो उसे सोचो नहीं, अपनी बुद्धि से बीती सो बीती कर निश्चिंत हो जाओ। सदा ही उमंग-उत्साह में रहो। तो तीव्र पुरुषार्थी बन जायेंगे।

२८४. नालेज की रोशनी द्वारा दु:ख को सुख में परिवर्तन करने वाले मास्टर सुखदाता भव

दु:ख की लहर उत्पन्न करने वाली परिस्थितियों में भी वाह मीठा ड्रामा, वाह हर एक पार्टधारी का पार्ट..इस नालेज की रोशनी द्वारा दु:ख को सुख में परिवर्तन करना, मास्टर सुखदाता बन स्वयं सुख के झूले में झूलना और औरों को भी सुख के वायब्रेशन देने के निमित्त बनना..ऐसे

सुख के अधिकार की लकीर स्पष्ट और गहरी हो, जिसे कोई मिटा न सके, तब कहेंगे मास्टर सुखदाता।

२८५. सदा अपने स्वधर्म में स्थित रहने वाले मास्टर शान्ति देवा भव

आत्मा का स्वधर्म शान्ति है, और धर्म के लिए गाया जाता है कि धरत परिये धर्म न छोड़िये। सिर जाए लेकिन धर्म न जाये। तो सुख-शान्ति के वर्से के अधिकारी कभी शान्ति का धर्म, शान्ति का अधिकार छोड़ नहीं सकते। वे अशान्त को भी शान्त बनाने वाले, सदा शान्ति की किरणें स्वयं द्वारा औरों को देने वाले मास्टर शान्ति देवा बन सबको सुख और शान्ति का दान देते हैं।

२८६. रत्नागर बाप से रत्नों का सौदा करने वाले मास्टर रत्नागर भव

रत्नागर बाप अभी रत्नों की थालियां भर भरकर दे रहे हैं। उन्हीं रत्नों से ही खेलते और पलते रहो, रत्नों में झूलते रहो। सारा दिन रत्नों का धंधा करते रहो, बुद्धि में ज्ञान रत्नों की पाइंट्स गिनते रहो, तो रत्नों के सौदागर रत्नों की खान के मालिक , रत्नागर बन जायेंगे। इन रत्नों को जितना कार्य में लगाओ उतना बढ़ते जायेंगे और मास्टर रत्नागर बन दूसरों को भी मालामाल करते रहेंगे।

२८७. सर्व आत्माओं को ज्ञान की अंचली दे सच्ची राह दिखाने वाले सच्चे सेवाधारी भव

अभी सर्व आत्माओं में यह संकल्प उठ रहा है कि कोई सहारा, कोई नया रास्ता मिलना चाहिए। तो उन्हें सच्ची राह दिखाना वा ज्ञान की अंचली देना, यह आप सच्चे सेवाधारी बच्चों का काम है। एकता और दृढ़ता यह दो साधन हैं राह दिखाने के। आप बच्चों के संगठन की शुभ भावना ऐसी आत्माओं को भावना का फल दिलाने के निमित्त बनेगी। सर्व का शुभ संकल्प उन आत्माओं में भी शुभ कार्य करने का संकल्प उत्पन्न करेगा।

२८८. ज्ञान-योग की प्रत्यक्षता करने वाले खुशी के खजाने से सम्पन्न

भव

सबसे बड़ा खजाना खुशी है। यदि ज्ञान है, योग है लेकिन खुशी की प्राप्ति नहीं तो ज्ञान योग यथार्थ नहीं। ज्ञानी योगी के आगे कोई कैसी भी परिस्थिति क्यों न आ जाए लेकिन खुशी गायब हो नहीं सकती। आपकी खुशी देख जब दूसरे पूछें कि आपको क्या मिला है–तब कहेंगे खुशी के खजाने से सम्पन्न आत्मा। यही ज्ञान-योग की प्रत्यक्षता का सहज साधन है।

२८९. विघ्नों के प्रभाव से सदा सेफ रहने वाली प्रभावशाली आत्मा भव

विघ्न भले आयें लेकिन उसका प्रभाव न पड़े। जब स्वयं प्रभावशाली आत्मा बनेंगे तो किसी का प्रभाव पड़ नहीं सकता। जैसे सूर्य को कोई कितना भी छिपाये छिप नहीं सकता, ऐसे प्रभावशाली आत्माओं को कोई भी प्रभाव अपनी तरफ खींच नहीं सकता। जो एक बाप दूसरा न कोई–इस लगन में मगन रहते हैं उनके ऊपर कोई भी विघ्न अपना प्रभाव डाल नहीं सकता।

२९०. ज्ञान-सागर की लहरों में लहराने वा समाने वाले अनुभवी मूर्त भव

जो सदा बापदादा के प्यार में लवलीन रहते हैं वह मास्टर प्यार के सागर बन जाते हैं। जितना ज्ञान-सूर्य की किरणों का प्रकाश अनुभव करते उतना प्यार की लहरें स्वत: उछलती हैं। रोज़ अमृतवेले ज्ञान-सागर की ज्ञान-मुरली में ज्ञान की लहरें, प्रेम, सुख, शान्ति और शक्ति की लहरें उछलती ही रहती हैं, इन्हीं लहरों में लहराना वा समा जाना, इस अनुभूति का वर्सा अथवा वरदान प्राप्त करना -- यही अलौकिक ब्राह्मण जीवन है।

२९१. व्यर्थ के खाते को समाप्त करने वाले सदा स्मृति-स्वरूप सो समर्थ-स्वरूप भव

जैसे सूर्य अंधकार और गन्दगी को समाप्त कर देता है। ऐसे समर्थ आत्मायें व्यर्थ को समाप्त कर देती हैं। जब यह वरदान स्मृति में रहता कि हम हैं ही समर्थ आत्मायें तो सदा श्रेष्ठ संकल्प, श्रेष्ठ कर्म, श्रेष्ठ

बोल और श्रेष्ठ सम्पर्क-सम्बन्ध का खाता सदा बढ़ता रहता है। क्योंकि स्मृति स्थिति को स्वत: बनाती है। तो स्मृति-स्वरूप सो समर्थ-स्वरूप बनने का अभ्यास करते रहो। इसी लग्न में मगन रहना–यही श्रेष्ठ जीवन है।

२९२. एक में सारे संसार का अनुभव करने वाले सदा एकरस अचल-अडोल भव

जो सदा एक के रस में रहते हैं, एक में सारे संसार का अनुभव करते हैं, उनकी स्थिति एकरस अचल-अडोल रहती है। क्योंकि जहाँ एक होगा वहाँ कोई खिट खिट नहीं होगी। जब दो होते हैं तो दुविधा होती है। लेकिन जब एक में सब कुछ प्राप्त हो सकता है तो दूसरे तरफ जायें ही क्यों। एक ही ठिकाना, एक से ही सर्व प्राप्ति हो गई तो और चाहिए ही क्या। बाबा मिला सब कुछ मिला – बस, इसी खुशी में सदा नाचते रहो

२९३. मुरलीधर की मुरली के साज़ से बेगमपुर के बादशाह बनने वाले स्वराज्य अधिकारी भव

मुरलीधर की मुरली देह की सुध-बुध भुला देती है। जिसे मुरलीधर की मुरली का नशा चढ़ता है वो अपने को इस धरनी और देह से ऊपर उड़ता हुआ अनुभव करते हैं। मुरली की तान वा साज़ से अविनाशी दुआ की दवा मिलते ही तन तन्दुरुस्त मन दुरुस्त हो जाता है। मुरली के साज़ की मस्ती बेपरवाह बादशाह अर्थात् स्वराज्य-अधिकारी बना देती है। विधिपूर्वक मुरली सुनने वाले सदा अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलते हैं।

२९४. मुरली के हर बोल को विधिपूर्वक सुनकर श्रेष्ठ गति को प्राप्त करने वाले सिद्धि-स्वरूप भव

मुरली का एक-एक महावाक्य २५०० वर्षों की कमाई का आधार है। एक महावाक्य खजानों की खान बना देता है। मुरली के हर बोल को विधिपूर्वक सुनने और उससे प्राप्त हुई सिद्धि के हिसाब-किताब

की गति को जानने वाले श्रेष्ठ गति को प्राप्त होते हैं। जैसे कर्मों की गति गहन है वैसे विधिपूर्वक मुरली सुनने-समाने की गति भी अति श्रेष्ठ है। मुरली ही ब्राह्मण जीवन का श्वास है। अमृतवेले महत्वपूर्वक और विधिपूर्वक मुरली सुनो तो सारा दिन हर कर्म में सिद्धिस्वरूप स्वत: और सहज बन जायेंगे।

२९५. सदा एक के अन्त में खो जाने वाले एकान्तवासी, एकाग्रचित भव

जब चारों ओर हंगामा हो उस समय आप एक के अन्त में खो जाओ तो हंगामें के बीच भी एकान्त का अनुभव करेंगे। एकाग्रचित होना अर्थात् सिवाय एक बाप के और कोई भी संकल्प में न हो। एक बाप में सारे संसार की सर्व प्राप्तियों की अनुभूति हो। ऐसी श्रेष्ठ स्थिति का एक संकल्प भी बाप समान का अनुभव कराता है। इसके लिए स्व अभ्यास की बहुत आवश्यकता है। फर्स्ट डिवीजन लेने के लिए एकाग्रता के शक्ति की विशेष प्रैक्टिस करो।

२९६ न्यारे और प्यारे पन के बैलेन्स द्वारा सर्व पुरुषों से उत्तम फरिश्ता भव

फरिश्ता वह है जिसका देह और देह की दुनिया के साथ कोई रिश्ता नहीं। शरीर में सेवा के अर्थ रहते, न कि रिश्ते के आधार पर। कैसी भी आत्मायें हैं, सेवा का सम्बन्ध प्यारा है। और जहाँ सेवा का भाव है वहाँ सदा शुभ भावना है। ऐसी शुभ भावना वाले ही सदा अति न्यारे और प्यारे कमल समान रहते हैं। वही सर्व पुरुषों से उत्तम फरिश्ता सो देवता बनते हैं।

२९७. ताज और तख्त के साथ त्रिमूर्ति तिलकधारी श्रेष्ठ सेवाधारी भव

विश्व-कल्याण का ताज, बापदादा के दिल रूपी तख्त पर विराजमान रहने वाले बच्चों को स्वराज्य का तिलक तो मिलता ही है लेकिन साथ-साथ जन्मते ही सर्व परिवार के, बापदादा के स्नेही और सहयोगी-पन का तिलक वा सर्विसएबल का भी तिलक मिल जाता है। ऐसे त्रिमूर्ति तिलकधारी बच्चे विशेष सेवाधारी बन अनेक आत्माओं को

उमंग उत्साह दिलाने के निमित्त बन जाते हैं।

२९८ त्रिमूर्ति मंजिल को पार करने वाले प्रभु-प्रेमी भव

जो बच्चे प्रभु-प्रेमी हैं वे सहज ही (१) देह भान से, (२) देह के सर्व सम्बन्धों से और (३) देह, देह के दुनिया की अल्पकाल की प्राप्ति की आकर्षण से मुक्त हो जाते हैं अर्थात् इस त्रिमूर्ति मंजिल को सहज पार कर लेते हैं। उन्हें त्याग करना नहीं पड़ता लेकिन श्रेष्ठ सर्व प्राप्ति का भाग्य स्वत: ही त्याग करा देता है। यह प्रभु प्यार ही ब्राह्मण जन्म का आधार है, नये जीवन का जीयदान है।

२९९. एक बाप दूसरा न कोई -- इस स्थिति में स्थित रहने वाले महातपस्वी भव

एक बाप दूसरा न कोई–यही है महातपस्या। ऐसी तपस्या का बल ही श्रेष्ठ बल गाया हुआ है। जो इस तपस्या में रहते हैं उनमें बहुत बल रहता है। इस तपस्या का बल विश्व-परिवर्तन कर लेता है। हठयोगी एक टांग पर खड़े होकर तपस्या करते हैं लेकिन बच्चे एक टांग पर नहीं, एक की स्मृति में रहते, बस, एक ही एक। ऐसी तपस्या विश्व-परिवर्तन करा देती है।

३००. फालो फादर-मदर कर सदा शक्तिशाली बनने वाले महापुण्य आत्मा भव

जैसे ब्रह्मा बाप और जगत् अम्बा माँ की विशेषता थी –''सोचा और किया'' यह नहीं सोचा कि यह करके पीछे यह करेंगे। ऐसे फालो फादर-मदर। हर समय हर कर्म का श्रेष्ठ और ताजा फल खाते रहो अर्थात् जो भी श्रीमत समय प्रमाण जिस रूप से मिलती है उसी समय उस रूप से प्रैक्टिकल में लाओ तो ब्रह्मा बाप समान तुरन्त दानी महापुण्य आत्मा बन नम्बरवन में आ जायेंगे। फिर कभी भी किसी भी प्रकार की कमजोरी वा व्याधि आ नहीं सकती।

३०१. स्वदर्शन द्वारा सदा प्रसन्नचित रहने वाले सर्व प्राप्ति के अधिकारी

भव

स्वदर्शन चक्र सदा एक ही अंगुली पर दिखाते हैं। एक अंगुली अर्थात् एक ही संकल्प–''मैं बाप का और बाप मेरा''। इस एक संकल्प रूपी अंगुली पर स्वदर्शन चक्र चलता है तो सदा प्रसन्नचित रहते हैं। प्रसन्नचित अर्थात् जहाँ कोई प्रश्न नहीं। ऐसी प्रसन्नचित आत्मा ही सर्व प्राप्तियों की अधिकारी है। स्वप्न में भी बाप के आगे भिखारी रूप नहीं। सर्व खजानों के भण्डार भरपूर। सब कुछ पा लिया–वे यही गीत गाते हैं।

३०२. एक की लगन में मगन रहने वाले सदा हर्षित वा सुख-स्वरूप भव

जो एक की लगन में मगन रहने वाले निरन्तर योगी हैं। चलते-फिरते बाप और मैं श्रेष्ठ आत्मा –इसी स्मृति में रहते हैं। तो जैसा बाप वैसा बच्चा, जो बाप के गुण वह बच्चों के। ऐसे योगी सदा हर्षित रह सकते हैं। मन का हर्ष तन पर भी आता है। जब हैं ही सर्व प्राप्ति स्वरूप तो जहाँ सर्व प्राप्तियां हैं वहाँ हर्ष है। दु:ख का नाम-निशान नहीं। जरा भी दु:ख के संसार की आकर्षण नहीं, सुख-स्वरूप हैं।

३०३. सदा एकरस स्थिति में रहने वाली, अविनाशी युग की आत्मायें अविनाशी भव

अविनाशी माना सदा एकरस। कभी ऊपर कभी नीचे नहीं। क्योंकि अविनाशी युग की आत्मायें हो। तो यह अविनाशी भव का वरदान ही सबसे श्रेष्ठ वरदान है। इसलिए सदा ऊंची स्थिति में रहो। बाप के बच्चे बने, विशेष आत्मा बन गये तो विशेष आत्मा का हर संकल्प, बोल और कर्म विशेष होगा। ऐसा विशेष बोल, कर्म वा संकल्प हो जिससे और भी आत्माओं को विशेष बनने की प्रेरणा मिले।

३०४. अलबेलेपन और आलस्य के त्याग द्वारा सिद्धि-स्वरूप सहज योगी भव

संगमयुग सहज सिद्धि प्राप्त करने का युग है। यह सहज प्राप्ति की सीजन है। बड़ी दिल वाला दाता, भाग्यविधाता बाप फ़ाख़दिल है। दिलतख्तनशीन बच्चों को मेहनत हो नहीं सकती। फिर भी यदि किसी

भी बात में मेहनत करनी पड़ती है तो उसका कारण है–अलेबेलापन और आलस्य। जो सदा स्मृति-स्वरूप के किले के अन्दर रहते हैं वह सिद्धि-स्वरूप सहज योगी बन जाते हैं।

३०५. दृढ़ संकल्प और डबल लाइट स्थिति द्वारा सर्व के विघ्न हर्ता भव

सदा यह वरदान याद रहे कि हम विघ्न-हर्ता अथवा विघ्न-विनाशक हैं। विघ्न हैं, विघ्न हैं..यह कहने से विघ्न समाप्त नहीं होते। कमजोर संकल्प से तो कमजोर सृष्टि की रचना होती है। इसलिए सदा समर्थ और दृढ़ सकंल्प करो कि मैं श्रेष्ठ आत्मा विघ्न-हर्ता हूँ तो विघ्न छू मन्त्र हो जायेंगे। सिर्फ मेरेपन का बोझ बाप को देकर डबल लाइट हो जाओ। क्योंकि जहाँ मेरा है वहाँ विघ्नों की जाल है।

३०६. खुशी के खजाने से सम्पन्न बनने वाली पुण्य आत्मा भव

जो बच्चे संगमयुग पर पुण्य आत्मा बनते हैं वही सदाकाल के लिए पूज्य बन जाते हैं। इसलिए स्वयं को पुण्य आत्मा समझकर हर संकल्प, बोल और कर्म करते रहो। जब पुण्य का बैलेन्स बढ़ जायेगा तो पाप नीचे हो जायेगा। जितना पुण्य का काम करेंगे उतना खुशी भी रहेगी। क्योंकि पुण्य कर्म खुशी का खजाना बढ़ाता है और पाप कर्म खुशी गंवाता है। अगर कभी खुशी गुम होती है तो चेक करो–जरूर अंश मात्र भी पाप जरूर हुआ होगा।

३०७. कर्म रूपी बिल्डिंग को अचल बनाने वाले निश्चयबुद्धि विजयी भव

निश्चय की निशानी है विजय। निश्चयबुद्धि को माया कभी भी हिला नहीं सकती। वह माया को हिलाने वाले होंगे, स्वयं हिलने वाले नहीं। निश्चय का फाउन्डेशन अचल है तो स्वयं भी अचल होंगे। जैसा फाउन्डेशन वैसी मजबूत बिल्डिंग बनती है। निश्चय का फाउन्डेशन अचल है तो कर्म रूपी बिल्डिंग भी अचल होती है। इसलिए स्वयं में, बाप में वा नालेज में सम्पूर्ण निश्चय-बुद्धि बनो।

३०८. गुणदान द्वारा सर्व में उमंग-उत्साह भरने वाले महादानी, अनुभवीमूर्त भव

ज्ञान-दान के साथ-साथ गुण-दान का भी बहुत महत्व है। गुणों की महादानी, अनुभवी आत्मा कभी भी किसी के अवगुण को देखते हुए, धारण नहीं करेगी। किसी के अवगुण के संगदोष में नहीं आयेगी। और ही, गुणदान द्वारा दूसरे का अवगुण, गुण में परिवर्तन कर देगी। जैसे योगदान, शक्तियों का दान, सेवा का दान प्रसिद्ध है ऐसे गुणदान भी विशेष दान है। गुणदान द्वारा आत्मा में उमंग-उत्साह की झलक अनुभव करा सकते हो।

३०९. डबल सेवा की जिम्मेवारी निभाने वाले, डबल वर्से के अधिकारी, डबल ताजधारी भव

डबल लाइट, डबल ताजधारी, डबल पूज्य बनने का वरदान उन्हीं बच्चों को प्राप्त होता है जो डबल सेवा में बिजी रहते हैं। चाहे कर्म करते हो, चाहे मुख से बोलते हो। लेकिन मन्सा के साथ-साथ कर्म–इसको कहा जाता है डबल सेवाधारी। ऐसे डबल सेवाधारी मायाजीत रहते हैं। मन्सा अर्थात् याद है बाप का सहारा। तो जहाँ बाप सदा साथ है, सहारा है, वहाँ माया साथी बन नहीं सकती।

३१०. स्वराज्य द्वारा विश्व का राज्य प्राप्त करने वाले डबल राज्य अधिकारी भव

स्वराज्य आप सभी का बर्थ-राइट है। अनेक बार स्वराज्य द्वारा विश्व का राज्य प्राप्त किया है। डबल राज्य-अधिकारी बने हो। स्वराज्य सदा के लिए राजयोगी सो राज्य-अधिकारी बना देता है। स्वराज्य त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी, तीनों लोकों का नालेजफुल अर्थात् त्रिलोकीनाथ बना देता है। स्वराज्य बाप के तख्तनशीन बना देता है, सर्व प्राप्तियों के खजाने का मालिक बना देता है। अभी स्वराज्य अधिकारी बनो तो विश्व का राज्य प्राप्त हो जायेगा।

३११. सन्तुष्टमणि बन सर्व को सन्तोष देने वाले मास्टर दाता भव

आप दाता के बच्चे मास्टर दाता बन अपने भाइयों के ऊपर दया और रहम की दृष्टि डालो। महादानी, वरदानी बनो। सन्तुष्टमणि बन सर्व को सन्तोष दो। क्योंकि सन्तुष्टता वा सन्तोष सर्व प्राप्तियों का आधार स्वरूप है। जहाँ सन्तुष्टता है वहाँ अप्राप्ति का अभाव है। सन्तुष्टता के आधार पर स्थूल धन में भी बरकत अनुभव करते हैं। इसलिए सन्तुष्टमणि बन सर्व को सुख-शान्ति की अंचली दो। हर आत्मा को अपने श्रेष्ठ शान की स्मृति दिलाओ।

३१२. श्वांस, संकल्प, सम्पत्ति वा शरीर को विल करने वाले सर्व चिंताओं से मुक्त भव

जो बच्चे अपना सब कुछ पहले से ही विल कर लेते हैं, उन्हें सदा निश्चिंत वा चिंताओं से मुक्त भव का वरदान मिल जाता है। क्योंकि उनका सब कुछ सफल हुआ ही पड़ा है। जब अपना सब कुछ इन-श्योर कर लिया तो कुछ भी व्यर्थ जा नहीं सकता। जानते हैं कागज, कागज हो जायेगा, मिट्टी-मिट्टी हो जायेगी लेकिन हमारा हक हमें पद्मगुणा होकर मिलेगा। व्यर्थ जा नहीं सकता।

३१३. सर्व को शान्ति का अनुभव कराने वा शान्ति के सागर में लहराने वाली योग्य आत्मा भव

मैं शान्त-स्वरूप आत्मा, शान्ति के सागर का बच्चा हूँ, शान्ति-प्रिय आत्मा हूँ–यह स्मृति में रखना वा सम्पर्क में आने वाली आत्माओं को यही शुभ सन्देश देना–यह सबसे श्रेष्ठ कर्म है जो सदा श्रेष्ठ प्राप्ति कराता है। इससे ही वर्तमान और भविष्य दोनों ही श्रेष्ठ हो जाते हैं। यह अलौकिक आक्यूपेशन सदा याद रहे तो शान्ति का अनुभव करने वाली योग्य आत्मा बन शान्ति के सागर में सदा लहराते रहेंगे।

३१४. सर्व की आवश्यकता पूर्ण करने वाले अन्नपूर्णा के भण्डार भव

वर्तमान समय सर्व आत्माओं को आवश्यकता है सच्ची खुशी और सच्ची शान्ति की। खुशी के लिए कितना समय, धन और शारीरिक शक्ति खत्म कर देते हैं। ऐसी आत्माओं की सर्व आवश्यकताओं को पूर्ण करने वाले अन्नपूर्णा के भण्डार बनो। बाप द्वारा मिले हुए शान्ति और खुशी के खजाने सर्व आत्माओं को खूब बांटो। स्वयं भी शान्त रहो और सर्व को आत्मिक वा अविनाशी शान्ति और खुशी दो–यही सबसे बड़ा पुण्य है।

३१५. आप और बाप–इस कम्बाइन्ड रूप के अनुभव द्वारा समाधान-स्वरूप भव

इस अलौकिक विचित्र कम्बाइन्ड रूप के अनुभव से सदा विजयी, विघ्न- विनाशक वा सेकण्ड में सर्व समस्याओं का समाधान-स्वरूप बन जायेंगे। जो इस कम्बाइन्ड रूप में स्थित रहते हैं वह सहज ही याद और सेवा के सिद्धि स्वरूप बन जाते हैं। यह कम्बाइन्ड स्वरूप सदा शुभ भावना, श्रेष्ठ कामना, श्रेष्ठ वाणी, श्रेष्ठ दृष्टि, श्रेष्ठ कर्म द्वारा विश्व-कल्याणकारी स्वरूप का अनुभव कराता है।

३१६. व्यक्त भाव के स्वभाव वा संस्कार को परिवर्तन करने वाले ब्राह्मण सो फरिश्ता भव

हम ब्राह्मण सो फरिश्ता हैं–इस स्मृति से विश्व के आगे साक्षात्कारमूर्त बन जायेंगे। चलते-फिरते व्यक्त शरीर द्वारा व्यक्त देश में पार्ट बजाते

हुए व्यक्त भाव से परे अव्यक्त रूपधारी अनुभव करेंगे। यह अव्यक्त अर्थात् फरिश्तेपन का भाव व्यक्तपन के बोल-चाल, व्यक्त भाव के स्वभाव-संस्कार को सहज ही परिवर्तन कर देगा। इसलिए ब्राह्मण सो फरिश्ता -- इस स्मृति को स्वरूप में लाओ।

३१७. सबको दिल से रिगार्ड देने वाले सदा निर्विघ्न, निस्संकल्प और निश्चिंत भव

दूसरों को रिगार्ड देना ही रिगार्ड लेना है। जो सबको दिल से रिगार्ड देता है उसे दिल से सबका रिगार्ड मिलता है। यही सलोगन सदा निर्विघ्न, निरसंकल्प और निश्चिंत बनाने वाला है। मेरा क्या होगा–यह चिंता नहीं रहती। ऐसी आत्मा की श्रेष्ठ प्रालब्ध वर्तमान और भविष्य निश्चित ही है, कोई इसको बदल नहीं सकता। कोई किसकी सीट ले नहीं सकता। निश्चित है इसलिए वह निश्चिंत है।

३१८. मैं अवतरित श्रेष्ठ आत्मा हूँ -- इस स्मृति से सदा उपराम भव

हम श्रेष्ठ आत्मायें परमात्म-पैगाम देने के लिए, परमात्म-मिलन कराने के लिए अवतरित हुए हैं, ब्राह्मण जन्म अवतरित जन्म है। मैं विश्व-कल्याणकारी, सदा सेवाधारी अवतरित श्रेष्ठ आत्मा हूँ–इसी स्मृति में रहो तो हर कर्म करते, कर्म के बन्धनों से मुक्त कर्मातीत स्थिति का अनुभव करेंगे। यही स्मृति उपराम और अपरंपार प्राप्ति की अनुभूति कराने वाली है।

३१९. देहभान की आकर्षणमय डाली से भी उड़ने वाले उड़ता पंछी भव

सबसे ज्यादा अपने तरफ आकर्षित करने वाली डाली यह देह का भान है। जरा भी पुराने संस्कार, स्वभाव अपने तरफ आकर्षित करते हैं माना देहभान है। मेरी आदत ऐसी है, मेरा रहन-सहन ऐसा है..यह भी देहभान की निशानी है। इस डाली से भी उड़ते पंछी बनो तब कहेंगे कर्मातीत। कर्म से अतीत होने वाले कर्मातीत नहीं लेकिन कर्म के बन्धन से अर्थात् आदत से भी न्यारे बनो।

३२०. मन्सा से भी अपवित्र संकल्पों का त्याग करने वाले सच्चे वैष्णव वा बाल ब्रह्मचारी भव

यह वरदान उन्हीं बच्चों को प्राप्त होता है जिन बच्चों ने जन्म से अशुद्धि वा अवगुण, व्यर्थ संकल्प को बुद्धि द्वारा, मन्सा द्वारा कभी ग्रहण नहीं किया है। मन्सा में भी स्वयं के प्रति या किसी के प्रति व्यर्थ रूपी अपवित्र संकल्प न चला हो, तब कहेंगे सच्चे वैष्णव वा बाल ब्रह्मचारी।